CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

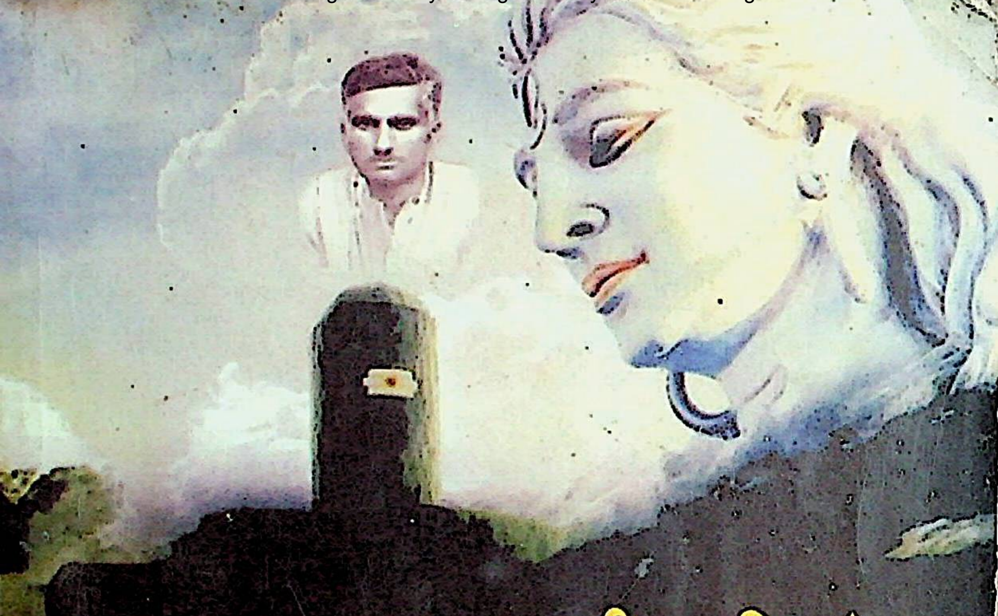

मुकुन्दपुरी स्मृति ग्रंथ

शिव के तीन चरण

सम्पादन
डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय

Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव के तीन चरण

(मुकुन्दपुरी स्मृति-ग्रंथ)

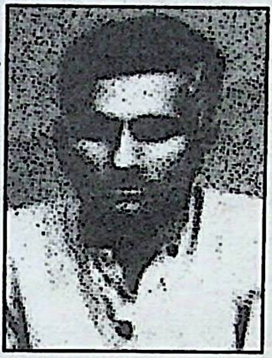

(1 फरवरी 1925-12 अप्रैल 1963)

शिव नारायण पाण्डेय

वातायन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव के तीन चरण

संपादन : डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय

प्रथम संस्करण : मार्च, 2015
© डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय
मो. 09234778275
मूल्य : 225/- (दो सौ पच्चीस रुपये मात्र)
ले-आउट डिजाइन : संजय प्रजापति/रवि भूषण गुप्ता
ISBN : 978-93-81591-55-0
प्रकाशक एवं मुद्रक
वातायन
अयोध्या अपार्टमेंट
फ्रेजर रोड, पटना- 800 001
दूरभाष : 9431040914 / 0612-2222920

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्ररोचना

'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति' यजु. 22/22 अर्थात् अमर कवि के काव्य को देखो, न विनष्ट होता है न जीर्ण होता है। अर्थात् कविता नित्य नवीन एवं केवल रमणीय होता है।

कवि और काव्य सबसे सुंदर, मनोरम, रमणीय और उदात्तोदार लक्षणलक्षित तत्त्व हैं, जो विधाता की सृष्टि से विलक्षण तथा केवलानंददायक हैं, देश, काल, स्थान, भाषा, आदि की सीमाओं से पार जाकर अमरता की श्रेणी में सन्यस्त हो जाते हैं।

अनादिकाल से ही कवि और काव्य की महनीयता सिद्ध है। श्रेष्ठ कवि की दुर्लभता सर्वस्वीकृत है। अग्निपुराण (337.4) का वचन है-

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।।

(अ.पु. 337.4)

अर्थात् संसार में मनुष्य योनि में जन्म लेना दुर्लभ है, मनुष्य योनि में जन्म के बाद विद्वान होना, विद्वान् होने के बाद 'कवित्व शक्ति की प्राप्ति कठिन है, कवित्वपूर्ण होने पर भी प्रतिभा सम्पन्न कवि होना दुर्लभ है।

उपर्युक्त प्रतिभा के जन्म में भगवान् विश्वेश्वर शिव और भगवती पार्वती का आशीष आवश्यक है। बिना शिव-गौरी के अनुध्यान काव्य की रमणीय-सरिता का स्फूरण हो ही नहीं सकता क्योंकि काव्य-शब्दार्थ साहित्य के आदिस्त्रोत भगवान शिव और पार्वती ही हैं।

रुद्रहृदयोपनिषद् की पंक्ति है-

रुद्रोऽर्थ अक्षरः सोमा तस्मै तस्यै नमोनमः।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिव–शिवा (पार्वती) की साधना के बिनां रसनीय काव्य की उत्पत्ति को कौन कहे काव्य का एकाक्षर बोध भी कठिन है। शिवसनातनी पुरी का निष्ठावान् साधक उनका ध्यान कर, चरण नख के प्रकाश से उंद्भाषित शब्दाक्षरों को लोक में आकार देता है, तब वह श्रेष्ठ कविता बनती है।

संदर्भित काव्यग्रंथ 'शिव के तीन चरण' के रचयिता–पं. शिवनारायण पाण्डेय मुकुन्दपुरी जी है, भोजपुर जिले के मुकुन्दपुर' के निवासी हैं।

ग्रंथ 'शिव के तीन चरण' के नामकरण की सार्थकता विचारणीय है। अनेक दृष्टियों से ग्रंथ का नामकरण काव्य एवं काव्यकार के तीन उन्नत गुणों महनीयता, उदात्तता एवं उदारता को उट्टंकित करता है। भगवान् शिव कविता के, साहित्य के विद्या के (तीनों के) आद्य स्त्रोत हैं। महनीयता, उदात्तता और उदारता की त्रिपुटी ही भगवान् शिव हैं। 'शिव के तीन चरण' लोकोत्तरता, लोकोत्तमता एवं लोकपावनता आदि तीनों वरेण्य गुणों को उत्थापित करता है। प्रस्तुत कवि एवं उनकी कविता, तीनों गुणों से सश्लिष्ट है। ग्रंथ में तीन खंड हैं– काव्यखंड, श्रद्धांजलि और भावांजलि। प्रंथम में कविप्रवर श्री पाण्डेयजी की रचनाओं का संकलन है, द्वितीय में विभिन्न विद्वान् कवियों की काव्य रूप में गुरु को समर्पित श्रद्धांजलि है, तीसरे में गद्यात्मक भावांज़लि है। कविता श्रद्धा और भाव ये प्रमुख शिव के तीन चरण हैं– तीनों के स्त्रोत विश्वेश्वर ही हैं। काव्य के तीन कारण हैं– प्रतिभा, निपुणता और अभ्यास (मम्मट, काव्य प्रकाश–1) तीन चरण हैं। श्रद्धांजलि के भी तीन चरण हैं– श्रद्धा की अंजलि को श्रद्धांजलि कहते हैं।

सत्य धारणवती कला का अपरनाम है श्रद्धा। निरुक्तकार यास्क ने लिखा है– 'श्रद्धा श्रद्धानात् (निरुक्त 9–30) अर्थात् जो श्रत् (सत्य) कोधारण करे वह श्रद्धा है। अपरिवर्तनीय मनः स्थिति– सत्यधारणवतीकला, पूर्ण विश्वास और विराट् में विलय (तत्स्वरूप की स्थापना) यह श्रद्धांजलि के तीन चरण हैं।

भावांजलि एवं श्रद्धांजलि दोनों एक हैं। प्रवृत्ति निमित्तक भेद है। सत्यधारणवती कला श्रद्धा है, पुनः पुनः पूज्य अथवा श्रेष्ठ के प्रति भावों की अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति का क्रियात्मक रूप भावांजलि है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार 'शिव के तीन चरण' काव्य के तीन चरण ग्रंथ नाम की सार्थकता सिद्ध होती है। स्वयमेव शिव ही जब शाब्दिक अक्षररूप धारण करते हैं तो कविता बनती हैं। कविता के स्त्रोत और प्राण और शरीर भी भगवान् शिव हैं।

संकलनकर्ता साधुवाद के पात्र हैं। आशा है यह कृति भोजपुरी साहित्य को समृद्ध करेगी तथा अपनी धरोहर रक्षा के प्रति भोजपुरिया समाज सतर्क होगा।

प्रो॰ हरिशंकर पाण्डेय
संकायाध्यक्ष, श्रमणविद्या संकाय
आचार्य एवं अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग,
स.सं.वि.वि., वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशीर्वचन

भोजपुरी के श्रेष्ठ कवि कीर्तिशेष पंडित शिवनारायण पांडेय 'मुकुंदपुरी' का स्मृति ग्रंथ- 'शिव के तीन चरण' सात्विक समाज को समर्पित हो रहा है- यह प्रसन्नता का विषय है। भोजपुरी लोकभाषा है, जनमनहृदयरञ्जिनी है। इसमें सहजवेधकता के साथ सामान्य हृदयवशकारिता प्रतिपद विद्यमान रहती है।

प्रस्तुत ग्रंथ कविप्रवर 'मुकुंदपुरी' जी के वंशधरों- संतति परंपरा और शिष्य परंपरा दोनों ने एक साथ मिलकर 'शिव के तीन चरण' नामक ग्रंथ तैयार किया है, सब साधुवाद् के पात्र हैं। सबके लिए मंगलाशीष प्रेषित है।

लक्ष्मी नारायण 'चौबे'
महाराज जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आभार

मुकुन्दपुरी स्मृति-ग्रंथ - **'शिव के तीन चरण'** बहुत लोगन के स्नेह व आशीर्वाद के प्रतिफल बा। भोजपुरी जगत के शान औरू हमार बाबूजी के शिष्य स्व॰ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह 'आरोही' जी पहिला व्यक्ति बानी कि हमरा से वर्ष 2006 में पहिला परिचय में ही स्मृति-ग्रंथ में बाबुजी के भोजपुरी कवितन के छपवाने खातीर जोर देके कहले रहीं। आज चौधरीजी हमनी के बीच ना रहनी, अब हम उंहां के भौतिक शरीर के एह पुस्तक के एगो प्रति ना भेंट कर सकतानी। ई पीड़ा के घूंट पी के रह जाये के पड़ता। हम चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंहजी के आपन पहिला आभार व्यक्त करत बानी।

एह स्मृति-ग्रंथ में सबसे अधिक सामग्री उपलब्ध करावे में हमार बाबूजी के शिष्य श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह 'निठूर' जी के बा। निठूरजी बाबूजी के कुछ कविता के हाथ से लिखल पांडुलिपि भी उपलब्ध करवनी उ दुर्लभ सामग्री ताजा रूप में 60 वर्ष तक संजो के अपना पास रखले रहीं। ई एगो अजूबा मिशाल बा। बाबूजी के निधन 12 अप्रैल, 1963 के भईल रहे। निठूरजी 'ग्रामवाणी' पत्रिका के 'संपादक' रहीं औरू बाबूजी के परम शिष्य श्री बद्रीनारायण राय 'सह-सम्पादक' रहीं। मई 1963 में मुकुन्दपुरी विशेषांक प्रकाशित भइल रहे। एक माह के अल्प अवधि में बाबूजी पर अनेक बहूमूल्य लेख मंगवाकर पत्रिका के प्रकाशित करावे में निठूरजी औरू श्री बद्रीनारायणजी के अहम् भूमिका रहे। उ सब सामग्री स्मृति-ग्रंथ के एगो श्रद्धांजलि खण्ड बन गईल बा। आज हम आपन गुरु निठूरजी के अवरू श्री बद्रीनारायणजी के कवना रूप में कइसे आभार व्यक्त करीं, बुझात नइखे।

हमार मित्र से अध्यात्मिक गुरु बनले पं॰ लक्ष्मीनारायण चौबेजी एह पुस्तक के नामकरण कइले बानी औरू उनके आशीर्वाद के फल बा ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मृति-ग्रंथ 'शिव के तीन चरण'। गुरु के ऋण चुकावल संभव नइखे। हम ऋणी रहल स्वीकार करत बानी।

एह पुस्तक के आन्तरिक कलेवर देवे के श्रेय हमार मित्र प्रो॰ दिवाकर पाण्डेय, हिन्दी विभाग, जैन कॉलेज, आरा के बा जे बिना थकावट के बड़ा ही उत्साह के साथ बार-बार अशुद्धि के सुधार कईनी। उंहा के लिखल 'नंदन कानन के परिजात' एह पुस्तक के मथेला बन गईल बा। हम प्रो॰ पाण्डेयजी के हृदय से आभार व्यक्त करत बानी।

हमार मौसेरा भाई डॉ॰ नन्दकुमार राय (पूर्व प्राचार्य, देशबन्धु डिग्री कॉलेज, नई दिल्ली) भी एह पुस्तक के संवारे में आपन कीमती समय लगवले बानी अवरू श्रद्धा के सुमन के रूप में आपन दो लेख देनी जवना के 'श्रद्धांजलि परिजनों की' की कड़ी में सबसे उपर रखल गईल बा। उनकर एहसान भुलवलो ना भुलाई।

गाँव-जवार के भाई-बन्धु लोगन के प्रेरणा, स्नेह व आशीर्वाद साथ रहल बा। हमार पूजनीया माता स्व॰ लालमुना कुँवर भी ई पुस्तक देखे खातीर तरसते रह गईली लेकिन संयोग ना बन पाईल। उनका जिनगी में हमरा आलस के कारण ई पुस्तक प्रकाशित ना हो सकल। आज हमार माता जेकरा के ईआ कहत रहीं आपन दिव्य दृष्टि से एह पुस्तक के अवलोकन जरूर करीहें। उनका के ई कृति समर्पित बा।

अंत में भुलल विसरल उ सब लोगन के एहसानमंद बानी जेकर नेह आ आशीर्वाद निरन्तर मिलत रहल। अब ई पुस्तक 'भोजपुरी जगत' के भेंट बा।

राजेन्द्र पाण्डेय
गाँव एवं पो॰- मुकुन्दपुर
थाना- चरपोखरी, जिला- भोजपुर
वर्तमान निवास- मुकुन्दपुरी निकेतन,
रामनगर, न्यू पुलिस लाईन,
हाउसिंग कॉलनी, चंदवा, आरा, भोजपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नन्दन कानन के पारिजात

श्रीयुत् शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' नाम भोजपुरी साहित्य खातिर हाल-फिलहाल अनजान जरूर बन गइल बा। बाकिर एगो समय रहे कि 'मुकुन्दपुरीजी' के डंका भोजपुरी साहित्य में जोरदार ढंग से बाजे शुरू हो गइल रहे। ऊ डंका अबही पूरा लय ना पकड़ि पवले रहे कि ओह पर अनभ्र बज्रपात हो गइल।

श्री शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' के जन्म तत्कालीन शाहाबाद जिला (अब भोजपुर) के पीरो थाना के मुकुन्दपुर गाँव में 01 फरवरी सन् 1925 के भइल रहे। इहाँ के आरा के जैन कॉलेज से बी.ए. के डिग्री हासिल कइनी आ आगे चलिके पीरो के एगो हाईस्कूल में शिक्षक भइनीं। ऊहाँ के बहुआयामी प्रतिभा के धनी रहनीं। बाकिर हमार मतलब ऊहाँ के कवि रूप से बा। ऊहाँ के छात्र-जीवन से ही भोजपुरी कवितन के रचना करे लागल रहीं। अबहीं ऊहाँ के कवि परवान चढ़ते रहे कि भगवान के बोलावा आ गइल। भोजपुरीरूपी नन्दन कानन के पारिजात अबहीं खिलहीं के चाहत रहे कि काल-व्याध ओकर गला दबा देलस। ऊहाँ के मात्र 38 बरस के उमिर में स्वर्ग सिधार गइनीं।

एह संक्षिप्त जीवन-परिचय के बाद आईं, हमनी के ऊहाँ के काव्यजगत् के सैर करीं जा। ऊहाँ के काव्यजगत् बहुत लाम-चाकर नइखे, बाकिर एह लघु में विराट् के दर्शन हो ता। ऊहाँ के विविध भावबोधन के ले के कविता रचने बानीं। भक्ति, यथार्थ, संघर्ष, युगबोध, जीवनबोध, आस्था, विश्वास जइसन अनेक भावबोधन के ले के ऊहाँ के कविता चलल बाटे। साथे-साथ तत्कालीन समाज, राजनीति आ संस्कृति पर भी ऊहाँ के आपन नजर गड़वले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बानीं। अल्पकाल के अल्पलेखन में एह तरह के भावबोधन पर लेखनी चलावल काफी महत्व रखऽता।

सबसे पहिले हम भोजपुरी में ऊहाँ के विशेष अवदान के रेखांकित कइल चाहऽतानी। मुकुन्दपुरीजी के काव्यसंग्रह 'भोजपुरी कविता' नाम से सन् 1961 में प्रकाशित भइल रहे। ऊ दौर भोजपुरी के एगो अद्भुत दौर रहल बा। भोजपुरी कविता सैंया-पियवा, टिकुली-बिंदिया के भ्रमजाल से निकले के कोशिश करत रहे। महेन्दर मिसिर अपना पूर्वी के माध्यम से भोजपुरी कविता के एगो स्वस्थ आकार दिहलन। भक्ति, श्रृंगार आ सामाजिक चेतना के त्रिवेणी कायम कइलन। आगे चलिके भिखारी ठाकुर, महेन्दर मिसिर के सामाजिक संदर्भन के विशाल फलक प्रदान कइले। एह दूनों कलाकारन के बाद भोजपुरी काव्यजगत् में एक साथ कई गो कलाकार प्रवेश कइले। कमलाप्रसाद मिश्र, बनारसीप्रसाद 'भोजपुरी' भुवनेश्वर प्रसाद 'भानु' पं. महेन्द्र शास्त्री, महेश्वराचार्य, रामेश्वर सिंह काश्यप उर्फ लोहा सिंह, रामनाथ पाठक 'प्रणयी' विश्वनाथप्रसाद 'शैदा', हरेन्द्रदेव नारायण जइसन बहुत से कवि लोग आइल, जिनका लोगन के कवितन में परम्परा से अलग एगो नया तेवर देखल जा सकऽता। मुकुन्दपुरी जी भी एही पाँति के रचनाकार बानीं। इहाँ के कवितन में एगो नया स्वाद आ नया तेवर देखे के मिलऽता। ऊँहा के कवितन में एक ओर नाश के प्रति चिन्ता बा त दोसरा ओर निर्माण के प्रति आस्था आ विश्वास भी बा।

अब हम ऊहाँ के कवितन के आन्तरिक सौन्दर्य के ओर चलऽतानीं। ऊहाँ के काव्यसंग्रह के पहिलका कविता बाटे 'सुमिरन'। एह कविता में माता सरस्वती के प्रति आत्मनिवेदन बा। एगो भक्त के पुकार बा, जवना में ओकर दास्यभक्ति प्रस्फुटित भइल बा। कवि, माता सरस्वती से जवन कुछ माँगऽता ऊ अपना खातिर ना, जगत् खातिर, समाज खातिर, प्रणिमात्र खातिर। उनुकरा भक्ति में ज्ञान तिरोहित हो जा ता आ रहि जा ता एगो आर्त्त पुकार। कारण कि कवि जवन सोचऽता तवन कहे के ओकरा पास शक्तिये नइखे। बस कवि के सुसुकत ज्ञान मन में उकसत रहऽता। ओह से जवन टीस निकलऽता ऊ कविता बनि के फूट परऽता। कवि अपना खातिर कुछ नइखें माँगत। माँगऽता त भोजपुरी के विकास खातिर रचना करे के शक्ति –

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कहे के शकति नइखे आपन सोचनवां
उकुसे ला मनवा में सुसुकत गेअनवा
मनवां लागल बाड़े भोजपुर के गानवां,
कइसन-कइसन भाव बाड़े एही में महनवां।
भाखा त सहज बाड़े रूआ के समनवां।
सब रस, सब गुन करीं ना बखनवां
अइसन चलावऽ मइया जइसन मशीनवां
दास 'शिव नारायण' के इहे अरमानवां
सपना के पूरा करऽ फूटते किरिनवां।"

भोजपुरी एगो बेजोड़ भाषा हऽ। हे मइया! एकरा विकास खातिर अइसन कुछ करऽ कि भोजपुरी मशीन जइसन तेजी से विकास के पथ पर दउरे लागे। रात के ई सपना सुबहे पूरा हो जाए त बहुत अच्छा। अपना भाषा के विकास खातिर कतना अकुलाहट बा कवि शिवनारायण पाण्डेय में।

यथार्थता भारतीय साहित्य के बहुत पुराना भाव ह। जवना परिवेश में आदमी जिये ला ओह से प्रभावित भइला बिना ऊ नइखे रहि सकत। कवि शिवनारायण में ई यथार्थ बेबाक ढंग से आइल बा। कवि सामान्य आदमी से अलग होला। कवनो घटना के देखे के आ ओह पर सोचे के नजरिया ओकर अलग होला। भावुकता कवि के पहचान हऽ। कवि शिवनारायण में भावुकता छलकत चलऽता। यथार्थ के चित्रण में कवि तटस्थ नइखे रहि पावत।

कवि के एगो कविता बा 'अब तक बिगड़ल फिर से बनावे के।' एह कविता में तेजी से गिर रहल पारिवारिक आ सामाजिक मूल्यन पर चिन्ता व्यक्त भइल बा। आजादी के बाद सांस्कृतिक पतन काफी तेजी से बढ़े लागल रहे। सब संजोवल सांस्कृतिक मूल्य तेजी से ढहे लागल रहे। आजादी के अर्थ लोग अपना-अपना ढंग से गढ़े लागल रहे। फल ई भइल कि स्वतंत्रता के जगह उच्छृंखलता बढ़ि गइल। एकर बेबाक चित्र एह कविता में स्पष्ट भइल बा-

"चलिआ बिगड़ि गइले आपन धेयान नइखे,
सुनि दुरनामवां के गुँगिया कछावे के।
चोरी सीनाजोरी के त कहाँ ले बेआन करीं,
हमनी गरीबवन के खूबहीं सतावे के।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहे परधान मुँह अपने से अपना के
जइसे बनमुरगा के मोरवा बनावे के।
कुल खानदान-परिवार अवरू पुरखा के
भूलि गइले धुनि खाली दरब जुटावे के।''

भारतीय संस्कृति त्याग के संस्कृति ह। एह में त्याग के महिमा बतावल गइल बा। बाकिर आज का हाल बा? चारों ओर लोग खाली दरब जुटावे के हफन धुनले बा। पूरा काव्य-संग्रह पढ़ि जाईं। हर जगह सांस्कृतिक विचलन के चिन्ता व्याप्त बा। कविता के शुरूआत में घोर अंधेरा बा। आगे चलिके ई अंधेरा अउर गहरात जा ता। बाकिर अंत में कवि के आशा फूट परऽता-

''कहे 'शिवनारायण' भाई अबहूँ से चेति जा तू,
अब तक बिगड़ल फिर से बनावे के।''

एक बात अवरू बा। इहाँ के कविता अंधकार से शुरू होता, धीरे-धीरे ऊ अंधकार अउर गहरात जा ता। बाकिर अंत में प्रकाश फैल जा ता। यानी शिवनारायण जी के कविता में अंधकार से प्रकाश के ओर यात्रा करे के भावना बा। ई बात इनका कविता के शक्ति आ सीमा दूनो बनऽता।

अब तक जवन बिगड़ि गइल बा तवना के फिर से बनावे के भावना उदात्तकोटिक बा। काव्य में उदात्त के प्रतिष्ठा करे वाला समालोचक लोंजाइनस ई कहले बाड़न कि उदात्त महान आत्मा के प्रतिध्वनि ह। आगे ऊ कहऽतारन कि जीवन भर हृदय में क्षुद्र विचारन के पोषण करेवाला आदमी कबो उदात्त रचना करिए नइखे सकत। ई कसौटी कवि शिवनारायण पर खरा उतरऽता। ऊहाँ के हृदय काफी विशाल रहे। कइसे? ई उहाँ के कवितन से मालूम हो ता। कवि एह बेदरदी दुनिया से उबिया के एगो अइसन दुनिया बसावल चाहऽता जवना में आपन-अनकर के भेद ना रहित-

''आपन दुनिया अलगे बसइतीं
आपन लोग के खूब बिसरइतीं
आपन लोग कब आपन होला।
मायाजाल के खाली पेला
आपन गैर के भेद मिटइतीं।

जब तक माया-जाल होला तब तक आपन-अनकर के भेद होला। इहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन-अनकर दुःख के कारण होला। ई दुख मिटी कइसे? बस, आपन-अनकर के भेद मिटा के। ढहत सांस्कृतिक मूल्यन के चिन्ता कवि के मानस के उदात्त स्तर पर पहुँचा दे ता जहवाँ ऊ मानव-मानव के तमाम भेदन के मिटा दिहल चाहऽता। कविता के अन्त में भाव के उदात्तीकरण हो गइल बा। अलग दुनिया बसावे के भाव बा जरूर। बाकिर ऊ दुनिया प्रेम के दुनिया होई जहवाँ दोसरका के दुख में शामिल होखे के भावना रही। ऊहवां दरब के ना ईश्वर प्राप्ति के प्रधानता रही-

"मालिक के गोड़ जा लपटइतीं
शिवनारायण' फिर डूब जइतीं।"

कवि के यथार्थ-चित्रण में व्यंग के धार कविता के एगो नया ऊँचाई दे दे ता। आजादी के बाद देश के बिगड़त स्थिति पर कवि पछता रहल बा। कविता में खाली अंधेरा बा। सब कुछ उल्टा घट रहल बा। सही के जगह गलत के प्रतिष्ठा हो रहल बा। आजादी के समय जनता बहुत कुछ आशा कइले रहे। बाकिर मिलल का? घोर अराजकता। सामान्यजन अपना के ठगाइल महसूस करे लागल। सही लोग ढकेलाए लागल आ गलत महिमामंडित होखे लागल। कवि शिवनारायण एह विडम्बना के पहचनले। सामान्य जनमानस के भावना के ऊ अपना कवितन में वाणी दिहलन। एह बाणी में व्यंग, क्षोभ आ बेचैनी के भाव बा। 'अब का करीं आसरा' कविता में ऊ कहऽ तारन-

"अइले महँगी के मेला, कोई रही ना अकेला
हम गुरु तू चेला, अब का करीं आसरा।
गइले ऋतुराज भाग, अइले सावन सुहाग
देख बेंग अरू काग, अब का करीं आसरा।
सुनऽ कोयल रानी, चहुँओर सुनसानी
बेंग बाजा कागा बानी, अब का करीं आसरा।"

आजादी के बाद गोरका अँग्रेज चलि गइलन सऽ बाकिर करियवा अँग्रेजन के सुतार हो गइल। अंग्रेज त चलि गइलन बाकिर अँग्रेजियत अउर हुँमाचा मारे लागल-

"चाहीं सूट बूट के साज, धोती पहिरे में लाज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब का अँग्रेज के राज? अब का करीं आसरा।
धइले बगुला के ध्यान, कइले प्राप्त सब ज्ञान
सुनऽ 'जेंटिलमैन' के बयान, अब का करीं आसरा''

कविता के अँधकार अंत में जाके छँटि जा ता। कवि के आशावादी दृष्टिकोण उभरि जा ता –

''गांधी बाबा के सन्देश, बाड़े रामराज उपदेश
फैली कोने-कोने देश, हमनी इहे आसरा।''

आजादी के बाद राजनीतिक स्थिति काफी डाँवाडोल हो गइल रहे। चारों ओर अराजकता के बोलबाला बढ़ि गइल रहे। हर संवेदनशील ईमानदार आदमी अपना के ठगाइल महसूस करे लागल रहे। कवि अपना एगो गीत में एही मनोभाव के अभिव्यक्त करि रहल बाड़न –

''का हम लिखीं दादा, कुछ ना बुझाता
दुनिया के हाल देखि माथा चकराता।
चुपी कइसे साधी चुपो रहलो ना जा ता
मानवां के घाव हमरा खूब ककुला ता।''

कवि के दशा फकीराना हो जा ता। कबीर के 'आगि जो लागी नीर में, नदिया जलि कोयला भई' के आध्यात्मिक भाव आ प्रतीकन के कवि बड़ी सफाई से आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कइले बाड़न। एह कविता में एगो अद्‌भुत भाव-सौन्दर्य उभरि आइल बा–

''आगि में समुन्दर लागे, पानी जरल जा ता
मछरी आकाशे उड़े, चिरई धराता।''

उलटबाँसी के स्वरूप लेले एह कविता में व्यंग के धार आ प्रतीकन के आपन सौन्दर्य बा।

आज भ्रष्टाचार एगो देशव्यापी समस्या हो चुकल बा। ई अतना भयावह हो चुकल बा कि सत्ता खातिर एगो चुनौती बनि चुकल बा। एकर प्रसार आजादी के बाद तुरन्त होखे लागल रहे। तत्कालीन परिस्थितियन के बेबाक चित्रण करत कवि कह रहल बाड़न –

''चोरी घूसखोरी, सीनाजोरी देखाता
चार सौ बीसवा के नामवां जपाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेत खाता गदहा आ जोलहा पीटाता
के हतेयार रहे जेल के ठुसाता

....

जेकर माई पूआ पकावे, लइका भूखे मरल जा ता
हाड़ ठेठा के काम करे के, मक्खन केकरा ठुसाता।
सूत बिने से गुदरी गाँथे रेशमी केकरा सियाता
चाम पकावे खून सुखावे बेवाई चचराता।
एम.ए.बी.ए. दू चार कमावे, अनपढ़ भाग विधाता।"

एहिजा याद आवऽता हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि रघुबीर सहाय के 'अधिनायक' कविता, जवना में ऊ जानल चाहऽतारन–

"जन गण मन में भारत का
वह कौन भाग्य विधाता है।
पहन सुथन्ना जिसका हरदम
गुन हरचरना गाता है।"

कवि मुकुन्दपुरी के ऊपरवाली कविता में सहायजी के प्रश्न के उत्तर स्पष्ट हो गइल बा। 'अनपढ़ भाग्य विधाता' के अनपढ़ अर्थात् अयोग्य आदमी आज भारत के सत्ता पर काबिज हो के भाग्य विधाता बनि जा रहल बा। रघुवीर सहाय में जवन भाव प्रच्छन्न बा, मुकुन्दपुरी जी में ऊ स्पष्ट हो गइल बा। एह कविता में तत्कालीन राजनीति के सच उजागर भइल बा।

एह तरह के बहुत सारा कवितन में मुकुन्दपुरी जी देश के गिरत चौतरफा मूल्यन पर चिन्ता व्यक्त कइले बाड़न। अपना कवनों कविता में कवि आपन जड़ के छोड़ले नइखन। सच कहल जाउ त कवि के यथार्थ बोध जीवन आ जगत् से निःसृत बा। यथार्थ चित्रण में ई बात साफ हो जा ता कि कवि जीवन आ जगत् के काफी निकट से देखले बाड़न, खाली देखलही नईखन बलुक ओकरा के भोगले भी बाड़न। एही से उनुकरा कवितन में अतना धार पैदा भइल बा। यथार्थ के चित्रण में कवि तरह-तरह के मनोभावन से गुजरल बाड़न। कहीं निराशा के भाव उठल बा त कही लाचारी के। कहीं आक्रोश प्रच्छन्न बा त कही व्यंग। सच कहल जाऊ त कतिहूँ कवि तटस्थ नइखन रहि पावल। सगरे वर्तमान पर आक्रोश बा त भविष्य के सृजन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशा भी बा। कवि के निजी अनुभूति यथार्थ के साथ घुलमिल के कविता के बोझिल होखे से बचा ले ले बा।

पाण्डेय जी के कवितन में कहीं-कहीं पराजयबोध के अभिव्यक्ति भी भइल बा। जीवन के साथे संघर्ष के अटूट रिश्ता होला। जहाँ जीवन बा उहाँ संघर्ष भी। सच कहल जाऊ त संघर्ष के आगि में जरिके जीवन चमके दमके ला। तब इहो सच बा कि जहाँ संघर्ष बा तहाँ पराजय भी लागल रहे ला। तब ई बात भी सच बा कि जीवन जतना संघर्षमय होला, विचलन आ हताशा भी ओतने जादा होला। लगातार संघर्ष कइला से मन कभी-कभी क्षुब्ध हो जाला। चेतना के धरातल पर अइसनों अवसर आवे ला जब व्यक्ति अपना के थाकल-हारल महसूस करे लागे ला आ जीवन व्यर्थ लागे लागे ला। जवना आदमी में जीवनीशक्ति के अभाव होला ऊ घुटना टेक देला आ जेकरा में जीवनीशक्ति होला ऊ बार-बार शक्ति जुटा के जीवन-संघर्ष में कूदि जाला। कहे के मतलब कि पराजय के बोध त होला बाकिर ऊ व्यक्ति ओह बोध के चेतना के स्तर पर स्वीकार ना करे ला।

पांडेय जी के कवितन में चेतना के स्तर पर ई पराजयबोध आइल बा जरूर बाकिर तुरन्त ओकर शमन हो गइल बा। इहे जीवन के यथार्थ ह। 'जादू कइले ना' कविता में ई भाव आइल बा-

"कलजुग अन्हरिया में, पाप के बदरिया से घेरी ले ले ना
कतना दूर हो कगरिया से चली भइले ना
नइया बीचवा लहरिया से हारी गइले ना।
देख सन सन बेअरिया से धाई अइले ना।"

सब कुछ उल्टा बा। अन्हरिया रात, ऊपर से पाप के बदरी। बीच लहर में नाव। बहुत दूर कगार। ओह पर सन्-सन् करत हवा। कविता में घोर अंधकार बा। पराजय साफ सामने बा। बाकिर कवि के मन कुछ अउर चाहऽ ता-

"तुलसी ऊँजोरिआ में फटले बदरिआ से जादू कइले ना
साधु बाबा के धोकरिआ से जादू कइले ना।"

जब आदमी वर्तमान से त्रस्त हो जाला त ऊ अतीत के ओर झाँके ला कि ऊहवाँ समाधान मिलि जाई। देश जवना दिशा में जा रहल बा ओकरा के सम्हारे खातिर बाबा तुलसी के धोकरी (रामचरितमानस) से बढ़ि के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछो नइखे सब समस्या के समाधान 'मानस' में परल बा। बाबा तुलसी के स्मरण कवि के निराशा के घटाटोप से निकाल के आशा के प्रकाश में बइठा दे ता।

कवि के एगो गीत बा "बिना सिरसक के"। चारों ओर के अराजकता से कवि ऊबिया गइल बा। कवनों उपाय नइखे सूझत। बेचारा हिम्मत हार गइल बा। पराजयबोध हो रहल बा -

"दुनिया के हाल देखि चुपिया लगाव तानी
कहे के हिम्मत नइखे चुपिया लगाव तानी।"

एक तरह से हिम्मत टूटि गइल बा। बाकिर दूसरका ओर से कवि हिम्मत जुटा रहल बा। ऊ कलम आ भगवान के साथी बना चुकल बा। भगवान के साखी रखिके कलम से आक्रमण करि रहल बा। भले मुँह चुप रहि जाउ बाकिर कलम ना चुप रही। कवि के मुँह कलम में होला-

'साखी भगवान बाड़े हालत सुझाव तानी
कहाँ ले बेआन करी, कलम चलाव तानी।"

ई पाण्डेयजी के कवितन के कुछ बानगी ह। विस्तारभय के चलते हम आउर बातन के रहे दे तानी। बाकिर कुछ तथ्यन की ओर संकेत कइल चाहऽतानी। पहिल बात कि भोजपुरी भाषा के मन-मिजाज के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रखे के जवन प्रारम्भिक प्रयास कइल गइल ओह में कवि शिवनारायण पांडे के कविता प्रतिनिधि बाड़ी सऽ। हम दावा त नइखी करत बाकिर सुधी आलोचक लोग अगर शोध करसु त भोजपुरी कविता के नया तेवर देबे वालन कवियन में कवि शिवनारायण जी भी जरूर शामिल होखबि।

कवनो भावुक आ संवेदनशील आदमी अपना समय, समाज आ परिवेश से अलग नइखे रहि सकत। कवि सामान्यजन से अलग होला। ओकर सोचे के ढंग भी अलग होला। कवि शिवनारायण के कविता में परिवेश हावी बा। कवितन के पढ़ला से तत्कालीन पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक परिवेश स्पष्ट हो जा ता। ओह घरी के शुरू भइल अवमूल्यन आज चरम पर पहुँच चुकल बा। उनुका निजी अनुभूतियन के ज्वार में भी लोक नइखे छूटत।

कहे के मतलब ई कि कवि शिवनारायण के कवितन में धरती के राग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा, धरती के लय, धुन आ ताल बा। आ बा बेसुरा होत रागन के सजावे के अकुलाहट। कवि कम रचना कइले बा कि अधिक ई बात महत्वपूर्ण ना होला। महत्वपूर्ण होला कविता के स्रोत। कविता के स्रोत अगर एही धरती में मौजूद बा त कविता उत्तम कोटि के होई। कवि शिवनारायण के कवितन के स्रोत एही धरती में बा। अफसोस बा कि भोजपुरी साहित्य के ई कवि पूरा सेवा ना करि पवले। बाकिर जवन बा तवन भोजपुरी के धरोहर बा।

चलत-चलत कुछ अउर बात। ऊ ई कि ऊहाँ के चलि गइला के बाद ऊहाँ के आभामंडल के विस्तार के पता चलऽ ता। ऊहाँ पर 'ग्रामवाणी' पत्रिका एगो पूरा विशेषांक निकालि देले रहे। एह पत्रिका के प्रथम वर्ष के ग्यारहवाँ-बारहवाँ अंक मुकुन्दपुरी विशेषांक ह, जवन ज्येष्ठ कृष्ण 8 सं. 2020 यानी 16 मई 1963 ई. के प्रकाशित भइल रहे। एह पत्रिका के सम्पादकीय में सम्पादक महोदय लिखऽ तारन- "यह अंक 'मुकुन्दपुरी अंक' से प्रकाशित हो रहा है। कविवर श्री शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' भोजपुरी प्रदेश के सर्वप्रिय एवं लब्धप्रतिष्ठ कवि थे। 12 अप्रैल 63 को 12 बजे रात में प्रस्थान कर गए। अपनी भोजपुरी कविता द्वारा भोजपुरी कविता में नवीन जागरण के संदेशवाहक प्रगतिवादी कविता को चुनौती देनेवाले महान् कवि को हम भुला नहीं सकते। अस्तु, उस महान आत्मा की पुण्य स्मृति में यह प्रकाशित करना हमने उचित समझा जिसका परिणाम यह है।"

श्रद्धांजलि खण्ड के सब सामग्री ओही पत्रिका से लिहल गइल बा। 'मुकुन्दपुरी जी' के काव्य-संग्रह जीण-शीर्ण अवस्था में मिलल रहे। जवना के कुछ भाग नष्ट हो गइल बा। मात्र तेइस गो कविता मिलल बाटे। ऊहाँ के हस्तलिपि में एगो कविता मिलल बा, जवना के कोना पर 'प्रकाशन हेतु विचाराधीन' लिखल. बा आ एगो अस्पष्ट हस्ताक्षर बा। ओह कविता के अंत में एगो विज्ञापन के मजमून बा जवना में मुकुन्दपुरीजी के काव्य-संग्रह के उल्लेख करत कहल गइल बा कि एह में उनतीस गो कविता बा। वर्तमान में मात्र तेईस गो उपलब्ध बा। साफ हो जाता कि छः गो कविता गायब बा। एह अप्रकाशित कविता के शीर्षक के निर्धारण हमरा करे के परल बा। काहे कि हस्तलिपि में शीर्षक स्पष्ट नइखे हो पावत। एह कविता के ऊँहा के हस्तलिपिय में ही छापल हमरा ठीक बुझाइल हा। काहे कि ई हस्तलिपि एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरोहर बा। धरोहर से छेड़छाड़ ठीक ना कहाई।

श्रद्धांजल खण्ड में ऊहाँ के एगो मशहूर कविता के चर्चा बार-बार आइल बा। ओह कविता के शीर्षक बा 'हई देखऽ बनिहरवा आइल'। एह कविता के भी अंत में दिहल जा रहल बा। कहीं-कहीं समस्या आइल हा क्षतिपूर्ति के। काहे कि कहीं-कहीं पन्ना फाटि गइला से शब्द उड़ गइल बाड़न सऽ। 'छोटी लाइन तू हूँ कहावत रहु' कविता के अंतिम दू पंक्तियन में शुरू के एक-एक शब्द उड़ि गइल बा। ओहिजा हम भाव से मेल बइठावत 'विदाउ टी' आ 'आपन' शब्द के देले बानी। अइसही 'पन्द्रह अगस्त आइल बा' के सतरहवां पंक्ति के शुरूआत में 'त' बाँचल रहे। हमरा लागल कि ओहिजा भारत लिखल रहे। एह से भारत कई देले बानी। एही तरह एक जगह 'पुर' आइल बा आ आगे उड़ि गइल बा। "बाबा आज हम जपबि तोहार माला' कविता के नीचे से पाँचवा पंक्ति के शुरू में शब्द उड़ि गइल रहे। खाली 'ग' अक्षर बाँचल रहे ओहिजा हम क्षतिपूर्ति में 'रोग के फंदवा' शब्द जोड़ि देले बानी। अब ई कतना सही बा आ कतना गलत हम नइखीं कहि सकत, बाकिर एकरा अलावे हमरा पास कवनो दोसर राह ना रहे।

'मुकुन्दपुरी जी' के यशस्वी सुपुत्र डॉ० राजेन्द्र पाण्डेय जी एह पुस्तक का दायित्व हमरा पर डाल देले रहीं। हम वृहद् संशोधन करेके कोशिश भरपूर कइले बानी। एह में दू मत नइखे कि ई दायित्व कवनो कुशल हाथ में रहित त अउर अच्छा बनित।

इति शुभम्!

दिवाकर पाण्डेय
ऐसोएिसट प्रोफसर, हिन्दी विभाग
हरप्रसाद दास जैन कॉलेज, आरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding-IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

नन्दन कानन के पारिजात

काव्यखण्ड

(भोजपुरी कविता)

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	सुमिरन	शिव नारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' (मुकुन्दपुरीजी)	25
2.	छोटी लाइन तूहूँ कहावत रहु		26
3.	भाई लोग मत सुनऽ पछताके		27
4.	अब तक विगड़ल फिर से बनावे के		28
5.	आपन दुनिया अलगे वसइतीं		30
6.	जादू कइले ना		31
7.	बाबा तुलसी		32
8.	भरम सकले जहान बा		34
9.	अब का करीं आसरा		35
10.	कइसन असों के फगुइया		36
11.	ए मोरे मेंबर भइया		37
12.	भोजपुरी गीत		38
13.	देख देश अब भइल मशान		39
14.	मेला के बहार		40
15.	गोतीआ		41
16.	हमरा गुरूजी के बतिआ सोहइले ना		42
17.	पीरो-तड़ारी थाना पुस्तकालय संघ का संक्षिप्त विवरण (कविता)		44

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

18. बिना सिरसफ़ के 46
19. तोहरे बनावल हम हई भगवान 48
20. पन्द्रह अगस्त आइल बा 50
21. भोजपुरी गीत 52
22. बाबा आज हम जपबि तोहार माला 55
23. सावन सतमी अँजोरिया 56
24. हई देखीं बनिहरवा आइल 57
24. होई फेरू विहनवा ना। 58

श्रद्धांजलिखण्ड

काव्यांजलि

1. कवि मुकुन्दपुरी – श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह, एम.ए. 63
2. मुकुन्दपुरीजी की स्मृति में – श्री माधवप्रसाद मिश्र, आयुर्वेदाचार्य 65
3. लउके अन्हार रे – श्री रामजी पाण्डेय 'दीपक' 67
4. एक समवेदना – जयराम सिंह 68
5. मुकुन्दपुरीजी – शिवजी तिवारी 69
6. अश्रुलड़ियाँ – राजेन्द्र मिश्र 69
7. गुरुजी के देहावसान पर – लालबिहारी सिंह 70
8. हमारे गुरुदेव – सुमन्त प्रसाद 71

भावांजलि

9. कवि मुकुन्दपुरी और उनका परिचय – श्री रामचन्द्रप्रसाद सिंह 72
10. लोककवि शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' – श्री मधुसूदन उपाध्याय 86
11. मेरे दोस्त : स्वर्गीय शिवनारायण 'मुकुन्दपुरी' – श्री प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी 90

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12. मेरे अभेद पिता–स्व० श्री मुकुन्दपुरी – श्री नन्दकुमार राय 95

13. आदरणीय गुरुदेव मुकुन्दपुरी जी – श्री बद्रीनारायण राय 98

14. एक आदर्श शिक्षक 'श्री मुकुन्दपुरी जी' – श्री रामनिवास राय 101

15. श्री मुकुन्दपुरीजी : एक अनुभूति – श्री राम कुमार सिंह 103

16. श्री शिवनारायण भाई – श्री प्रो. कृष्णकुमार पाण्डेय 107

17. पूज्य गुरुदेव – श्री राजकुमार सिंह 113

18. मुकुन्दपुरी जी का निधन – रामनरेश शर्मा 113

19. हमारे ज्ञानेश्वर स्व० मुकुन्दपुरीजी – साकेत बिहारी 113

20. मुकुन्दपुरीजी का देहावसान – श्री राजेश्वरीप्रसाद मिश्रा 114

21. भावांजलि – विनय कुमार 114

22. भावांजलि – मुनिजी राय 115

श्रद्धांजलियाँ परिजनों की

23. कवि 'मुकुन्दपुरी' की काव्य–साधना – डॉ. नन्द कुमार राय 116

24. कवि 'मुकुन्दपुरी' और उनकी काव्य–यात्रा – डॉ. नन्द कुमार राय 117

25. हमार बावा आज भी बानी – रिंकू कुमारी 123

26. मेरे बाबा मुकुन्दपुरी जी : एक प्रेरणास्रोत – डॉ. राकेश कुमार पाण्डेय 126

27. बाबूजी की यादों में : मेरे अपने बाल संस्मरण– डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय 131

28. हमार चाचा मुकुन्दपुरी जी : गणित के जादूगर–तीर्थनाथ पाण्डेय 139

29. स्वहस्तलिखित मुकुन्दपुरी जी की कविता 141

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्यखण्ड

भोजपुरी कविता

शिव नारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

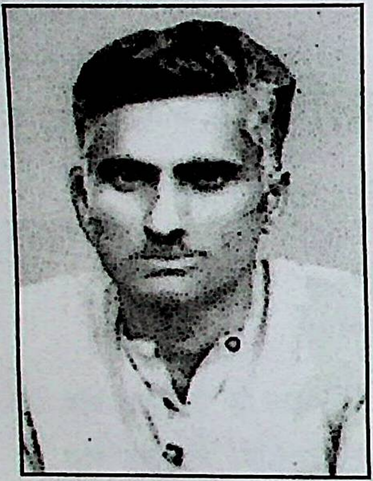

स्व॰ शिव नारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' धर्मपत्नी स्व॰ लालमुना कुँवर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुमिरन

पहिले में सुमिरिले माता सरसती जी के,
हमरा गरीब पर होख ना सहाय।
बल, बुद्धि जेकरा न धन के ठेकनवां,
मचल बड़ुए जिनगी में छने छन हाय।
विद्या, बुद्धि-बारिधि जानत बा जहानवां,
पार केहु पावे नाहीं, भले जाये जानवां।
महया के पईयां प हमहूँ गिरल बानी,
राखि ल शरानवां में देके बरदनवां।
'जिनगी भर धोइबी मईया तोहरो चनवां'।
हरदम छछनेला हमरो परानवां।
कहे के शकति नइखे आपन सोचानवां,
उसुकेला मनवा में सुसुकल गेआनवां
मनवा लागल बाड़े भोजपुर के गानवां,
कइसन-कइसन भाव बाड़े एही में महानवां।
भाखा त सहज बाड़े रूआ के समानवां,
चीखत मधुर लागे मधु के समानवां
सब रस, सब गुन, करी ना बखनवां
अइसन चलाव मइया, जइसन मशीनवां।
दास 'शिवनारायण' के इहे अरमानवां,
सपना के पूरा कर, फूटते किरनवां।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding:IKS-MoE-Grant-2

छोटी लाइन तू हूँ कहावत रहु

(राग सवैया)

लरिकाई के बात इआदि परे, छोटी लाइन तूहूँ कहावत रहु।
खेलत कूदत जात रहीं, दउरे में तू बाजी लगावत रहु।
हाथ-दू हाथ के आगे-पीछा पर, आँख गुड़ेरी डेरावत रहु।
रोरिन्ह फेंकि के पीटि दीहीं, उहो मवन लगा बिसरावत रहु।
ठाढ़ होई जबहीं तबहीं, तू हूँ आपन अस समुझावत रहु।
झाँझ, मृदंग, बंसुरिआ बजाई के, काहें तू खूब मनावत रहु।
थप थप थपरि बजाई रिझाई के, दउरे के फेरु बोलावत रहु।
धउरत-धउरत थाक जाई तब, आपन जोर लगावत रहु।
भइलीं लरिका से सेआन सखी, काहें बीतल बात भुलावत बाड़ु?
कइसन चूक भइल हमरा से कि, आजुले तू त सतावत बाड़ु।
सुरुज ना उगले तबहीं, खटिआ छोड़ि के दउरातवत बाड़ु।
कल्हुए बनिया आज सेठ कहाला हो! आपन हाल छिपावत बाड़ु।
कहाँ ले बेआन करी तोहरो, 'एकप्रेस' कहाई के धावत बाड़ु।
'चेकिंग' में कतना लोग के, 'नमरी नोट' डाँड़ लगावत बाड़ु।
'विदाउ टी' के बान छूट तबहीं, जब जेल के हावा खिआवत बाड़ु।
आपन चालि निहारि ल तू, अब काहें के शान बघारत बाड़ु।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाई लोग मत सुन पछताके

होत फजिरे से फिकिर समाईल।
बैला, बछवा के सानी गोताईल॥
गईआ, बछरू के बांधि, दुहाईल।
अबहीं भइंस ना खूब अघाईल।
सारि बहारि गोबर हंसोथाईल।
बिनु पनही के गोड़ कठुआईल॥
बेरि गिरल तब मुँह धोआईल।
कौड़ी भर गुर खाली खाईल॥
खखड़ी गगरी के पेंदि धराईल।
खइला बिनु पीठ में पेट समाईल॥
बिनु दाना लइका छपटाईल।
काम के बोझा माथे लादाईल॥
खाली पेटे हो राह धराईल।
चलिआ मधुरी, मालिक गरमाईल॥
कबहीं जेकर आसरा न फरल।
जेकर अँखिआ हरदम झरल॥
जेकर मन सपनों में जरल।
आहि निकलि के सगरो भरल॥
हाड़-माँस सब देह खियाईल।
आगे दिन का देखी लिखाईल॥
अबही साँस निकलि बलू जइते।
बीतल बात ना सामने अइते॥
कइसन बाड़े भाग विधाता!
उलटे उनकर बही-खाता॥
कहत 'शिवनारायण' खूब समुझाके।
भाई लोग मत सुन पछताके॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब तक बिगड़ल फिर से बनावे के

होख ना सहाय माता, सरसती हमारा प,
लिखल चाहत बानी हाल कलजुगवा के।
कहे खातिर हमनी के आपन कहावे खातिर,
मुंहवा प बोले खातिर सुगवा कहावे के।
बाझवा के कामवा करत बाड़े रात-दिन,
मारि २ ठोर भर जोरवा लगावे के।
गुनवा के अवगुन सगरे बनाव ताड़े,
हरदम नून-तेल-मरीचा मिलावे के।
अनभल के मालवा के सुतलों में जप ताड़े,
रहि खातिर श्री भगवान के मानवे के।
जर ताड़े सुनि के बड़ाई केहु दूसरो से,
उपर कहावे खातिर एड़ि अलगावे के।
चलिआ बिगड़ि गइले आपन धेआन नइखे,
सुनि दुरनामवा के गूंगिआ कछावे के।
चोरी-सीना-जोरी के त कहां ले बेआन करीं,
हमनी गरीबवन के खूबहीं सतावे के।
कहे परधान मुंह अपने से आपन के,
जइसे बनमुरगा के मोरवा बनावे के।
कुल खानदान-परिवार अवरू पुरखा के,
भूलि गइले धुनि खाली दरब जुटावे के।
मान-मरजाद सब माटी में मिलाई देले,
हरवा, कुदारी खाली हँसुआ चलावे के।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़ल-लिखल सब गाजारा समान बाटे,
खूनवा सूखाई के त हड़वा ठेठावे के।
नाम वो निशान के कवन परवाह बाटे,
रात दिन घरवा में कलह माचवे के।
अइसन शरीरावा के तनिको खेआल नइखे,
सूखल चबेना नून-भातवा चबावे के।
सड़ल-गलल धोती चर-चर चिरके से,
सैकड़ों पेवन वाला कुरता लगावे के।
प्रान से पिआरा बाड़े कोरा के दुलरूआ से,
तनिको आहस नइखे भूईआं लोटावे के।
शान त बढ़ल बाटे सकल जहानवा से,
लाज वो लेहाज देल रोजहिं धोवावे के।
आपस के छोट-बड़ के भेदवा उठाई देल,
कमर कसलऽ राय-सन्मत उड़ावे के।
कहे 'शिव नारायण' भाई अबहूं से चेत जा तूँ,
अब तक बिगड़ल फिर से बनावे के।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन दुनिया अलगे बसइती

आपन दुनिया अलगे बसइती।
आपन लोग के खूब बिसरईती।
आपन लोग कब आपन होला?
माया-जाल के खाली पोला-
आपन गैर के भेद मिटईती। आपन दुनिया ....बसईती।

ना बलु खइती, हवो ना पीअती।
बिहटी गांथी के पेवन सीअती।
भुंइआ सुतती, पुअरा ओढ़ती।
तोसक, तकिया सपनो ना सोचती।
मुंगड़ी मारि के फिकिर भगइती। आपन दुनिया ....बसईती।

जहँवा केहु कबहूं ना जइते।
जहँवा चांद-सुरुज ना अइते।
जहँवा ओठ ना कभी मुसकईते।
आपन मड़ईआ उहां लगइती। आपन दुनिया ....बसईती।

दिआ-बाती जहँवा न जरइती।
सिंग सिआरी रात गवईंती।
भरल भादों कि जरल जेठ में,
आपन देह के खूब गलइती। आपन दुनिया ....बसईती।

अखियां में हरदम धार बहइती।
धरती ले आसमान डूबइती।
होत प्रलय, जुग २ दहइती।
मालिक के गोड़, जा लपटईती।
'शिवनारायण- फिर डूब जईती। आपन दुनिया ....बसईती।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जादू कइले ना

कलजुग अन्हरिआ में, पाप के बदरिआ से,
घेरी ले ले ना।
कतना दूर हो कगरिआ से,
चली भइले ना।
नइआ बीचवा लहरिआ से,
हारि गइले ना।
देखऽ सन सन बेअरिआ से,
धाई अइले ना।
गाई के गोहरिआ में, सुनि के खबरिआ से,
थामी ले ले ना।
पतवार के अचरिआँ से,
गहि धइले ना।
तुलसी अंजोरिआ में, फटले बदरिआ से,
जादू कइले ना।
साधु बाबा के धोकरिआ से
जादू कइले ना।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा तुलसी

बाबा मोरे 'तुलसी' ना हमनी के बीचवा में,
हमनी के छूटेला रोआई मोरे भाइयों।
धरती, आकाशवा, पातालावा, जंगालवा में,
रहे नाम केकर सुनाई मोरे भाइयों?
राजा के महलिआ से, मड़ई भिखरिआ ले,
काहे राम-राम-राम रटाई मोरे भाइयों?
कलजुग के बीरवा के सूना बा अखड़वा से,
देशवा के गोरा सब पराई मोरे भाइयों
अँखिआ अघाई कइसे बिनु दरशनवाँ के,
कानवाँ गइले बहिराई मोरे भाइयों।
रात 'दिन नून, तेल, लकड़ी मशालवा में,
सरग के सिढ़िआ भुलाई मोरे भाइयों।
बाबा मोरे तुलसी के नामवा अमर रही,
जब से सुरुज अवरू चांद मोरे भाइयों।
रामजी के घारावा के सगरो बसाई देले,
काहें ना तू पढ़े लऽ रामायण मोरे भइयों।
केहु त झूमत बाड़े अरथ रमायन में,
केहु करे शंका समाधान मोरे भाइयों।
केहु त बहत बाड़े सहित लहरिआ में,
पँढ़लो लिखल हैरान मोरे भाइयो।
चौपाई, दोहा, छन्द, छप्पय, कवितावा के,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गावे झालि, ढोलकी बजाई मोरे भाइयो।
चुटुकी बजाई केहु थपरि लाई केहु,
चारो ओर धुइआं रमाई मोरे भाइयों।
बाबा मोरे रहीते त कातना सिखइते से
ना हम रहीती गँवार मोरे भाइयो।
आपुस के भेद-भाव सबके हटाई के त,
राहाता प चलीती सँभार मोर भाइयो।
बाबा के देल पोथिआ के छोड़ मत एको छन,
इहे बा गेआन-भंडार मोरे भाइयों
कहे 'शिवनारायण' इहे अजर हमार बाटे,
तू हूँ बाड़ खूब हुंसिआर मोरे भाइयो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

भरम सकले जहान बा

भरम सकले जहान बा, काहें तोहार गुमान बा ना।
इहांवा कवन अब ठेकान बा, कि कवन पहचान बा ना।
सपना अइसन इहे जान बा, कि तुरते बिहान बा ना।
गिनले चार दिन मेहमान बा, काहे तोहार शान बा ना।
जानऽ सब जीव एक समान बा, मालिक भगवान बा ना।
सगरे दुनिया में सुनसान बा, धरती ले असमान बा ना।
सरग खातिर राह आसान बा, गीता, वेद, पुरान बा ना।
बोले सांचे खातिर बनल जबान बा, एहि में बखान बा ना।
सेवा सब में धरम महान बा, गाँधी बाबा परमान बा ना।
सोचि के 'शिवनारायण' बड़ा हैरान बा, खोजत असली।
गेयान बा ना।।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब का करी आसरा

अइले महँगी, का मेला, कोई रही ना अकेला,
हम गुरु तू हूँ चेला, अब का करी आसरा
गइले रितुराज भाग, अइले सावन सुहाग,
देख बेंग और काग, अबका...........आसरा।
सुनऽ कोयल रानी, चहुँ ओर सुनसानी,
बेंग-बाजा, काग-बानी, अबका........आसरा।
गल्ला आग समान, सेवा गाजरा के मान,
सबसे सस्ता विद्या-दान, अबका......आसरा।
बाड़े रोटी के सवाल, कइसन अइले इहो काल,
सपना अरहर के दाल, अबका...........आसरा।
चाहीं सूट-बूट के साज, धोती पहीरे में लाज,
अब का अँगरेज के राज? अबका.......आसरा।
धइले बगुला के ध्यान, कइले प्राप्त सब ज्ञान,
सुनऽ'जेन्टिलमैन' के बेयान, अबका.......आसरा।
रहे 'डिपटी' के आस, पिता बाड़े हो उदास,
कब बुझी मोर पिआस, अबका...........आसरा।
पड़ल बेंगवन के कान, तुरे लगले आपन तान,
कहाँ गइले तोहर शान, अबका...........आसरा।
भइल आपन सरकार, कोई रही ना बेकार,
मिली, सबके रोजगार, हमनी इहे आसरा।
होई पढ़गित में सुधार, तब जानऽ उपकार,
कोई लिही ना उधार, हमनी इहे आसरा।
गाँधी बाबा के सन्देश, बाड़े राम-राज उपदेश,
फैली कोने-कोने देश, हमनी इहे आसरा॥

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसन असो के फगुइआ हो

कइसन असो के फगुइआ हो- कइसन असो के फगुइआ!
घर-घर में बाजेला बधइआ हो- कइसन................फगुइआ।
मन ना लागे बिनु मइआ हो- कइसन.....................फगुइआ।
हरदम छुटेला रोअइआ हो - कइसन...................फगुइआ।
केहु खाला मेवा, पकवान, मिठइया,
केहु खाला रबड़ी, मलइआ हो - कइसन...............फगुइआ।
भाँग घोटाला, कहीं गाँजा मलाला,
रंग के बहेला पवनरिआ हो- कइसन.....................फगुइआ।
हँसी, ठिठोली हमरा कुछु ना सोहाला,
जरि गइले करम, कमइया हो - कइसन...................फगुइआ।
सीना अड़काके, भरि जोर लगाके,
गावेला रात-दिन गीतिआ हो - कइसन...................फगुइआ।
सब दिन के खिसिआ, बीतावे ढोल-झलिआ प,
कानवा फाटेला सुनि रगिआ हो - कइसन...............फगुइआ।
राग-सोहाग हमरा कुछु ना सोहाला,
खदकेला छाती जइसे गरम अदहनिआ हो - कइसन.........फगुइआ।
मइया के पइयाँ पर मुड़िया झुकल बाटे,
मनवा भइले बउरहिआ हो - कइसन.......................फगुइआ।
कहे 'शिवनारायण' हमार दुःख पतिआई के,
तूँ ही देव लोग अब होख ना सहईआ हो - कइसन.........फगुइआ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए मोरे मेंबर भइया

खोरीआ में धवल, खरिहनिआ में धवल,
धवलऽ तूँ गाँव से जवार।। ए मोरे मेंबर भइया।।
हथवा में बोरा ले ले सगरो घूमवलऽ,
ढोवलऽतू धानवां कपार।। ए मोर...........भइया।।
धान से रुपइया ले मांगि २ धइलऽ,
भूखवा-पिआसवा बिसार।। ए मोर........भइया।।
केहु 'आँय' केहु 'टाँय' कान नाहि कइलऽ,
सबको से हाथवाँ पसार।। ए मोर.........भइया।।
दुई-चारि तोहरो में आगे२ बढ़ले,
बाकी सब रहले किनार।। ए मोर.........भइया।।
कागज छपाई लिहले, मनवा बढ़ाई लिहले,
इहां उहां कइले परचार।। ए मोर..........भइया।।
घरवा बनावे के फिकिरिआ समाई गइले,
खोजे लगले सगरो बनिहार।। ए मोर.........भइया।।
दुई-चारि जुटी के त घरवा उजारी दिहले,
छोड़ी दिहले आपन घर बार।। ए मोर........भइया।।
घरवा उठावे के त ठीकवा प काम देले,
देले बरतन हथियार।। ए मोर..............भइया।।
एही "लाइबेरिआ" के भरल किताबवा से,
ना केहु रही अब गँवार।। ए मोर..........भइया।।
आपुस के सब भेदवा हटावे खातिर,
लिखतानी हम बार-बार।। ए मोर..........भइया।।
लइका-सेआन सबके बीचवा में जाइके,
बांटऽ रोजऽ रोजऽ अखबार।। ए मोर......भइया।।
कहे 'शिवनारायण- गुरु गाँव के पछिमवा से,
पूरब बधार ललकार।। ए मोर..............भइया।।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी गीत

का अँखिया तोहर छोपाइल बा,
कि मतिया बउराइल बा ना?
का रहिया तोहार भुलाइल बा,
कि डइनी के टोना आइल बा ना?
का सतयुग के मोटरी बंधाइल बा,
कि भठजुग के डेरा पटकाइल बा ना?
का देखी, भगिया में तोहरो लिखाइल बा,
कि माया-जाल फेकाइल बा ना?
का अबहु आपन गलती बुझाइल बा,
कि लंकाकाण्ड रचाइल बा ना?
का घर के भेदिया लंकादाह रखाइल बा,
कि बोलऽ, नाम हँसाइल बा ना?
काहे बाप-दादा के नाम आजु ले आइल बा,
कि गंगा पार के लोगवा भुलाइल बा ना?
काहे तोहरा पर विपत्ति घहराइल बा,
कि तोहरो मन उबिआइल बा ना?
मतलब साधे खातिर सभे जान पर आइल बा,
कि सीधा लोग के गदरन रेताइल बा ना?
खाली नाम लूटे के धुनिया समाइल बा,
कि एने ओने बिखिआ बोआइल बा ना?
देखऽ आँख पसारि के सिअरा रंगाइल बा,
कि बगुला-भगत सुनाइल बा ना?
सांच के छोड़ि के झूठे लोग पतिआइल बा,
कि कातना धन खउराइल बा ना?
चेति जा भाई लोग, अँखिया मुँदाइल बा,
कि चुपे रह जइसे हमार चुपिया सधाइल बा ना?
कहे 'शिवनारायण' इहे हमरा बुझाइल बा,
कि अरजी हमार आगे तोहरो धराइल बा ना?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देख देश अब भइल मशान

देख देश अब भइल मशान,
फूँकि दऽ मुरदा निकसल प्रान।
अपने प्रान निकल बलु जइते,
आहि ना उड़ि के उपर जइते,
जागबि फिर जब होई बिहान
देख देश अब भइल मशान॥
रोअऽ मत हमरा बलिदान,
रात कटाइब कतही जहान।
हरदम ओठ पर रही मुसकान,
देख देश अब भइल मशान॥
दुनिया के कतना भइल भसान,
मान ना मटकल, रही गइल शान।
कतना जुग भइल घमसान!
उड़ि-उड़ि धूरि ठेकल आसमान।
देख देश अब भइल मशान॥
खोपड़ी उजरल, बांचल झोपड़ी के जान,
हमनी के देहिआ हरदम गाजरा समान।
सांच अहिंसा दुनो साथी, गाँधी बाबा परमान!
मिटल पाप भारत माता से, मरजी बा भगवान।
देख देश अब भइल मशान॥
होई प्रलय जब धरती हिलीहें, तोहरों कवन ठेकान,
उपर चढ़े के हाथ बढ़इब, गिरबऽ तूँ हू उतान।
मुरदा में तब जान जे आई, बतिया 'शिवनारायण' मान!
इहे हँसी के बदला भाई, कातना करी बेआन।
देख देश अब भइल मशान॥

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेला के बहार

(राम-सवैया)

जाड़ा के रात हेवाल रही, चाहे सनसन कतनो बेआर बही।
जंगल, झार, पहाड़ रही, चाहे डेगे२ हथियार रही।
थर थर देह उघार रही, चाहे झंझट कतनो हजार रही।
सातू, नून, आँचार रही, चाहे खाली पेट हमार रही।
संग-साथी दुई चार रही, 'बढ़ि चले के' धुनि सवार रही।
गाँव रही भा जवार रही, दूर के लोग बेशुमार रही।
बूढ़े बच्चा से जवान रही, पीलवान कहीं, कोचवान रही।
पान कहीं, पकवान कहीं, सगरी हज-हज सुनसान नही।
पुस्तक के भंडार कहीं, शृङ्गार कहीं घर बार कहीं।
पैंजनी के झनकार कहीं, अवरु साधुन के जयकार कहीं।
शिछा के परचार कहीं, अवरु खेले-कूदे के गुलजार कहीं।
भिखमंगन के कतार कहीं, सारंगी, ढोल, सितार कहीं।
राग क़हीं, तऽविराग कहीं, काताना लोग के सौभाग कहीं।
झर झर झरना पुकार कहीं, धड़ धड़ गोली शिकार कहीं।
मोर, सुग्गा भरमार कहीं, हाथी, घोड़ा दरबार कहीं।
रुपया के ठनकार कहीं, अवरु काना-फूँसी जानकार कहीं।
मेला के उमंग अपार कहीं, सुनि के मन में चुप कौन रहीं।
गंगा के पावन धार कहीं, असनान से भागत पाप कहीं।
काताना के हाहाकर कहीं, अवरु काताना के ललकार कहीं।
'शिवनारायण' गाई कहे, इहे मेला के बाटे बहार सही॥

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain: Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोतीआ

तोहरा दुअरिआ प गोतीआ कहाईला।
आपन खूनवा के नातावा लगाईला।। तोहरा.........कहाईला
बजर परे तोहरा प रोज गोहराईला।
मुँहवा प दांतवा चिहारि बतिआईला।। तोहरा.........कहाईला
तोहरो बड़ाई सुनि हम जरी जाईला।
बात के बात में गोली से उड़ाईला।। तोहरा.........कहाईला
रात दिन कुटकी में चुटकी बजाईला।
तोहरो करेज फाटे सीना अड़काईला।। तोहरा.........कहाईला
आंगना बधाई सुनि कोना में लुकाईला
अन्न-जल छोड़ि के सूखले ठनठनाईला।। तोहरा.........कहाईला
झउरा लगावे खातिर सरपट लगाईला।
खउरा फेरावे खातिर सरबस हराईला।। तोहरा.........कहाईला
देखिला कि कब तक मूड़िया गड़ाईला।
कब तक मूसर ढोल पीटवाईला।। तोहरा.........कहाईला
काहे के गोतीआ के हाल सुनाईला।
अइसन गोतीआवा के चटनी बनाईला।। तोहरा.........कहाईला
कहे 'शिवनारायण' हम खूब पछताईला।
हमनी के चटनी खटाई में मिलाईला।। तोहरा.........कहाईला

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरा गुरुजी के बतियासोहईले ना

दुई कवर खइले कि चारी कवर खइले,
अघइले ना, हमरा गुरु जी के बतिआ सोहईले ना।
एक घोट पीअले कि दुई घोट पीअले,
ठंढईले ना, हमरा...................ना।
हुलू २ कइले कि दुलुकी लगवले,
सुहुतईले ना, हमरा.................ना।
जेठ दुपहरिआ बहेला खरवईआ
कि चली भइले ना, हमरा..........ना।
लहरल भुंभुरिआ में भारन दिअईले,
कि एड़िआ भुँजईले ना, हमरा........ना।
हऽ-हऽ-हऽ-हऽ पनिआ शोर सुनईले,
कि कमर कसईले ना, हमरा..........ना।
माघ पुस के जाड़वा अंगुरी कठुईले,
कि चदर सिअईले ना, हमरा...........ना।
चारो ओर देखऽ सब घुकुड़ी लगवले,
हमार गोड़वा खिअईले ना, हमरा......ना।
चलतऽ २ खूब सरपट लगवले,
कि एड़ी से कपार गरमईले ना, हमरा......ना।
चिहुंकि-चिहुंकि जब मुड़िआ घूमवले,
कि सुरुज लुकईले ना, हमरा...........ना।
करे फर २ शरीरवा सगरे लरूअईले,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना मालिक के भहुँआ भुलईले ना, हमरा..... ना।

एको महीना बीते ना पवले कि

खरचा के फिकिर समईले ना, हमरा........ ना।

कईसन विधाता भाग बनवले,

कि उलटे पहिया घूमवले ना, हमरा......... ना।

कतना बरीस राजा चरखा चलवले,

कि लईकन के सुधिया भुलईले ना, हमरा....... ना।

सुख निंदिआ कबहु ना जनले,

कि आपन रहिआ भुलईले ना, हमरा....... ना।

'शिवनारायण' खुब समझवले,

कि गीतिआ सुनवले ना, हमरा.......... ना।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीरो-तड़ारी थाना पुस्तकालय संघ का वार्षिक संक्षिप्त कार्य-विवरण (भोजुपरी कविता के रूप में दिनांक 17.12.55 को कविवर रामदयाल पाण्डेय के सामने)

पीरो-तड़ारी थाना एक में मिलल रहे,
जइसे भारत मइआ अखण्ड मोरे भाइयों।
भइल बटवारा हिन्दुस्तान-पाकिस्तान जब,
अलगे अलगे फरिआई मोरे भाइयों।
बारह अप्रिल सन् बावन शनिवार रहे,
संघ-राज दिहली जमाई मोरे भाइयों।
पीरो-तड़ारी थाना दूनो के मिलाई कर,
पुस्तकालय-संघ नामवा रखाई मोरे भाइयों।
जनम पुस्तकालय संघ पीअरो-तड़ारी थाना,
सोहर के गीतवा सुनाई मोरे भाइयों।
मंत्री सुरेश भाई रामदेव सभापति,
भारवा के लिहले उठाई मोरे भाइयों।
छोट भाई राजेश्वरी वो बड़ भाई विश्वेषनन्द?
बड़कन के कान्हवा लगाई मोरे भाइयों।
संघ के खजाना बड़ भारी सब जान ताड़े।
शरमा बालेश्वर के दीवाई मोरे भाइयों।
चार महीनवा ना सोबहित बीते पावे,
बालक गईले चिकनाई मोरे भाइयों।
तीरपन साल त जम्हाईओ ना लिहले से
बालक गईले मुरछाई मोरे भाइयों।
सांसवा के आसवा लागल रहे सबके से,
"चौअन सजीवन चली आई मोरे भाइयों।
पनरह अगस्त के भइल ललकार सब,
ओर डंका गरज गरज सुनाई मोरे भाइयों।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अठाइस अगस्त शनिवार हुनमान बीर,
मुरछा के दिहले छुड़ाई मोरे भाइयों।
थाना-पुस्तकालय संघ खेलत कुदत धावे,
कलपत छतिआ जुड़ाई मोरे भाइयों।
मंत्री शिवनारायण भइले, छोटे भाई साथ अइले,
सम्मेलन के बादरि मेड़राई मोरे भाइयों।
जेठ दुपहरिआ के थाकल पिआसल रही,
'जेठवार' पोखरा दिखाई मोरे भाइयों।
पोखरा के पनिआ के नाम प पिआस दबे
जल सब गइले सुखाई मोरे भाइयों।
दउड़त-दउड़त पींड़री चढ़त रहे,
ओठवा लागल कुम्हिलाई मोरे भाइयों।
'मकुनपुर मठिआ' के महिमा आपर बाटे,
सब पुस्तकालय-जीव अघाई मोरे भाइयों।
सब भाई मिल आज करि सिद्ध सब काज,
'उठि-गिरी एक साथ' मनाई मोरे भाइयों।
कहे 'शिवनारायण' सभापति जी के करि मान,
भूल चूक सब बिसराई मोरे भाइयों।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिना सिरसक के

आज हम रोवतानी, आज हम गावतानी,
आज कुछ कहीं, आज अरज सुनावतानी।
आज सब देवता के खूब गोहरावतानी,
आज हाथ गोड़ पीटि खूब पछतावतानी।
दुनियाँ के हाल देखि चुपिआ लगावतानी,
कहे के हिम्मत नइखे बतिआ छिपावतानी।
निमन-निमन बतिआ के डंटा से भगावतानी,
गइल-गइल कामवा के नेवता फिरावतानी।
आज आपना नामवा पर दगिआ लगावतानी,
आज आपना भगिआ के रहिआ भुलावतानी।
अमरित के छोड़ि-छोड़ि बिखिआ बोआवतानी।
आज के कइलका प आँख ना गड़ावतानी।
आज आपना कामवां के बोझा लादवावतानी,
गरीबवन के ढोवे खातिर खूबहीं सतावतानी।
आज के सपनवा में भोर बिसरावतानी,
एक छन के सुखवा में जिनगी बितावतानी।
चमकत सरग के सीढ़िआ भुलावतानी।
महँकत रहिआ प ढेगवा बढ़ावतानी।
दूखिया के दुःख देखि चुटुकी बजावतानी,
साखी भगवान बाड़े, हालत सुनावतानी।
कहाँ ले बेयान करी, कलम चलावतानी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झोंक जब आवे, कुछ भाव के भुलावतानी।
बिगड़त दुनिया के हालत बतावतानी।
जहर के घोंट घोटि-घोटि कहे बितावतानी।
बूढ़ा से जवान, बच्चा जहाँ ले कहावतानी,
हालत समान बाटे गोड़ बिछलावतानी,
कहे 'शिवनारायण' सोचऽ, कबऽ से चेतावतानी,
खोलऽ आँख देखऽ, तोहार निंदिया भगावतानी।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहरे बनावल हम हईं भगवान

तोहरे बनावल हम हईं भगवान,
काहें भइल फरक धरती-आसमान?
समझ न आवे, थाकि गइले गेआन,
भटकल राही, चारो ओर सुनसान।। तोहरे........भगवान।
तोहरा के खोजे खातिर भइली हारान,
हर घरी, हरी छन धइली धेआन।
पढ़ी गइली शास्त्र सब वेद वो पुरान,
पूजा, पाठ, जप, जोग, करी कहाँ ले बेआन।। तोहरे....भगवान।
मथुरा, प्रयाग, काशी, बगसर समान,
सेतु बाँध रामेसवर बाटे परमान।
बद्री, केदार सब जानता जहान,
द्वारिका, अजोधेआ तीरथ असमान।।। तोहरे........भगवान।
घूमि घूमि गंगा मइआ कइली असनान,
चुरूआ चुरूआ जल कइली हम पान।
मिलल न सपनों में एको वरदान,
काहे के शरीर बीच बाटे-अरमान।। ।। तोहरे............भगवान।
सूखल शरीरवा में बाचे खाली मान,
तबहूँ ना छूट ताड़े तनिको गुमान।
भूलि गइली मालिक के सब पहचान,
देखिला कि कब तक होखेला बिहान।। ।। तोहरे........भगवान।
कलजुग अन्हरिआ भइल भकसान,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथ-गोड़ तानी के सुतल बा जवान।
कपरा प लादल बाटे पाप सिरहान,
लात मारे राम-नाम मनि ओरचान।। तोहरे................भगवान।
अबकी गिरल बानी, शरण में आन,
जब हई आपन तऽ राखऽ हमार जान।
रहऽ मतऽ हमरा से जइसे अनजान,
कहे 'शिवनारायण' हमरा अरज के मान।।
तोहरो बनावल हम हई भगवान।।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पन्द्रह अगस्त आइल बा

पन्द्रह अगस्त आइल बा-पन्द्रह अगस्त आइल बा॥
पन्द्रह............................... बा॥
गेरुआ-सफेद-हरीअर रंग के झंडा फहराइल बा॥
पन्द्रह............................... बा॥
पहीले चरखा झंडा बीचे, मतलब एकर बुझाइल बा।
पन्द्रह............................... बा॥
सूत काताइल, राज लिआइल, काताना के भरम भुलाईल बा॥
पन्द्रह............................... बा॥
गोली के परवाह ना कइले, हँसते हँसते डामिल गइले,
झंडा के शान रखाइल बा॥ पन्द्रह................ बा॥
अपना खून के पानी कइले, देखल सपना पूरा भइले।
कतना के माँग धोआइल बा॥ पन्द्रह.............. बा॥
कतही मइआ, कतही भइआ, कतहीं दइआ के सुधि
बिसराइल बा॥ पन्द्रह...................... बा॥
आइल बाबा गाँधी के अरजिआ, वीर जवाहर के गरजिआ,
राजेन्दर भइआ मुसुकाइल बा॥ पन्द्रह............ बा॥
भारत मइआ के सोहाग, गरीबवन भाई लोग के भाग,
देखऽ कइसन जगमगाइल बा॥ पन्द्रह............ बा॥
भारत में सुराज, पन्द्रह अगस्त आज,
दुश्मन काहें मुरछाइल बा॥ पन्द्रह................ बा॥
गाँधी के रगरिआ, वीर जवाहर के झगरिआ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजेन्द्र भइआ सधुआइल बा।। पन्द्रह............. बा।।

रहले गाँधी जी किनार, वीर जवाहर के ललकार,

भइआ! कहाँ ले सुनाइल बा।। पन्द्रह............ बा।।

बाबा गाँधी जी सिधार, हाथे नाथू हतेआर,

अगिआ अबहीं ना बुताइल बा।। पन्द्रह.......... बा।।

मानऽ बाबा के कहानवा, ठीक करीलऽ रहानवां,

इहे हमरा तऽ बुझाइल बा।। पन्द्रह.............. बा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी गीत

(1)

का हम लिखी दादा, कुछ ना बुझाता।
दुनियां के हाल देखि माथ चकराता।।
का..............बुझाता।।
चुपी कइसे साधी चुपो रहलो ना जाता।
मनवा के घाव हमरा खूब ककुलाता।।
का..............बुझाता।।
आग में समुन्दर लागे, पानी जरल जाता।
मछरी आकाशे उड़े, चिरईं धराता।।
का..............बुझाता।।
चोरी, घूसखोरी, सीनाजोरी देखाता।
चार सौ बीसवा के, नामवा जपाता।।
का..............बुझाता।।
खेत खाता गदहा तऽ, जोलहा पीटाता।
के हतेआरऽ रहे, जेलऽ के ठुसाता।।
का..............बुझाता।।
धरमी ठोकर खाए, कुकरमी पूछाता।
जेकर धन से बन २ रोवे, फकिरवा ठोकि २ खाता। ।।
का..............बुझाता।।
जेकर माई पुड़ी पकावे, लइका भूखे मरल जाता।
हाड़ ठेठा के काम करेके, मक्खन केकरा ठुसाता।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का................बुझाता।।
सूत बिने से गुदरी गांथे, रेशमी केकारा सिआता।
चाम पकावे, खून सूखावे, बेबाई चरचराता।।
का................बुझाता।।
एम. ए. बी. ए. दु चार कमावे, अनपढ़ भाग विधाता।
कहे शिवनारायण' इहे भठजुग कहाता।।
का................बुझाता।।

(2)

बहुत दिन से आसरा लगल रहे
आसरा प पनिया फेरवलु काहें हो?
होत झुलफुलाहावा से घरवा आंगानवा से,
रहिया प ढुलुकी चलवलु काहें हो?
सगरो आकाशावा में करीआ बदरिया से,
खोरिआ के हापसा धँगवलु काहें हो?
झम २ बरखा में छाता के ना बाहावा से,
लपकि-लपकि धउरवलु काहें हो?
बासी मुँहे अन-जल कुछ ना ठेकानावा से,
'कसहुं ना छूटे' हदसवलु काहें हो?
घुचघुच अन्हरिआ में बिजली चमकवा से,
ठानका के फिकिर छोड़वलु काहें हो?
होत गधबेरिआ में कवन बा ठेकानवा से,
रहिआ अगोरि बइठवलु काहें हो?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तहरो धमकिआ के भइले भनकिआ से,
झमकि-झमकि सुसतइलु काहें हो?
खात अवरु पीअत बीत गइले पहरिआ से,
तबहूँ ना खूब अघइलू काहें हो?
घरी दुई घरी रात रहिआ डगरिआ से,
चिरईं के पूत ना देखवलु काहें हो?
हमरो गूतल सब भइले अनेरिआ से,
धोखवा के जलिआ बिछवलु काहें हो?
अबहूँ से चेतऽ तोहार काँच बा उमिरिआ से,
हमरा के तू हूँ ललचवलु काहें हो?
दाल, भात, घीव अवरू पूड़ी तरकरिआ से,
कही के ना सतुआ खिअवलु काहें हो?
दम धरऽ दम धरऽ भईया के बहुरिआ से,
हमरा के अब बिसरवलु काहें हो?
आपन कहा के इहे माँह मंझधरिआ में,
केहू नइखे खाड़, अटकवलु काहें हो?
राख लाज, छोड़ऽना पुरनकी चदरिआ से,
'एसप्रेस' के नामवा सुनवलु काहें हो?
राखिलऽ सुहाग के पिअरकी चुनरिआ से,
हमनी प रंग खूब जमउलु काहें हो?
कहे 'शिव नारायण' बाप-दादा के डगरिआ से,
फेरि-फेरि सखी! बहकवलु काहें हो?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा आज हम जपबी तोहार माला

बाबा आज हम जपबी तोहार माला।। बाबा................ माला।।
मोह धारावा में डूबत बानी, खेह एको ना उतराला।
पाप के पानी पेट फूलल बा, कूला फेंकल ना जाला।।
बाबा................ माला।।
अंगुरी पकड़ि के जान बचाई, आजुए से नाहिं त नाम बोताला।।
बाबा................ माला।।
राउर महिमा अगम, अपार हऽ, सबके मुँहे सुनाला।।
बाबा................ माला।।
कलजुग के भगवान कहे में, तनिको ना मनवा सकुचाला।
मनवा के रामजी के घरवा बनवली, हो गइलीं मतवाला।।
बाबा................ माला।।
हाड़-चाम सब देहिआ सुखाइल, तबहूँ तऽ होठ मुसकाला।
बाबा................ माला।।
हिन्दू धरम के गाछ मुरझाइल, चटक फूलवा फुलाला।।
बाबा................ माला।।
रामजी के मरजी सुबुद्धि समाइल, भारत के नामवा रखाला।
उजड़ल मड़ईआ के फिर से बसवली, जबहीं रामायण छपाला।
बाबा................ माला।।
कहाँ ले बखान करीं राउर महिमा के, घरे घरे राम रटाला।
साधू कहीं, कि भगवान कहीं, हमरा ना कुछुओ बुझाला।।
बाबा................ माला।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिगड़ल रहनिआँ के देखि देखि, जिउवा बड़ा घबड़ाला।
रोग के फंदवा से घिरल बानी, मनवा बहुत उबिआला।।
बाबा................. माला।।
आपन भभुतिआ के चुटुकी से फेंकी, कि भसम होखे इन्द्रजाला।
इहे अरज बाड़े बाबा मोरे तुलसी, 'शिवनारायण' दास कहाला।
बाबा................. माला।।

●

सावन सतमी अंजोरिया

आजु सावन सतमी अंजोरिआ ले आइल,
आजुए से तुलसी के अँखिया मुँदाइल।
(शेष भाग अप्राप्य)

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हई देखीं बनिहरवा आइल

हई देखीं बनिहरवा आइल, चेहरा बा एकर गरमाइल।
खाली पेट बारह बजल बा, धूरिधाकर से देह भरल बा।
एकरा पीठ में पेट समाइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
हंसत करत बा, करत हंसत बा, कइसन फिकिर?
कबहूँ ना देखीं सुस्ताइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
धह-धह घाम कि कन-कन जाड़ा।
हर-हर बरखा तबहूँ खाड़ा।
कबहीं ना तनिको सकुताइल।।
हई देखीं बनिहरवा आइल।
दिन रात ई हाड़ ठेठावे, चमकल भाग कि भर पेट खावे।
फटही धोती, फटही चादर, ओही पर दिन रात कटावे।
दोसर रोवे ई का कमाइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
लइका-फइका से घर भरल बा।।
खाए पेन्हें के भूख मरल बा।।
उनके से हमरो करम लिखाइल।।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
टूटल मड़ई, टूटल खटिया, पहिले से धइले बाडे अँटिया।
अबहीं ना एको कोना छावाइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
खँड़हर घर में भूस भरल बा।
ऊपर नीचे बीअर भरल बा
भाग के ऊपर सभे परल।
इहां रहबि कि उहाँ रहबि हम।
हमरा त दूनो एके बुझाइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होई फेरू बिहानवा ना

अइसन देखली ना कबहूं सपानावा, कि होई
फेरू बिहानावा ना।
कवन रहे अइसन पूरूब के चुकानावा,
कि भइल भुभुतानावा ना।
सुनि के रोंआ गनगनाता, कुछ लिखलो ना जाता,
करे काम अब एको ना सोचानवा।
कि होई..........बिहानावा ना।
रहन निमनर लोग, ठाट-बाट अवरू भोग,
साथे बचा-बच्ची अवरू जनानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
कइसन आइल झकोर, देलस देश झकझोर,
लुटि गइल इहांवा काताना रतानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
रति भर के दुःख, देत रहन जब कूख,
गिरल उनको पर विपत्ति घमसानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
जेकर दुनियां लुटाईल, जेकर नामावा बोताईल,
कुछ कइलो जात बाटे ना बेआनवा।
कि होई..........बिहानावा ना।
काताना सेनुर धोआईल, काताना आबाला घिनाईल,
जेकरा भागि गईले गोदी से ललानवां।
कि होई..........बिहानावा ना।
लोर निकले ना पावल, अगिआ सूखले में लागल,
कइसन फर फर करत होईहें जानावां।
कि होई..........बिहानावा ना।
रहे दूर के निशाना, पड़ल होई हें मस्ताना,
'सोचले सपनो ना लागी गरहनानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
रहे बीर असथान, बनी गईले मशान,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोर टँगल बाटे बीचहीं नयनवाँ।
कि होई..........बिहानावा ना।
गिरल अजलेम भारी, रोवे सब नर नारी,
रहे कहिआ के गूतल दुर्घटानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
आरे जिला परधान, डुमरॉव टेशन महान,
मिटी कइसे ई करीआ निशानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
रहे एकईस जुलाई, शनिवार बासठ भाई,
मेल पंजाब आवे, आंधी के समानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
ढुका लागल हतेआर, खड़े रहिआ निहार,
भिड़े खातिर मालगाड़ी, कइली छतिआ उतानवा।
कि होई..........बिहानावा ना।
ईंजिन-ईंजिन टकराईल, काताना डब्बा भहराइल
चकनाचूर जईसे 'मिल' के पीसानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
काताना मुड़िआ काटाइल, अंग-अंग से फेंकाईल,
पूंका फारहूं ना पवले परानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
लासा अइसन मिसाईल, खून से धरती रंगाईल,
परल हचकाल, सूने असथानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
कईल उल्ह-माल्ह घाही, केहु लउकेला नाही,
'पानी-पानी' केहु सुने ना रटानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
काताना पीटे हाथ-गोड़, छूटल काताना के जोड़,
धुक-धुक चले काताना के जानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
धाई कमल सिंह अइलन, जादू अइसन काम कईलन
चूकले आपाना से, एको ना जातानावा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि होई..........बिहानावा ना।
आपना हाथे से उठवलन, कोरा टांगि बइठवलन,
भाई, होई गइलन उहो हनुमानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
पड़ल सरकार के कान, गिरल रात में तूफान,
धउरल पटना से पलटन कमानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
थाना-पुलिस अफसर, कचहरी आरा के शहर,
मेला झूठ होई गईले, खातिर करे दरशानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
काताना लाश उपर आइल, रहे उहो बिधुनाईल,
पता चले नाहीं उनकर ठेकानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
गंगाधार में फेंकाइल, काताना रहले जांताईल,
उठावे खातिर आइल बाटे देख ना किरानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
रातो-राते घाही भाई, असपताल पहुंचाई,
खबर भइल बाटे, उनको मकानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
बिजली छतिआ पर गिरल, सुनि उलटे गोड़ फिरल,
चुवे टप टप काताना पसीनवा
कि होई..........बिहानावा ना।
भईल गिरफ्तारी जारी, रेलवे के कर्मचारी,
भागे लेई कर काताना बदानावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
बाटे आपन सरकार, देलस जाँच के पसार,
खोजे खातिर असली करानामावा।
कि होई..........बिहानावा ना।
'शिवनारायण' कहे भाई, कुछो समझो ना आई
सूना होई गइले काताना भवानावा
कि होई..........बिहानावा ना।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धांजलि खण्ड

(काव्यांजलि एवं भावांजलि)

ग्रामवाणी पत्रिका 16 मई, 1963 से साभार

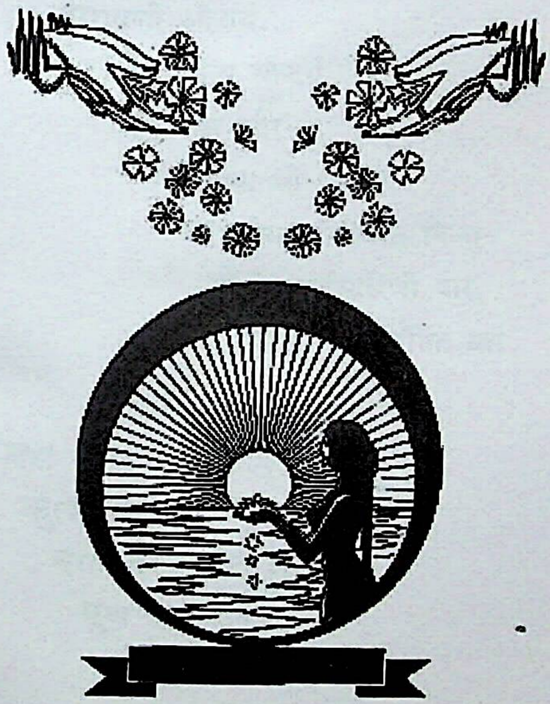

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्यांजलि

कवि मकुन्दपुरी
(श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह, एम.ए.)

(1)

शिव! सौम्य,
वदन की कान्ति,
नारायणी औदार्य,
राकेशी शैत्य सौन्दर्य,
यम त्रास और-
न तनिक भी भ्रान्ति
पांडवीय परिस्थिति किन्तु-
डेली कार्यसारिणी पार,
यमुना की तरंगित धार

(2)

मन! का तारा टूटा,
कुलीन कवि का साथ छूटा,
नरता का वरदान लुटा,
पुष्प पराग पतन,
रीकामिनी का त्याग गहन!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(3)

काव्य महिमा राशि
कवि, क्रान्तिकारी रव?
त्याग तटिनी बीच खेना,
रोना-धोना, जग जाल सारा
टूटा नियति का ही खेल हाय!
खोजता हूँ भोजपुरी के प्राण
आज स्मृति अवशिष्ट हे पाण्डेय!

(4)

कवे! महामहिम
कर्त्तव्य के सयाने भक्त;
अबोध बाल तीन अशक्त,
कर सहगामिनी परित्यक्त;
'गुरुजी की विदाई'-
में वाणी का अवसान।
कीर्ति धवल कुन्द।
सत्यता तत्परता हित
जीवन से खिलवाड़,
कर्त्तव्य वेदी पर
परम पावन निष्पाप,
अडिग अचंचल आपु
चिर विनत तव दास,
गुरु पदाति श्रद्धा-
के सुहाने फूल,
अनुग्रह की पुनः
चिर कामना भारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुकुन्दपुरी जी की स्मृति में

(श्री माधवप्रसाद मिश्र साहित्यायुर्वेदाचार्य)

है बढ़ रही हृत् बेकली; हा!
गात्र कम्पित हो रहा।
कर याद अगणित गुण गुणों की,
अश्रु आनन धो रहा॥
थे शान्त सुहृद्, विज्ञ शिक्षक,
सादगी के रूप थे।
कृश-काय थे पर धीर कर्मठ,
निज हृदय के भूप थे॥
ऋषि तुल्य त्यागी सत्य रक्षक,
पूर्ण ईश्वर भक्त थे।
भोजपुरी-कविता कामिनी के
कान्तिवर्द्धक तत्त्व थे॥
निज तीन मुन्नों के सहारा
मार्गदर्शक दीप थे।
उन मोतियों के अङ्ग रक्षक
शक्ति-वर्द्धक सीप थे॥
जर्जर पिता की अन्धयष्टि,
भक्त सेवक पुत्र थे॥
सद्भाव से परिपूर्ण श्रद्धा -
साधना के सूत्र थे।
वैधव्य के संताप से हा!
विकल हो अति खिन्न जो।
लुट गया जल दुर्ग जिसका, उस-
मीन सा अति दीन जो।
उस प्रेयसी के भाल बिन्दु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाग्य के आधार थे।
निज वैरियों के नाशकर्त्ता,
सीत असि की धार थे।
काल-सर्पिणी मौत पापिनी,
हाय! तूने क्या किया?
आयी न सुषमा लूटने में
तनिक भी तुम को दया?
दें दीनबन्धु शान्ति-शाश्वत,
दिव्य आत्मा को वहाँ
निज दीप्ति में ही लीन कर लें,
इस दीप्ति को भी वे वहाँ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लउके अन्हार रे

चारो ओर तकला पर लउके अन्हार रे,
छछनेला आज भोजपुरिया बेजार रे।
फाटेला दरार आज कलेजवा के पार रे॥
गुरुजी के मरला पर मचल हहकार रे।
चारो ओर तकला पर लउके अन्हार रे॥

दुलुम भइल आज गीत के बहार रे,
विथकल सपनवा हा! प्राण के आधार रे।
रुसी गईले आजु सिरजन के हतेयार रे॥
छीनीं लेले हमनी से जिला के सिंगार रे।
चारो ओर तकला पर लउके अन्हार रे॥

डहुरे करेजावा, नजरिआ बरिसाई रे।
धधकल कहिआ के अगिआ बुताईल रे।
आजुवे से गुरुजी के अँखिया मुदाईल रे।
चारो ओर देखला पर मुड़िये गड़ाइल रे॥
कलपे जवार "दीपक" बेकल बेहाल रे।
चारो ओ तकला पर लउके अन्हार रे।

– श्री रामजी पान्डेय 'दीपक',
पीरो, शाहाबाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक समवेदना

प्रात स्मरणीय गुरुदेव के प्रति

उठ गया वह दीप्ति द्योतक, मार्ग निर्देशक हमारा
डूब गया वह हाय! पूजनीय अर्चनीय सितारा!
देकर क्षणिक सन्तोष हमको सो गया चिर नींद में।
फैला चतुर्दिक सागर शोक हाय! बालक वृन्द में।।
होता विनाश नहीं कभी! जो होनहारी है अहो।
मिलती इसी से प्रेरणा, जो प्रेरणा ही राह हो।।
उठती अनेकों भावनाएँ हैं हृदय के मध्य में।
किन्तु, फिर वे शान्त होती ठौर ही की ठौर में।।
बढ़ न पाता है हृदय, साहस कभी करता न मन।
भाव ऐसे उठ रहे जिसमें न हो सुख का चमन।
नौका हुई न पार, गये वे हमें छोड़ मजधार।
पार करे अब कौन यह विस्तृत जलधि अपार?

– जयराम सिंह, 10वाँ (विज्ञान), पीरो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुकुन्दपुरी जी

थे मुकुन्द पुर के रहनेवाले,
सादा जीवन बीतानेवाले,
कोमल हृदय रखने वाले
था नाम मुकुन्दपुरी जी।

सत्य न्याय दो धर्म उनका था,
शिक्षण कला उनका विचित्र था,
था विचित्र उनका व्यवहार,
क्या वर्णन करुँ मैं यार।

– शिवजी तिवारी,
एकादश विज्ञान, उ॰वि॰ पीरो

●

अश्रु-लड़ियाँ

हे कवित्व के पार्थ! तुम्हारी याद आती।

रो रहा उपवन सघन वन
रो रहा स्कूल का कण-कण
तिमिर करता झन झनन झन
आह भरता है सजल मन

स्मृतियाँ, गुरुवर! मुझे अश्रुलड़ियों में बहातीं।
हे कवित्व के पार्थ! तुम्हारी याद आती।

– राजेन्द्र मिश्र
नवम् वर्ग (विज्ञान) उ॰वि॰, पीरो

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुजी के देहावसान पर

नयन तुमको खोज रहे हैं,
न आलोक न वातायन
हे देव बाता दो कहाँ गए?
कहाँ वसंत कहाँ सावन?

हा! महापंक में धँस गया पग
सुदूर देखता विस्मित आनन।
गुरु- मंत्र मैं भूल गया हूँ,
आर्य सिखाओ तप बल पावन

किस लोक गए परलोक गए?
उजड़ रही दुनिया सारी।
विकल तड़पता जीर्ण जगत् है,
तट पर पछताता व्यापारी।

स्मरण रहे तेरा उपकार गुरुवर यही मुझे वर दो।
कमल-चरण-रज शीश लगाऊँ यश गाने का नव स्वर दो।

-लालबिहारी सिंह,
सारोपुर, नवम् वर्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे गुरुदेव

शिव समान थे कल्याणकारी,
करते थे सबका सम्मान।
वह आदर्श नहीं मिल सकता,
चाहे कोई बने महान॥
नाहक समझा आपने पापों से अर्थ कमाना,
नहीं चाहते थे, औरों की रोटी खा जाना
राह दिखाते थे औरो को
स्वयं चलकर उस पथ पर,
यह कर्तव्य निबाहा आपने
कांटों पर भी चलकर।
नहीं थी यश की इच्छा न कोई स्वार्थ था अपना,
करना देश की सेवा यही कर्तव्य था अपना॥

–सुमन्त प्रसाद,
दशम् विज्ञान, पीरो

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भावांजलि

कवि मुकुन्दपुरी और उनका परिचय

परिस्थितियाँ मनुष्य जीवन में मोड़-वैभिन्न्य की स्थिति का निर्माण करती हैं और ग्राह्य या अग्राह्य वांछित या अवांछित परिणाम भी प्रस्तुत करती हैं। मनुष्य परिस्थितियों का अनुचर होता है। वे हमें चाहे जिस किसी तरह से रखें स्वीकार्य तो चाहे अनचाहे होती ही हैं। कठिनाइयों के बीच पड़कर मनुष्य को घुल-घुल कर जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। कवि मुकुन्दपुरी का जीवन कठिनाइयों में डूबता-उतराता रहा। वे सदा तैरते रहने की अथक चेष्टा करते रहे और परिस्थितियों पर विजय पाने का उनका अथक प्रयास भी वस्तुतः कितना सफल एवं सराहनीय रहा- उनका विचित्र जीवन इस बात का प्रमाण है।

भोजपुरी के तरुण कवि श्री शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' जी का जन्म शाहाबाद जिला के पीरो थानान्तर्गत मुकुन्दपुर ग्राम में 1 फरवरी 1925 को हुआ। अपने माता-पिता के एकलौते पुत्र होने की वजह से माता-पिता का प्यार उन पर केन्द्रित हो गया। उनका बचपन आनन्द के साथ व्यतीत हुआ। बचपन में उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। मुँहमाँगी वस्तुएँ उन्हें प्राप्त होती रहीं। यही कारण है कि जीवन भर वे कठिनाइयों से खेलते हुए अपनी स्थिति से सन्तुष्ट रहे। थोड़े समय तक गाँव के विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त गाँव से एक मील दूर मलौर ग्राम स्थित प्राइमरी पाठशाला में उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। पाठशाला में वे नियमित रूप से समय पर प्रतिदिन पहुँच जाते थे और ठीक समय पर छुट्टी होने के बाद घर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लौट जाते थे। समय पर किसी काम को करना चाहिए, इस नियम का उन्होंने जीवनपर्यन्त पालन किया। उनका कोई कार्य अनियमित और असमय नहीं होता था, इस तरह की आदत बचपन में ही उन्हें लग गयी थी।

'मकुन्दपुरी' जी को बचपन से ही काव्य की ओर ललक थी। जब वे मलौर प्राइमरी पाठशाला में पढ़ रहे थे उस समय वर्ग में कभी-कभी गुरु के आदेशानुसार कवित्त गाकर सुनाया करते थे। जब कभी वर्ग में उदासीनता नजर आती थी, शिक्षकों की आज्ञा पाकर खुशी से वे कवित्त सुनाने लगते थे। बचपन में याद किए हुए कवित्तों को सुनाने के लिए वे जैसे उतावले से रहते थे। तुतलाहट भरी मीठी बोली में जब के कवित्त सुनाने लगते थे तब गाने की उनकी भाव-गंगिमा और आश्वस्तता पर विद्यार्थी और शिक्षक सभी मन्त्रमुग्ध-से हो जाते थे। कवित्त-सवैया गाने की उनकी प्रवीणता ने समूचे विद्यालय में उनको विख्यात बना दिया था। इस तरह बचपन से ही कविता की ओर वे आकृष्ट हो गए।

पढ़ने में बचपन से ही वे कुशाग्रबुद्धिसम्पन्न विद्यार्थी थे। बचपन में भी अपने वर्ग में वे हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करते थे। मलौर में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे गया जिलान्तर्गत निरंजन पुर विद्यालय में प्रविष्ट हुए। प्रवेश पाने के कुछ दिनों बाद ही वे अपने गुरुजनों के कृपा-पात्र बन गए। बुद्धि की विलक्षणता एवं आज्ञाकारिता ने उन्हें विद्यालय में प्रमुख बना दिया। ग्याहरवें वर्ग तक वे वहीं अध्ययन करते रहे। किन्तु विद्यालय में प्रमुख बनना उनके लिए अच्छा नहीं हुआ। ग्याहरवें वर्ग में पढ़ रहे थे। जाँच परीक्षा के कुछ महीने पहले विद्यालय में विद्यार्थियों की हड़ताल शुरू हुई। शिक्षकों पर इस हड़ताल का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। 'मुकुन्दपुरी' विद्यालय के एक प्रमुख विद्यार्थी होने के नाते विद्यार्थियों द्वारा की गयी हड़ताल के समर्थक थे, किंतु खुले रूप में उन्होंने अपने को हड़तालियों में नहीं आने दिया। फिर भी, शिक्षक उनसे असन्तुष्ट तो थे ही। जाँच-परीक्षा होने के बाद परीक्षा फल पर इसका असर पड़ेगा, इस भय से उन्हें इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्यालय का परित्याग करना पड़ा। स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र लेकर वे प्रथम भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के क्रांतिकारी वीर कुंवर सिंह की जन्मभूमि जगदीशपुर के उच्च विद्यालय में चले आये। दुर्भाग्य ने यहाँ भी उनका पीछा किया। सन् 1942 का प्रसिद्ध आंदोलन शुरू हो गया। इसलिए बाध्य होकर उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा।

कुछ दिनों के बाद जब आंदोलन समाप्त हो चुका था, किंतु आंदोलन का प्रभाव किसी हद तक समाप्त नहीं हो सका था, वे अपने पिता श्री बलदेव पाण्डेयजी के साथ निमेज मेला गये। मेले में बैल बेचकर वे लौट रहे थे। रास्ते में जगदीशपुर में उन्होंने प्रधानाध्यापक से परीक्षा के सम्बन्ध में मिलकर बात करना आवश्यक समझा। रास्ते में ही उनसे मुलाकात हो गयी। प्रधानाध्यापक ने उनसे पूछा- 'परीक्षा में पास हो जाओगे?'

खूब इतमीनान के साथ उन्होंने उत्तर दिया- इस बात में तनिक सन्देह नहीं कि मैंने अध्ययन नहीं किया है, किन्तु मैं आपको प्रत्यानुभूति (गारंटी) प्रदान करता हूँ कि अनुत्तीर्ण नहीं होऊँगा'' इस प्रकार उन्होंने उत्तर दिया था। आज भी उनके पिताजी (श्री बलदेव पाण्डेय) इस बात के साक्षी हैं। उनके उत्तर सुनकर प्रधानाध्यापक बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने युनिवर्सिटी की परीक्षा के लिए 'मकुन्दपुरी' जी को सेन्ट अप कर दिया। परीक्षोपरांत द्वितीय श्रेणी में उन्हें बहुत अच्छा अंक प्राप्त हुआ किन्तु प्रथम श्रेणी वे न पा सके। आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण उन्हें अध्ययन करने का अवसर नहीं मिला। सन् 1943 में पटना युनिवर्सिटी की वार्षिक परीक्षा में प्रवेशिका परीक्षा पास कर वे हरप्रसाद दास जैन कॉलेज, आरा में प्रविष्ट हुए। यहाँ चार वर्षों तक लगातार अध्ययन करते रहे।

श्री 'मकुन्दपुरी' जी की जीवनी लिखने के क्रम में मैंने उनके कई दोस्तों एवं सहपाठियों से मिलने की चेष्टा की। उनके एक मित्र श्री रामसागर शर्मा (विक्रम थानान्तर्गत बाराह, पटना निवासी) हमेशा मुझसे उनके विद्यार्थी जीवन-सम्बंधी बातें कहा करते हैं। उनका कहना है कि ''पाण्डेय जी गणित के पीछे पानी पीटकर पड़ गए थे। गणित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के प्रति उनकी दिलचस्पी देखने में आती थी। रात में जब कभी हमलोग जगते थे, वे हिसाब बनाते रहते थे। स्लेट पेन्सिल को उन्होंने अपना संगी-साथी बना लिया था। उन्हें एक पुराना कोट था जिसे वे हमेशा पहना करते थे। उसी कोट को पहने वे रात में हमेशा पेन्सिल स्लेट पर रगड़ते रहते थे। अपने विषय के प्रति उनकी लगनशीलता सराहनीय थी। हमलोग हमेशा उनसे हँसी किया करते थे। वे एक छड़ी हमेशा अपने साथ रखते थे। एक बार वे आरा से अपने घर जा रहे थे। धनौती स्टेशन से गाँव जाने के लिए उन्हें एक मील पैदल चलना पड़ता था। गाड़ी से उतरकर पैदल चले जा रहे थे। रास्ते में एक-ब-एक भूँकते हुए, एक कुत्ता काटने के लिए उनके निकट पहुँच गया। उन्होंने तपाक से कहा- 'आव मुँह में छड़ी ठेल दिहिला।' सचमुच उन्होंने ऐसा ही किया। मुँह में चोट लगने से कुत्ता काँय-काँय करता हुआ भाग गया। आरा जब वे निवास स्थान पर पहुँचे तो ठीक उसी भंगिमा (Pose) में उन्होंने सारी बातें कहीं। उनकी उस घटना से नहीं बल्कि भंगिमा (Pose) से हमलोग इतने प्रभावित हुए कि समय-समय पर अपनी संध्या की मजलिस में हमलोग उस घटना की पुनरावृत्ति कर उसी भंगिमा को प्रदर्शित करते-रहते थे। किंतु सबसे बड़ी बात उनमें यह थी कि वे कभी भी हमलोगों से चिढ़ते नहीं थे।''

उनके विद्यार्थी जीवन के एक अजीज दोस्त श्री वन्देश्वर लाल मानसागर (शाहाबाद निवासी) मेरे गुरु है। उनसे भी मैंने पूछा-ताछ की। उन्होंने कहा- सात-आठ वर्षों तक मैं उनसे भौगोलिक दृष्टि से काफी दूर रहा, इसलिए मैत्री कुछ श्लथ सी हो गयी थी। किंतु जब वे प्राचार्य हुए तब से पुनः हमारी मैत्री को एक ताजगी मिली। ऐसा दोस्त मिलना मेरे लिए असंमभव ही है। मैंने कभी उन्हें सुस्ताते हुए नहीं देखा। सदैव वे कार्य में व्यस्त रहे। अपने काम के प्रति सच्चाई और ईमानदारी उनके गुण थे। सियाडीह माध्यमिक विद्यालय में भी मेरे साथ उन्होंने काम किया था। कभी भी किसी से उन्हें मनमुटाव नहीं हुआ। उनकी शिक्षण-विधि से छात्र सदा प्रसन्न रहे।''

सन् 1945 ई० की वार्षिक परीक्षा में हरप्रसाद दास जैन कॉलेज,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरा (पटना विश्वविद्यालय) से उन्होंने आई.ए. तथा सन् 1947 में बी. ए. पास किया। बी.ए. में गणित और दर्शनशास्त्र को उन्होंने अपना ऐच्छिक विषय रखा। वे प्रसिद्ध गणितज्ञ तो थे ही, साथ ही वे दार्शनिक भी थे। कभी-कभी चिन्तन के बाद जो वे अपने विचार व्यक्त करते थे, वे बड़े सन्तुलित, व्यवस्थित, सुलझे हुए और मूल्यवान होते थे।, 1962 में कांग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित होने के पश्चात् मैं श्री मकुन्दपुरी जी के साथ लौट रहा था। साथ में श्री रामनरेश बाबू और शिवप्रसाद बाबू भी गये थे, किन्तु शिवप्रसाद बाबू लौटते समय पटने में ही हमलोगों से कहीं भटक गये! हमलोग लौटते समय गड़हनी आकर आराम कर रहे थे। ईश्वर के सम्बन्ध में तर्क छिड़ गया। वहाँ उनके ईश्वर सम्बन्धी संतुलित विचारों को सुनकर मुझे बेहद प्रसन्नता हुई और मैं बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने कहा था- ''ईश्वर अवश्य अस्तित्व रखता है; इसे कदापि हम अस्वीकार नहीं कर सकते। सब कुछ वही करता है और ब्रह्म की उपाधि से विभूषित है। हमें एक ईश्वर की ही अपेक्षित उपासना करनी चाहिए।'' कोई समझ सकता है कि उनके विचार कितने व्यवस्थित और सन्तुलित थे।

सन् 1945 में आई.ए. की परीक्षा देने के उपरान्त (परीक्षाफल) घोषित होने के पहले तक (कुछ महीने) उन्होंने सियाडीह माध्यमिक विद्यालय में अध्यापन कार्य किया। इसी वर्ष शाहाबाद के बलुआँ गांव में (जहां के दीनानाथ पाण्डेय थे) उनका विवाह श्री मोती पाण्डेय की सती साध्वी कन्या से सम्पन्न हुआ। बी.ए. परीक्षा में उत्तीर्ण होकर शीघ्र वे सरकार की फॉरेस्ट सर्विस में नियुक्त हुए और गिरिडीह में काम करने लगे। वे बड़ी सतर्कतापूर्वक और ईमानदारी के साथ काम करने लगे। किन्तु, केवल एक वर्ष तक सरकारी सेवा वे कर पाये थे कि उनके बड़े पदाधिकारी ने उनकी ईमानदारी के प्रति अविश्वास प्रकट किया। एक गाँव में कुछ कर्मचारियों ने रिश्वत लेकर कई पेड़ कटवा दिये। गाँव के लोगों ने इसका विरोध किया और उच्चाधिकारियों के पास आवेदन भेजा। 'मकुन्दपुरी' जी के विरोध में शिकायत थी कि एक आदमी ने इन्हें माँस खिलाकर प्रसन्न कर लिया और वह पेड़ काट ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। एक उच्चाधिकारी ने उनके सामने इसीलिए मुँह बिचकाया और आवेश में आकर उनसे इस सम्बन्ध में पूछा। उन्होंने इस प्रकार की शिकायत को बिलकुल अस्वीकार किया और वे काफी क्षुब्ध हुए। जाँच करने के पश्चात् उस अधिकारी को ज्ञात हुआ कि मकुन्दपुरी जी परम वैष्णव और अहिंसा के पुजारी हैं, तथा माँस को अग्राह्य खाद्य मानते हैं। जब उसे यह पता चला कि जीवन में कभी भी मांस नहीं खाया है, तब वह काफी दुःखी हुआ और उसने क्षमायाचना की। उदारहृदय मकुन्दपुरी जी ने उसे क्षमा की, किन्तु नौकरी से त्याग-पत्र तुरंत उन्होंने पेश किया। वे विचार के इतने पक्के थे कि एक बार जो निश्चय कर लेते थे, तदनुकूल करके ही दम लेते थे। उसके लाख प्रयत्न और मिन्नतें करने के बावजूद इस प्रकार की नौकरी करना उन्होंने स्वीकार नहीं किया और तुरंत घर के लिए रवाना हो गये। घर लौटने के बाद गड़हनी एवं कसाप के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में एक सहायक शिक्षक के रूप में उन्होंने सेवा की। वहाँ सहयोगियों और विद्यार्थियों में शीघ्र ही अपनी ईमानदारी, विद्वता, उदारता एवं कर्त्तव्यपरायणता से लोकप्रिय बन गये।

लगभग तेरह-चौदह वर्षों तक मुझे उनके साथ रहने का अवसर मिला। मैं सियाडीह माध्यमिक विद्यालय में पढ़ रहा था उसी समय उनका नाम सुना था, किन्तु तब मेरा कोई परिचय नहीं था। श्री मकुन्दपुरी जी अनुशासनप्रियता के सच्चे सेवक थे और वे उसकी पूजा करते थे। सियाडीह मेरे पहुँचने के पहले ही अध्यापन-कार्य कर चुके थे। अपने गाँव के एक लड़के के दुश्चरित्र के प्रति उन्होंने अपने मित्र और मेरे गुरुदेव श्री चन्देश्वर लाल जी के पास पत्र भेजा था। सबसे पहले उसी समय उनका नाम मालूम हुआ। मुझे पता चला कि "श्री शिवनारायण पाण्डेय यहाँ पहले पढ़ाते थे और खूब हिसाब जानते थे।" इससे अधिक मुझे कुछ भी मालूम न हुआ। माध्यमिक परीक्षोपरान्त उच्च विद्यालय, पीरो में, जो अपनी प्रारंभिक अवस्था में अटखेलियां कर रहा था, मेरा नामांकन हुआ।

तीन परिचय :-

सन् 1950 ई० के 2 सितम्बर की बात है। एक विचित्र घटना हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आठवें वर्ग में मैं पढ़ रहा था। मेरे वर्ग के सभी विद्यार्थी वर्ग में कुछ अस्त-व्यस्त से हो रहे थे। घंटी बजाने के बाद तनिक देर हो गयी थी और कोई शिक्षक वर्ग में नहीं आये थे। मैं एक साथी से बात कर रहा था। अचानक एक पतले किन्तु स्वस्थ शरीर का, मध्यम कद, कुछ गम्भीर मुद्रा, बंगला कुर्त्ता और धोती में सहज सज्जित, छोटी गर्दन, कतरी गई छोटी-छोटी मूँछों का एक-दो पतली रेखाओं से खचित ललाट तेजोदीप्त चेहरा धीरे से वर्ग में प्रविष्ट हुआ। अपरिचित होने की वजह से हम सभी शान्त हो गये। वही थे हमारे गुरुदेव! हमें कुछ उनके बारे में बताया नहीं गया था, इसलिए हम उन्हें जानते नहीं थे। उन्होंने हमें अपने विषय में कुछ भी बताया नहीं। केवल एक गणित का प्रश्न हल करने के लिए उन्होंने दिया। अब उनका परिचय अवशिष्ट न रहा। श्री गोपाल जी की जगह पर वे हमारे गुरु बनकर आये थे; हमलोगों ने जान लिया। हिसाब को दो लड़कों ने हल किया जिनमें मैं भी एक था। मुझसे वे काफी प्रसन्न हुए- ऐसा लगा। उनके और मेरे बीच आत्मीयता का पहला अवसर था। सफलता के वे पुजारी थे। यही कारण था कि मेरे प्रति उनकी आत्मीयता हुई।

द्वितीयतः, जब नवम वर्ग में पढ़ रहा था, हमारे वर्ग में हिन्दी की कॉपी (उत्तरपुस्तिका) उन्होंने जाँची थी। उनके पूछने पर मैंने बताया कि चालीस अंक के करीब मुझे प्राप्त होंगे। वे विस्मय में, धनौती स्टेशन पर मेरा उत्तर सुनने के बाद पड़ गये थे। वे विचित्र स्थिति में थे- मेरा कहना गलत था या उनका जाँच करना; क्योंकि मेरे कथन के दूने से भी अधिक अंक उपलब्ध था, मुझे मालूम नहीं था। पीछे मालूम होने पर मुझे स्थिति का ज्ञान हुआ। परिचय प्राप्त हुआ कि वे गणितज्ञ और साहित्यकार दोनों थे।

वर्ग के सभी विद्यार्थी शिक्षक के शिष्य होते हैं। मैं भी इसी रूप में था। मैं दसवे वर्ग में पढ़ रहा था। गणित की ओर रुचि नहीं थी, किन्तु ऐच्छिक विषय के रूप में ज्योग्रफी के अतिरिक्त उच्च और प्रारंभिक गणित को ही रखा था। विद्यालय में विज्ञान की पढ़ाई नहीं थी। प्रारंभिक गणित में हम उनके साथ थे। परीक्षा पास करनी थी। उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यापन-विधियों के साफल्य के प्रति हम आकृष्ट थे। अस्तु, गणित के विशिष्ट अध्ययनार्थ मेरे लिए उनसे विनय और याचना की गई। उनके लिए हम प्रत्यन्तशील रहे। बदले में मालूम नहीं क्यों, उनकी अस्वीकृति मिली और उनके प्रति पूज्य भाव की वृद्धि हुई। यह तीसरा परिचय था।

तदुपरान्त मैं आपसे परिचित हो गया। आरा में चार वर्षों तक अध्ययनोपरान्त मैं पटना विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। वहाँ भी उनके दर्शन कभी-कभी होते थे। वहाँ की घटनाएँ भी काफी लम्बी हैं। खैर, सन् 1961 में जब प्रशिक्षण के लिए वे अवकाशोपलब्ध थे, मैं उनकी अनुपस्थिति में ही उनका सहयोगी बना। वे मेरे गुरु बने रहे। जीवन पर्यन्त वे मुझे पढ़ाते रहे, मालूम हुआ, ऐसा इसलिए कि कभी मुझे पढ़ाने से अस्वीकार कर दिया था। यह था उसका परिणाम और आत्मीयता का निष्कलुष बंधन। सभी विद्यार्थियों के साथ उनकी इतनी ही आत्मीयता थी। इस तरह का अनुभव आज भी सब को है। वैचारिक मालिन्य का उनमें सर्वथा अभाव था, निष्कर्षतः सभी विद्यार्थी उनके पुजारी और वे सबके आराध्य से थे।

लगभग चौदह वर्षों की अवधि में किसी भी शिक्षक, विद्यार्थी या अन्य किसी व्यक्ति के साथ उनकी तनावपूर्ण स्थिति नहीं देखी गई। वैचारिक मतभेद किसी के साथ भले ही रहा हो, किंतु मनमुटाव कदापि जाहिर न हुआ। वे जीवन में सुखी थे ऐसा कहा नहीं जा सकता। उनकी इन्सानियत का उचित मूल्यांकन नहीं हो पाया। अन्यथा वे कहीं सुखी होते। अपने हृदय की बातों को मेरे समक्ष रखने में उन्हें प्रसन्नता का अनुभव होता था। इसी लिए बातचीत के क्रम में मैं जान सका कि अपनी स्थिति से वे काफी सुखी थे, किन्तु समाज के प्रति उनके हृदय में क्षोभ की तीव्र ज्वाला धधक रही थी। वे इतने उदार और दयालु थे कि हार्दिक क्षोभ की ज्वाला को समाज के सामने प्रकट न कर सके। मैं उनके निकट था, इसलिए वे मुझसे कहते थे। वे कुचल गये थे और उनका हृदय दुख के भार से पिस गया था- उन्होंने मुझसे कहा था। जीवन भर वे सौभाग्य के सपने देखते रहे और उनका हृदय उनकी टुकुर-टुकुर प्रतीक्षा करता रहा। अपनी पदोन्नति को उन्होंने अपनी सफलता माना जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाने-अनजाने सबकी दृष्टि में उनकी 'विदाई' थी! उनकी इस प्रकार की 'विदाई' को हम और हमारे कई मित्र लौटा लेना चाहते थे, किन्तु नियति को कहाँ कबूल (स्वीकार्य) था! उनकी कोई भी बात मेरे परामर्श की अपेक्षा रखती थी और मेरे कार्य उनकी अनुमति के प्रतिकूल हो नहीं सकते थे। मकसद यह कि एक के सिवाय (जिसकी चर्चा ऊपर की गयी है) सभी बातें हमारे मनोनुकूल हुईं।

सामाजिक उत्सवों में उन्हें अपेक्षित खुशी नहीं थी, इसे उन्होंने अपनी कविता के द्वारा भी प्रकट किया। सात-आठ वर्ष पहले उनकी माता का स्वर्गवास हुआ जिसका प्रभाव उनके लिए बड़ा खतरनाक हुआ। 'फगुआ' जैसे आनन्द के उत्सव को देखकर उन्हें विस्मय होता है-

"कइसन असों के फगुइआ हो"

कारण भी वे स्पष्ट करते हैं -

"मनवा ना लागे बिनु मइआ हो।"

समाज की ओर वे सुग्गे की नाईं प्रत्याशित रहे, किन्तु अन्ततोगत्वा उन्हें स्वीकार करना पड़ा तब, जब समाज ने उनकी अर्थवर्ता का उचित मूल्यांकन नही किया-

"अब का करीं आसरा।"

पुनः "कहाँ गइले तोहर शान" कहकर स्वयं अपने-आप को कोसते हुए वे नजर आते हैं। लगता है बोझिल दुख को सहते-सहते वे बर्दाश्त न कर सके, अन्यथा इस तरह की बात उनके जैसा आशावादी अपने को ही घोर निराशावादी के रूप में समाज के सामने रखने की कदापि चेष्टा न करता। "जैसे उड़ी जहाज के पंछी पुनि जहाज पै आवे" की स्थिति में गाँधीवादी श्री मकुन्दपुरी जी को पुनश्च जानबूझ कर स्वीकार करना पड़ता है-

"गाँधी बाबा के संदेश, बाड़े राम-राज उपदेश।
फैलल कोने-कोने देश, हमनी इहे आसरा।।"

कवि मकुन्दपुरी को इस दुनिया से एकदम विक्षोभ हो गया था। वे अपने समाज से दूर, जहाँ इस दुनिया की आडम्बरवाली बातें न हो, माया-जाल का बंधन न हो, वहाँ पहुँच जाने की आकांक्षा करते थे। इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनिया से वे भाग जाना चाहते थे। यह दुनिया उन्हें सुहाती नहीं थी। इसलिए दुख के भार को दूर फेंक कर अब वे चाहते थे और उनकी एक मात्र चाह थी–

आपन दुनिया अलगे बसइतीं।
जहँवा शोर–शबद ना सुनईते।।
जहँवा ओठ ना कभी मुसकईते।
आपन मड़ईया उहाँ लगइतीं।।

अपने समाज से पूर्णतः ऊबा हुआ कवि बिना झिझक इस दुनिया से भाग जाने की बात सोचता रहा। वह देहाती वातावरण में पल चुकने के कारण शहरी ठाट–बाट और जंजाल हटाकर वहाँ भी अपनी 'मड़ईया' लगाने की कामना करता है। मालूम होता है इसमें बेहद खुशी का अनुभव था। छायावाद के प्रतिनिधि कवि स्व. जयशंकर प्रसाद के स्वर में स्वर मिलाकर कवि मकुन्दपुरी ने ऐसा नहीं कहा था, बल्कि स्थिति कुछ वैसी होती हुई भी भिन्न थी। 'प्रसाद' जी ने भी कहा था–

"ले चल मुझे भुलावा देकर
मेरे नाविक! धीरे–धीरे"

अपने बोझिल दुख को 'मकुन्दपुरी' जी दूर करने के लिए छटपटाते हुए इतने व्याकुल थे कि स्वयं उसे खूब अच्छी तरह डुबा देने या बहा देने के लिए उतावले से होकर भगवान शंकर की तरह प्रलय का दृश्य उपस्थित कर देना चाहते थे।

"होत प्रलय, जुग–जुग ढ़हइतीं।
मालिक के गोड़, जा लपटइतीं।"

प्रलय के दृश्य को उपस्थित करने में वे समर्थ हुए या नहीं, किन्तु अत्यधिक उतावली के कारण अन्ततः मालिक के गोड़ में जा कर लिपट गये।

क्रांतिकारी कवि 'दिनकर' आर्त्त–जनों की पुकार सुनकर हुँकार करते हैं –

'कह दे शंकर से आज करे फिर
प्रलय नृत्य वह एक बार।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किन्तु, क्रान्ति के पुजारी कवि श्री शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' प्रलय मचा देने के लिए स्वयं प्रलयंकारी शंकर बन जाने का उत्साह रखते थे।

पहले जिन लोगों के साथ आत्मीय सम्बन्ध है, किंतु किसी कारण-वश पीछे मनमुटाव की स्थिति उत्पन्न हो जाय और वे विलगाव का व्यवहार करें, उन्हें भोजपुरी में 'गोतिया' कहते हैं। कवि 'मुकुन्दपुरी' के जीवन में ऐसे लोग आये- स्वयं उन्होंने मुझसे कई बार स्पष्टतः स्वीकार किया था। ऐसे लोगों की विशिष्टता, कविता में उन्होंने स्वीकार नहीं की, परन्तु सामान्यतः उनके कार्य एवं परिभाषा को हमारे सामने रखा-

"तोहरा दुअरिया प गोतीआ कहाईला।
आपन खूनवा के नातावा लगाईला।
बजर परे तोहरा प रोज गोहराईला।
मुँहवा प दांतवा चिहारि बतिआईला।।"

अपने जीवन में 'गोतीयारू झंझट' से वे वंचित न रहे, उनके अतिशय दुख का कारण यह भी था।

एक समय की बात है कि अपने प्रमाण-पत्र को सत्यापित कराने के लिए वे एक राजपत्रित उच्चाधिकारी के पास गये। उन्होंने आनाकानी की। सीधे चले आये। दो-एक दिन बाद खूब वर्षा हो रही थी। उन्हें उस अधिकारी महोदय से भेंट हुई। अधिकारी महोदय के पास छाता नहीं था और तुरंत वहाँ से जाना था। उन्होंने 'मकुन्दपुरी' जी से कहा- "जरा मेरे साथ चलिए आपके छाते में मैं भी चलूँ, बहुत जरूरी काम है।" कविवर मकुन्दपुरी जी ने निर्भय होकर सफाई के साथ उत्तर दिया- 'मुझे भी एक जरूरी काम से कहीं जाना है।" उन्होंने पूछा- "किस काम से" मकुन्दपुरी जी ने कहा - "प्रमाण पत्र को सत्यापित कराना है।" बात समझकर वे कुछ झेंप गये और तुरंत प्रमाण-पत्र को सत्यापित कर दिया। मकुन्दपुरी जी उत्तर देने मे लजाते या सहमते नहीं थे।

मंझिआँव उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में उनकी, नियुक्ति जानकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्च विद्यालय, पीरो के शिक्षकों ने 21 दिसम्बर 62 को संध्या समय उन्हें विदाई दी। इस अवसर पर आँसू की अविरल बूँदे रोके न रुकी। मैं रो पड़ा, मेरे संगी साथी भी रो पड़े। उनके अत्मीय फफक पड़े। उन्होंने वहाँ गम्भीर भाषण किया। मैं सुनता रहा और रोता रहा। वहाँ से चलने के बाद रास्ते में वे मेरे साथ हो लिए। उन्होंने मुझसे कहा- 'रामचन्द्र! तोहर रोआई सुनके हमरो मन के दृढ़ता खतम हो गईल ह आ बुझईल ह कि कुछ बोलले ना जाई। बाकी कईसहूँ बोलीनी हँ।''

7 जनवरी 63 को विद्यार्थियों ने उन्हें विदाई दी। विदाई में विद्यार्थियों ने सैकड़ों रुपये के सामान उन्हें प्रदान किये। मानसिक रूप से नहीं चाहते हुए भी मैंने उन्हें विदाई दी। विदाई में मैंने उन्हें चन्दन और एक उपन्यास की पुस्तक समर्पित की। लोगों ने इस अवसर पर उनकी खूब प्रशंसा की और उनकी समृद्धि की कामना की। मुझसे भी बोलने के लिए कहा गया। किसी तरह मेरे मुँह से आवाज निकली-

"हे गुरु क्यों जा रहे हो, छोड़कर इस दीन को
आप अति प्रिय हैं हमारे, नीर जैसे मीन को।।''

इसके बाद मुझे धैर्य न रहा। आगे मैं कुछ भी बोल न सका। मैं रो रहा था। प्रायः सम्पूर्ण जन-समूह रो रहा था। कुछ छात्र जोर-जोर से विलख रहे थे।

तदुपरान्त पुष्प मालाओं से उनकी गर्दन भर गयी। मालाएँ निकाल दी गईं। पुनः गर्दन भर गयी। इसी तरह बार-बार होता रहा। उनके साथ हमलोग भी स्टेशन चल पड़े। रास्ते भर उन पर फूलों की वर्षा होती रही। पीरो के इतिहास में यह एक अपूर्व, महत्वपूर्ण एवं भव्य ऐतिहासिक घटना थी। जब तक गाड़ी नहीं आयी, सभी विद्यार्थी एवं शिक्षक स्टेशन पर वर्तमान रहे। जय स्वर से आकाश गूंजता रहा। गाड़ी आयी। वे अपर क्लास में सवार हुए। छात्र तबतक बारी-बारी से उनके पैरों पर गिरकर विदाई देकर आशीर्वाद लेते रहे। जब तक गाड़ी खुल नहीं गई।

मझिआँव में जाते ही सर्वत्र उनकी कीर्ति फैल गयी। उनकी कर्त्तव्यपरायणता और तत्परता तथा ईमानदारी का वहाँ के लोगों ने हार्दिक आदर किया। बीच में वे बीमार हो गये। उनके गांव पर मैं श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामकुमार बाबू के साथ उनसे मिलने गया। वे स्वस्थ होकर पीरो बाजार चले आये थे। अतः मुलाकात न हुई। 31 मार्च 1963 ई० को मैं चाँदी गया था। वहां के लड़कों से मैंने अपने पूज्य गुरुदेव का समाचार पूछा। उन्होंने उनकी गम्भीर बीमारी की स्थिति बतायी। मैं मझिआंव तुरंत चल पड़ा। वहाँ जाकर मैं स्तब्ध हो गया। गर्मी उनके शरीर में नहीं थी। वहाँ सभी लोग चिन्तित थे। थोड़ी देर के बाद डॉ० श्री रामसकल तिवारी पहुँचे। उनकी हालत सुधर गई। वे पीरो लाये गये। उन्हें मियादी बुखार लग रहा था एवं ब्रेन की बीमारी थी। शरीर क्षीण होता जा रहा था। पहले तो मालूम हुआ कि अच्छे जो जाएंगे, किन्तु अंत में हालत पतली हो गई। उन्हें ग्यारह अप्रैल को आरा जेनरल अस्पताल में ले जाया गया। कभी-कभी वे डिलीरियम की स्थिति में पहुँच जाते थे। काफी दौड़-धूप हुई। किन्तु ऐसे महान व्यक्ति को विधाता ने इस दुनिया में रहने देना अच्छा नहीं समझा। 12 अप्रैल 63 ई० को 12 बजे रात में वे प्रस्थान कर गये।

अपने पूज्य पिता, विधवा पत्नी एवं तीन अबोध बच्चों को छोड़कर वे चल बसे। उनके सबसे बड़े पुत्र श्री राजेन्द्र पाण्डेय (साढ़े सात वर्ष) दूसरे वर्ग में पढ़ते थे। दूसरे पुत्र श्री हरेन्द्र पाण्डेय साढ़े पाँच वर्ष के थे तथा श्री सुरेन्द्र पाण्डेय अभी दो वर्ष के थे।

मैं अपने परम पूज्य गुरुदेव के दर्शन के लिए छुट्टी में हमेशा उनके घर जाता था। मुझको देखकर वे प्रसन्न हो जाते थे। समय पाकर कभी-कभी उनके घर जाता हूँ, किन्तु वहाँ जाकर रो पड़ता हूँ। मुझे लगता है, वे जीवित हैं, लेकिन उनके दर्शन हो नहीं पाते। उनके परिवार की दयनीय दशा मुझे बिलखने के लिए बाध्य कर देती है। फिर भी वहाँ जाता हूँ।

समय पर और तत्परता से काम करने के लिए उन्होंने मुझे सिखाया था। अपने काम के प्रति उन्होंने आजीवन सच्चाई और ईमानदारी बरती। यही कारण है कि पीरो थाना पुस्तकालय संघ के वे प्रधान बनाये गये। अपने गाँव में भी उन्होंने एक पुस्तकालय की स्थापना की और उसके मकान को अपने हाथों मिट्टी सानकर एवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धोन्हा देकर उन्होंने बनाया। लगभग 10 वर्षों तक उसके अध्यक्ष भी रहे। सामाजिक कार्यों के प्रति उन्हें बड़ी अभिरुचि थी। उनकी वाणी बड़ी मीठी थी और वे वाणी के सिद्ध कवि थे। कविता उन्हें अपने वातावरण से मिली थी। उनके पिता भी पहले कवित्त-सवैया गाया करते थे। 'हई देखी बनिहारवा आइल' मकुन्दपुरी जी की कविता अनुभूति की यथार्थता के कारण नाम कर गई है। अपनी यथार्थता का परिचय उन्होंने दिया था-

"कबही जेकर आसरा न फरल।
जेकर अँखिया हरदम झरल।।
जेकर मन सपनों के जरल।
आही निकलि के सगरो भरल।"

उनकी सबसे अंतिम कविता "गुरु जी के विदाई" थी। उनके बारे में 'प्रसाद' जी के शब्दों में मुझे कहना चाहिए-

"वेदना मिली विदाई।"

– श्री रामचन्द्र प्रसाद सिंह,
एम.ए. डिप.-इन-एड., सी.एल.सी.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोककवि श्री शिवनारायण पांडेय 'मुकुन्दपुरी'

कविवर श्री शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' लोकभाषा के उदीयमान तरुण कवियों में विशेष गौरव के अधिकारी रहे हैं। इन्होंने एक लंबी अवधि तक पीरो उच्चांगल विद्यालय में अध्यापक का कार्य किया। जीवन के अन्तिम क्षणों में इन्हें प्राचार्य-पद की भी प्रतिष्ठा मिली। जहाँ काफी सफलतापूर्वक निर्वाह किया। पीरो उच्चांगल विद्यालय का यह सूर्य मझिआँव विद्या-मन्दिर के पश्चिम क्षितिज पर जाकर अपनी सम्पूर्ण ज्ञान-रश्मियों को समेटते हुए अस्त हो गया।

भोजपुरी कविता की ओर 'मकुन्दपुरी' का रूझान छात्र जीवन से ही रहा है। भोजपुरी भाषा की लोचपूर्ण एवं मार्मिक अभिव्यति के लिए इन्हें सुरीला कंठ भी मिला था। इनकी भोजपुरी कविताओं का एक संग्रह भी 'भोजुपरी-कविता' के नाम से प्रकाशित हो चुका है। भाव-वैविध्य की दृष्टि से इस संग्रह का भोजपुरी-साहित्य में विशिष्ट स्थान है। सामयिक आर्थिक, नैतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक आदि सभी विचारध ाराओं का इस संग्रह में अपूर्व समन्वय हुआ है।

'हई देखीं बनिहरवा आइल' शीर्षक कविता में कवि ने समाज की वास्तविकता, आर्थिक स्थिति की ओर संकेत किया है। इसमें कवि ने एक सर्वहारा मजदूर का चित्र प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। 'एकरा पीठ में पेट समाइल' पंक्ति के द्वारा कवि ने यह कहने का प्रयास किया है कि समाज का बहुलांश आर्थिक संकटों से आक्रान्त है।

समाज के नैतिक पतन की ओर संकेत करते हुए कवि ने 'गोतिया' शीर्षक कविता में आधुनिक पड़ोसियों का वास्तविक चित्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खींचा है। कवि के अनुसार आज के गोतिया विष रस भरा कनक घट जैसे' के सच्चे नमूने हैं जो प्रत्यक्ष रूप में अपने, परोक्ष रूप में पराये हो जाते हैं। इसी तथ्य की पुष्टि इन पंक्तियों में हुई है–

मुँहवा पर दाँतवा चिहारि बतिआईला।
तोहरो बड़ाई सुनि हम जरी जाईला।।

गोतिया की कलुषित भावनाओं के परिणामस्वरूप ही कवि उन्हें चटनी बनाने की बात सोचता है।

'अब तब बिगड़ल फिर से बनावे के' शीर्षक कविता में कवि एक सुधारवादी दृष्टिकोण लेकर सामने उपस्थित हुआ है। समाज एवं परिवार की यथोचित रक्षा के लिए कवि चिन्तनशील प्रतीत होता है। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए उसका हृदय व्याकुल हो उठा है। कवि का यही सुधारवादी दृष्टिकोण 'देख देश अब भइल मशान' शीर्षक कविता में अभिव्यक्त हुआ है। युद्ध की भयंकर विभीषिकाओं से देश की रक्षा करते हुए कवि लोगों के मुखमंडल पर मुस्कराहट की झलक देखने की प्रबल आकांक्षा रखता है। वह उस स्वर्णिम विहान की कल्पना करता है जिसकी विगत रात्रि में समाज के सभी प्रचलित कुविचार अंधकार के साथ विलीन हो जाते हैं।

भोजपुरी-कवि 'मकुन्दपुरी' इस पार्थिव जगत् के अतिरिक्त उस नवीन लोक की कल्पना करता है जिस लोक की कल्पना प्रसाद, निराला आदि छायावादी कवियों ने की है। कवि संसार के कोलाहल से पलायन करना चाहता है। यह ठीक है कि प्रसाद की भाँति कवि की नौका को घाट तक ले जानेवाला उसके पास कोई चतुर नाविक नहीं है, फिर भी,

जहँवा केहु कबहूँ ना जइते।
जहँवा चाँद-सुरुज ना जइते।
जहँवा शोर-शबद ना सुनइते।
जहँवा ओठ न कभी मुसकईते।
आपन मड़ईया उहाँ लगइती।

इन पंक्तियों में कवि प्रसाद की भाँति अपने विश्राम के लिए एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विजन प्रान्त की खोज करता है। कवि की यह विचारधारा छायावादी विचारधारा से प्रभावित परिलक्षित होती है।

कवि की राष्ट्रीय भावनाओं की झांकी हमें 'पन्द्रह अगस्त आइल बा' शीर्षक कविता में मिलती है। झंडे की शान, शहीदों की कुर्बानी एवं राष्ट्रीय नेताओं के महत्वपूर्ण त्याग आदि के स्पष्ट चित्र इन कविताओं में परिलक्षित होते हैं। इसी प्रकार लोक-जीवन में प्रचलित पर्व-त्योहार की महत्ता की ओर भी कवि ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। 'मेला के बहार' और 'कइसन असो के फगुईया हो' शीर्षक कविताओं में कवि ने लोकजीवन में प्रचलित त्योहारों की ओर संकेत किया है। भले ही कवि का मन 'बिनु मइआ फगुइआ' में नहीं रमता हो, किन्तु समाज के अन्य सभी व्यक्ति इस पुनीत अवसर पर रास-रंग मचाते हुए हार्दिक आनन्द का अनुभव कर रहे हैं।

स्वाभाविक सौन्दर्य की अभिव्यक्ति में कवि की कविताएँ अपनी करारी सामर्थ्य सिद्ध करती हैं। इनकी कविताओं की एकान्त संगीतात्मकता एवं शैली की चित्रात्मकता पाठकों के हृदय पर प्रभाव डालती हैं। अनुभूति की गहराई एवं भावों के संसर्ग से पाठकों का हृदय रस-मग्न हो जाता है। प्रवाहपूर्ण एवं चित्रात्मक शैली के कारण प्रत्येक स्थलों पर भावों के प्रकाश में अपूर्व निखार आ गया है।

"हई देखी बनिहरवा आइल।"

इस पंक्ति का प्रभाव निराला की 'भिक्षुक' शीर्षक कविता की प्रथम पंक्ति 'वह आता' - की अपेक्षा कम नहीं पड़ता। जिस प्रकार 'वह आता' कहकर निराला एक भिक्षुक का चित्र उपस्थित कर देते हैं उसी प्रकार लोक-कवि 'मकुन्दपुरी' भी हई देखी बनिहरवा आइल' के द्वारा एक मजदूर किसान का चित्र प्रस्तुत करने में सफल प्रतीत होते हैं। अत्यन्त प्रतिभाशाली कवि ही ऐसा स्पष्ट एवं सजीव चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम है। संगीतात्मक तत्त्वों की अधिकता के कारण कवि की प्रायः सभी कविताएँ गेय हैं। इन्हें काफी सुगमता के साथ लय में बाँध कर प्रस्तुत किया जा सकता है।

अलंकार-विधान एवं शब्द-चयन की दृष्टि से कवि की जागरूक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शक्ति का परिचय मिलता है। शब्दों के चयन में कवि ने काफी सजगता से काम लिया है। भावपूर्ण एवं चुस्त शब्दों के प्रयोग के कारण सुबोधता एवं सफलता की मुहर लग गई है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी यत्र-तत्र हुआ है।

आज भोजपुरी-साहित्याकाश का यह उदीयमान नक्षत्र सम्पूर्ण आलोक-रश्मियों को समेटे हुए अस्त हो गया। फिर भी, कवि का प्रस्तुत कविता संग्रह भोजपुरी साहित्यकारों के लिए रचनात्मक दृष्टि से प्रेरणा-स्त्रोत सिद्ध होगा, इसमें मुझे दृढ़ विश्वास है।

– श्री मधुसूदन उपाध्याय
नोनार भाया पीरो, भोजपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे दोस्त : स्वर्गीय शिवनारायण मुकुन्दपुरी

भाई श्री शिवनारायण पांडेय मुकुन्दपुरी इतनी जल्दी इस दुनिया से चल देंगे और उनके नाम के आगे मुझे स्वर्गीय का प्रयोग करना पड़ेगा, यह मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। वे मेरे कॉलेज जीवन के अन्यतम मित्रों में से एक थे।

सन् 1945 की बात है। मैं सांयस कॉलेज पटना से हरप्रसाद दास जैन कॉलेज, आरा में बी.ए. में पढ़ने के लिए आ गया और तृतीय वर्ष में नाम लिखाया। पांडेय जी भी मेरे कक्षा-सखा थे, हालाँकि उनका विषय-समूह मुझसे भिन्न था। मैंने हिन्दी और अर्थशास्त्र ले रखा था और उन्होंने गणित और दर्शनशास्त्र। केवल सहपाठी होने के कारण ही वे मेरे नजदीक नहीं आये! नजदीक आने का कारण यह था कि हम दोनों एक ही लॉज में रहते थे। नहर ऑफिस से नवादा थाने की ओर जानेवाली सड़क पर कन्हैया बाबू का एक बहुत आलीशान मकान है, जिसके हाते में यूकोलिप्टस के लम्बे-लम्बे कई पेड़ खड़े हैं। हम आठ-दस छात्रों ने इसी मकान को किराये पर लेकर एक लॉज बना लिया था। इस मकान का हमलोगों ने नाम भी बदल दिया था। देश के युवकों के हृदय सम्राट् पंडित (बाद में प्रधानमंत्री) जवाहरलाल नेहरू के नाम पर इसे 'नेहरू-भवन' की संज्ञा दे दी थी।

नेहरू-भवन के पश्चिमी खंड में मैं रहता था और पूर्वी खंड में शिवनारायण जी। बीच में दो एक कमरों का फासला था, लेकिन यह अल्प भौगौलिक फासला हमारे हृदयों के बीच कोई फासला न ला सका। पांडेयजी की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वे बहुत सीधे सादे थे। उनकी सिधाई बहुत सहज ढंग से लोगों के दिलों पर असर करती थी। वैसे तो अँग्रेजियत 'नेहरू लॉज' के किसी भी छात्र में नहीं थी और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी लोग वेश-भूषा में बहुत सादे थे, पांडेय जी तो 'सादों में भी सादे थे।' उनका रहन सहन ही केवल सादा नहीं था उनका दिल भी बहुत सादा और साफ था। उसमें कपट का लेश भी नहीं था। मुझे निष्कपट लोग बहुत अच्छे लगते हैं, सो यह स्वाभाविक ही था कि मैं पांडेय जी को बहुत चाहता था।

पांडेय जी एक किसान के बेटे थे और ईमानदारी, सादगी और निश्छलता उन्होंने अपने देहाती जीवन से विरासत के रूप में पायी थी। मैं कभी-कभी उनके भोलेपन पर मजाक भी किया करता था, पर वे कभी बुरा नहीं मानते थे। मुसकरा कर रह जाते थे। बल्कि यह कहना चाहिए कि मुसकराने के साथ ही वे चिंतन की गहराइयों में डूब जाते थे। तब उन्हें उकसा कर फिर कहता था- महाराज दार्शनिक जी किस चिंतन-लोक में विचरण कर रहे हैं? एक बार फिर वही गहरी रहस्यवादी मुसकान उनके ओठों पर थिरक उठती थी और वे अपने काम में लग जाते थे।

गाँव से जब आते थे तब घर के बने हुए पकवान चूड़ा-गुड़ प्रायः लाते थे और लॉज के लोगों को भरपूर खिलाते थे। उस 'भरपूर' में भी मेरा हिस्सा 'सबसे भरपूर' रहता था।...शाम को नेहरू-भवन की खुली हुई छत पर हमलोगों की मजलिस बैठती थी और कभी साहित्यिक वाद-विवाद तो कभी गपबाजी तो कभी कविता पाठ, तो कभी गाना बजाना क्या कुछ न कुछ चला करता था। पांडेय जी देहाती थे, ऊपरी वेशभूषा में ही नहीं, अंदर से भी। उन्होंने ग्रामगीतों की लय को अपनी आत्मा में बसा लिया था, सो वे हमलोगों के अनुरोध पर जब लोकगीत सुनाने लगते थे, तब मनोहर समा बँध जाता था। 'लामी-लामी केसिया छिटकावेली पारबती देई' या ऐसी ही गीत की कोई कड़ी थी, जो उनकी बहुत प्रिय कड़ी थी। इसे वे बहुत सुन्दर लय में गाया करते थे।

जब मैं जैन कॉलेज में प्राध्यापक होकर आया, वे मुझे अपने गाँव भी ले गये। अपने गाँव में एक पुस्तकालय था। उन्होंने मुझसे उद्घाटन कराया। वे मुझे इसके बाद भी कभी भूले नहीं। जब आरा आते मुझसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरूर भेंट करते। मैं भी जब उधर से गुजरता, पीरो हाई स्कूल में, जहाँ वे शिक्षक थे, उनसे मिलने का सुयोग अवश्य निकालता। एक दिन वे अपने भोजपुरी गीतों का एक संग्रह लेकर मेरे पास आये और बोले इसकी भूमिका आपको ही लिखनी है।

सों मैंने वह भूमिका लिख दी। पुस्तक प्रकाशित हुई और बिक भी गयी।

उनके भीतर जो साहित्यकार सोया हुआ था, वह अभी अच्छी तरह से जगा भी नहीं था कि वे सदा के लिए सो गये। उर्दू कवि के स्वर में तनिक परिवर्तन कर मैं उनसे कह सकता हूँ-

जमाना बड़े शौक से सुन रहा था।
तुम्हीं सो गये दास्तां कहते-कहते॥

उनका अंत इतनी जल्दी आएगा, यह मैंने कब सोचा था। मैंने तो यह सुना था कि वे पीरो के नजदीक ही किसी गाँव में- संभवतः मझियांव में प्रधानाध्यापक होकर चले गये हैं। पिछली बार, लगभग एक वर्ष पहले जब मैं उनसे पीरो में मिला था, उन्होंने मुझसे दर्शन शास्त्र में एम.ए. करने की अपनी इच्छा मुझसे व्यक्त की थी और मैंने उन्हें इसके लिए प्रोत्साहित किया था। वे प्रधानाध्यापक हो गये, इस समाचार से मुझे हर्ष हुआ था, लेकिन यह जरूर सोच रहा था कि नित्य स्कूल से घर लौट जाने का सुयोग उन्हें वहाँ से तो नहीं मिल पाएगा।

जिस रात वे यहाँ आकर आरा के सदर अस्पताल में भरती हुए, उसके दूसरे दिन मैं प्रातःकालीन भ्रमण से लौटकर अभी अपनी बैठक में बैठा ही था कि स्थानीय क्षत्रिय स्कूल के अध्यापक (मेरे कभी के एक छात्र) श्री प्रदीप जी ने आकर कहा कि आपके अभिन्न मित्र पांडेय जी बीमार होकर अस्पताल में पड़े हैं, चलकर जरा डाक्टरों से कह दीजिए ताकि ठीक से दवादारू हो सके।

अस्पताल के जिस वार्ड में पांडेय जी के भरती होने की सूचना मिली थी, उसमें जाकर मैंने देखा कि दाहिनी ओर एक पलंग पर एक कृशकाय बूढ़ा लेटा हुआ है। मैं आगे बढ़ा कि दूसरे किसी पंलग पर पाण्डेय जी होंगे। पर वे प्रायः सब पलंग खाली थे। लोगों ने कहा जिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पलंग को छोड़कर आप आगे बढ़ गये हैं, उसी पर तो पांडेय जी हैं। यह बूढ़ा पांडेय जी हैं, यह सुनकर मुझे विश्वास नहीं हुआ। पर सचाई को तो मानना ही पड़ता है। मैं पांडेय जी के पलंग के पास खड़ा था और सोच रहा था कि बीमारी आदमी को क्या कर देती है। दस पन्द्रह दिनों के ज्वर ने गीतों के बादशाह मेरे इस नौजवान मित्र पांडेय जी को कैसा जर्जर और कंकाल बना दिया। पांडेय जी बेहोश थे। वे किसी को पहचानते नहीं थे। सामने जमीन पर घूँघट में उनकी पत्नी थीं और शायद दो तीन बच्चे भी पड़े थे। मैं भविष्य की आशंका से काँप उठा। ईश्वर से प्रार्थना की कि वह पांडेय जी को शीघ्र अच्छा कर दें।

डाक्टर से मिलने-मिलाने में एक बज गया। उन्होंने कहा कि रात से हालत सुधरी है, आशा है अच्छे हो जाएँगे, हमलोग ईश्वर से उसकी प्रार्थना करें।

शाम को मैंने जाकर देखा। हालत बहुत सुधरी नहीं थी। उसी दिन रात को चार बजे ही मुझे एक बहुत जरूरी काम से पटना जाना था। वहाँ से काम खत्म कर तीसरे पहर ही लौट आया। आकर दौड़ता हुआ अस्पताल गया। मन आशंकाओं से भरा हुआ था। जाकर देखा- पांडेय जी का पलंग खाली है।

उनके जैसे गंभीर रोग का रोगी दस घंटे में अच्छा होकर घर चला गया होगा, इसकी तनिक भी आशा नहीं थी, इसलिए पलंग खाली होने का संकेत बहुत स्पष्ट था।

फिर भी, मैंने जी कड़ा कर अगल-बगल के एक-दो रोगियों से (जो भरती होकर शायद कल रात को आये थे) पूछा और उनके निध न का वज्र-संवाद सुना!

शिवनारायण पांडेय नामक एक आदमी मर गये! पीरो स्कूल के एक भूतपूर्व शिक्षक और मझियाँव स्कूल के प्रधानाध्यापक इस दुनिया से उठ गये। अगल-बगल की जिन्दगी में कोई फर्क नहीं पड़ा। दुनिया अपनी बँधी रफ्तार से चलती रही। उसके जीवन सागर में मामूली बुलबुले भी नहीं उठे, पर मैं सोचता हूँ कि वह दिन कब आयेगा जब ईमानदारी से अपना काम निभानेवाले एक योग्य शिक्षक के निधन पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाज के जीवन में विक्षोभ, शोक और संवेदना की लहरें उठेंगी। कब आएगा वह समय जब शिक्षक को उसका प्राप्य मिलेगा और उसको अकाल मृत्यु (जैसे पांडये जी की हुई) पर उसके परिवार के भरण-पोषण का भार समाज या सरकार लेगी।

अभी वह दिन आया नहीं है। वह अभी हमारे सपनों में है, लेकिन शिक्षकों को ही अपने कल्याण के लिए स्वयं आगे बढ़ना होगा। अपना कोई ऐसा संगठन बनाना होगा, जिसका प्रमुख ध्येय विपत्तिग्रस्त शिक्षकों या उनके परिवारों की आर्थिक सहायता करना होगा। शिक्षण संस्थाएँ मृत शिक्षकों के अभिभावितों को निःशुल्क शिक्षा देकर इस दिशा में थोड़ा ठोस अवदान कर सकती है।

आज का कठोर सत्य यह है कि समय के कठोर हाथों ने शिवनारायण पांडेय के रूप में मुझसे मेरा बहुत अजीज दोस्त छीन लिया, जिसकी याद भर अब मेरे पास बाकी रह गयी है।

– श्री प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी
हिन्दी विभाग,
हरप्रसाद दास जैन कॉलेज, आरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे अभेद पिता स्व. श्री मुकुन्दपुरी

वे हँसने के दिन थे, आज सिसकने की बारी है। कभी धोती की खूँट से खेलने का मजा था, आज गमखोरों की पाँति में बैठने का उपेक्ष्य अवसर। कभी भौतिक और मानसिक प्रसादों से बुभुक्षा को मनाना पड़ा और आज, जब मेरे पिता तुल्य मौसा- 'मुकुन्दपुरी' जी न रहे, एकान्त कोने में भरपेट रोकर जी हल्का कर लेने की भी मेरी जिजीविषा शांत नहीं हो पाती। कैसा अभागा हूँ मैं और कैसा अभागा हैं वह अंचल, जिससे ज्योतिर्मय साहित्यकार और मनस्वी, भारती-पुत्र सदा सदा के लिए विलग हो चुके हैं।

मेरे पिता और मेरे पूज्य मौसा- मुकुन्दपुरी में किनका स्थान मेरे लिए अधिक महत्व का रहा, यह विशेष रूप से विचार करने का विषय है। जहाँ तक मेरे अध्ययन-व्यवस्था का प्रश्न है, मेरे पिता का स्थान निश्चिय ही सर्वोपरि और एक छत्रप है। किन्तु मेरे मौसा- श्री मुकुन्दपुरी चूंकि स्वयं भी एक साहित्यिक पुरुष थे, अतः मेरी मनोवृत्ति को भी उन्होंने साहित्यिक मोड़ दी। जब मैं निम्न कक्षाओं का छात्र था, मेरे मौसा अपने प्रणीत गीत मुझे सुनाते और प्रोत्साहित किया करते थे। उनके ही सद्प्रयासों और उनकी ही महती कृपा से मुझमें साहित्यक प्रतिभा का समन्वय और उन्नयन हो सका। मुझे जाने या अनजाने अपने साहित्यिक जीवन के प्रति थोड़ा-बहुत मोह अवश्य है, जिसका कुल श्रेय उनका ही है। इस दृष्टि से मेरे जीवन में मेरे पूज्य मौसा श्री मुकुन्दपुरी का स्थान सर्वोपरि है। बदनसीबी से मेरी जिन्दगी से कितनी ममता और कितना प्रगाढ़ स्नेह है, जो मेरी जिन्दगी की रेत की ओर भी रेगिस्तान की रानी बनाने के फेरे में रहा करती है। सोचता हूँ, अब मेरे कौन सी प्रिय वस्तु शेष है, जब मेरे मौसा- मेरे प्रेरक, मेरे विकासक मेरे साहित्यिक गुरु और सर्वश्रेष्ठ शुभचिन्तक ही न रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मकुन्दपुरी' जी अपनी सार्थकता साहित्य-सेवाओं में मानते थे। उनके नाम की अन्विति में साहित्यिक की भरपूर साधना सन्निहित थी। उनका व्यक्तित्व दुहरा था, प्रतिभा चतुर्मुखी। 'सादा जीवन और उच्च विचार' उनका प्रायोगिक आदर्श था। जीवन के प्रयोगशाला में नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के द्वारा नव-निर्माण उनका संलक्षण था। 'स्व' के ससीम आवरण में उनका व्यक्तित्व कभी बंध न सका। उनके हृदय की विशालता और अन्तः की करुणा में कौन सबल थी, कहना कठिन है। वे व्यक्ति विशेष के होकर भी न रह सके- व्यक्तिमात्र के प्रति द्रवीभूत होना उनकी एकान्त विशिष्टता रही है। लोक-जीवन के प्रति उनका चरम आकर्षण था। कुल मिलाकर वे एक महामानव थे- संत और सत्यनामी साधक थे।

शिक्षा के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा थी। अद्यतन मानव के बीच जहाँ सरकारी नौकरियों के लिए काफी होड़ मची हुई है, वहाँ 'मुकुन्दपुरी' के लिए शैक्षणिक संस्थाओं के प्रति अथोर श्रद्धा थी। यही कारण है कि उन्होंने सुन्दर और दुर्लभ मानी जानेवाली सरकारी नौकरी को लात मारकर, स्वेच्छा से शिक्षादान देने का जीवन-पर्यन्त व्रत लिया। अपनी प्रतिभा, ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठता के बल पर प्राचार्य पद को सुशोभित किया। लेकिन विधाता को भी जैसे उनकी उन्नति से स्पर्द्धा और ईर्ष्या हो गई और परिणामस्वरूप वे असमय ही काल-कवलित हो गए।

साहित्य की एकाधिक विधाओं को उन्होंने अपनी लेखनी से सजाया-संवारा, नयी कविता के सौन्दर्य-बोध के परीक्षण के निमित्त उनकी कृतियां, कविताएँ सदैव याद की जाती रहेंगी- यह मेरा ऐकान्तिक विश्वास है। लोक-साहित्य विशेषकर भोजपरी साहित्य के अनुसंधित्सु कलाकारों को उनकी भोजपुरी कवितायें सदा अपनी ओर आकर्षित और आमंत्रित करती रहेंगी तथा समादृत होंगी। सबसे बड़ी बात यह है कि वे केवल साहित्यिक महारथी ही नहीं अपितु बहुत बड़े गणितशास्त्री भी थे।

स्व. मुकुन्दपुरी आरा (शाहाबाद) की साहित्यिक परम्पराओं की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक मूर्धन्य कड़ी थे। पं० सदल मिश्र और बाणभट्ट के सच्चे अनुयायी तथा अंचल के साहित्यिकों के प्राण थे। उनके निधन से साहित्य को तो हानि हुई ही, शैक्षणिक संस्थाओं तथा भोजपुरी-प्रदेश पर भी बहुत बड़ा संकट गहरा गया।

सच्चे अर्थों में वे मेरे अभेद पिता थे और पिता की मृत्यु कैसी दुःखद और शोकाकुल होती है- यह अनुभव का विषय है। उनके एकाकी परिवार को एकाएक महान विपत्ति का सामना करना पड़ा। उनके प्रति मेरी आँखों में अब श्रद्धा के आँसू की क्रमिक और अध 'वान लड़ियों के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं है। मेरी चेतना हतप्रभ और दिशायें निराशा की कालिमाओं से भरपूर हैं। ईश्वर उनकी महान आत्मा को प्रतिपल शांति प्रदान करें- यही मेरा महत् कामना का प्रणव-स्तवन है।

- नन्दकुमार राय
मुजफ्फरपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरणीय गुरुदेव मुकुन्दपुरी जी

'ग्राम-वाणी' परिवार को यह जानकर अत्यंत दुःख होगा कि उसके पथ प्रदर्शक आदरणीय श्री शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' जी का 12 अप्रील की रात 12 बजे टायफायड और ब्रेन की बीमारी से 38 वर्ष की अल्पायु में ही महाप्रयाण हो गया। ज्योंही मुझे खबर मिली कि हमारे गुरुदेव हमारे बीच नहीं रहे तो मेरी वाणी मूक हो गयी और मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। कुछ देर पश्चात् जब मैं होश में आया तो मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि वे हमारे 'ग्राम-वाणी' परिवार को इतनी गहरी चोट देकर विदा हो जायेंगे। परन्तु भाग्य का बदा होकर ही रहता है।

उन्होंने 38 वर्षों की अल्पायु में भोजपुरी साहित्य को जो कुछ भी दिया, संग्रहणीय है। उन्होंने अपनी भोजपुरी कविता नामक पुस्तक पर भोजपुरी साहित्य में मूर्धन्य स्थान प्राप्त कर लिया था। उनके निधन से भोजपुरी साहित्य को जो कुछ क्षति हुई उसकी पूर्ति शीघ्र होना कठिन है।

आप अपने सिद्धांत के पक्के थे तथा सत्य की हमेशा प्रतिष्ठा करते थे यही कारण है कि अपनी सरकारी सेवाओं को तुच्छ जानकर शिक्षा क्षेत्र का सहारा लिया। इसमें तनिक भी संदेह नहीं था कि आज आप उच्च ओहदे पर होते, परन्तु आपने शिक्षा क्षेत्र को ही जीवन का महान लक्ष्य समझा। मुझे ऐसा कहते गर्व का अनुभव हो रहा है कि आप किसी भी परिस्थिति में अपने मार्ग से विचलित न हुए और अपनी ईमानदारी और सत्य पर हमेशा डटे रहे। मैं वह समय भूल नहीं सकता, जब कि आपने प्रथम-प्रथम पीरो उच्च विद्यालय में अध्यापकत्व स्वीकार किया। उस समय मैं उस विद्यालय में आठवें वर्ग का छात्र था। आपने निरंतर 1951 से 1962 तक 12 वर्षों तक उच्च विद्यालय पीरो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में अध्यापक का कार्य बड़ी लगन और उत्साह के साथ करते रहे। आपकी वाणी अभी भी विद्यालय की ईंट-ईंट में वर्तमान है। आज आपका शोक संदेश सुनकर प्राचीन और अर्वाचीन छात्र समुदाय विकल आँसू बहा रहा है। हम अवाक् हो गए हैं, हमें उतनी सामर्थ्य नहीं कि उसका वर्णन कर सकें। इस विद्यालय का ही नहीं, बल्कि पड़ोसी विद्यालयों का भी ऐसा कोई छात्र नहीं होगा जो आपसे परिचित नहीं होगा। यही कारण है कि अनिच्छा रहने पर भी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मझिआंव में प्राचार्य का आसन ग्रहण करना ही पड़ा। चंद दिनों की अवधि में आपने विद्यालय में एक नयी चेतना भर दी थी, विद्यालय निरंतर ज्योतिर्मान हो रहा था, परन्तु नियति को यह देखा नहीं गया। आपके निधन से उस विद्यालय को जो कुछ क्षति हुई है भविष्य में शीघ्र पूर्ति कठिन मालूम पड़ती है। मेरे गुरुदेव मेरे भाग्य में यही बदा था अपनी अल्पायु में ही ऐसी चोट लगेगी? गुरुदेव! मुझे अपनी राम कहानी अभी भी याद है कि जब मैं शिक्षा क्षेत्र से उदासीन हो गया था, आपने संतोष और धैर्य देकर शिक्षा की ओर प्रेरित किया और मैंने जो कुछ भी शिक्षा प्राप्त की, आपका आशीर्वाद ही तो है।

पुस्तकालय जगत् के कर्मठ नेता! आपकी अनुपस्थिति में हम राह भूल गए हैं। पीरो तड़ारी थाना पुस्तकालय संघ जिसका बँटवारा पीरो, तड़ारी तथा चारपोखरी प्रखंड पुस्तकालय संघ में हो गया है आपकी सेवा को भूल नहीं सकता है। एक समय था जबकि इस संघ के कार्यकर्त्ताओं की राह भूल गयी थी और चौराहे पर एक टक से देख रहे थे कि किधर जायँ? उस परिस्थिति में आपने प्रधान मंत्री के रूप में सेवा करने का व्रत ले लिया। मेरे पथ प्रदर्शक! मैं भूल नहीं सकता कि आपका रंचमात्र इशारा पाकर संघ ने शाहाबाद जिला पुस्तकालय संघ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आज जो कुछ देखने को मिल रहा है, सब आपकी ही देन है। आपने सभी पुस्तकालयों में दौड़ लगाकर हमारे संगठन को मजबूत किया। इधर आपने कार्य व्यस्त हो जाने के कारण इस कार्य को अपने सहयोगियों के हाथों सौंप दिया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे गुरुदेव के निधन से हमारा जो अहित हुआ उससे अधिक हानि हिन्दी जगत् की हुई। अभी उनकी सेवाओं का ठीक-ठीक मूल्यांकन भी नहीं हो पाया था। वह समय दूर नहीं जबकि उनके ऊपर महाग्रन्थ का निर्माण हो। हमने तो जो कुछ भी हित किया है केवल उनका आशीर्वाद ही पाकर। अंत में, हम 'ग्राम-वाणी' परिवार की ओर से अपने पर्थ प्रदर्शक गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

– श्री बद्रीनारायण राय
सह-संपादक, ग्राम-वाणी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक आदर्श शिक्षक 'श्री मुकुन्दपुरी जी'

आदर्श शिक्षक कौन है? जीवन धारण करते हुए तो बहुत से शिक्षक शिक्षण कार्य करते हैं, परन्तु आदर्श शिक्षक वह है जो जीवित रहने पर तो सही, मरने के उपरान्त भी शिक्षण-कार्य करता है। हम यह गुण अपने परम पूज्य गुरुदेव श्री शिवनारायण पांडेय 'मकुन्दपुरी' जी में पाते हैं। जीवित रहने पर तो उन्होंने अच्छी तरह शिक्षण-कार्य किया ही, मरने के पश्चात् भी वे हमें शिक्षा देते हुए परिलक्षित होते हैं। उनका जीवन हमें बहुत सी शिक्षाएँ प्रदान करता रहा है। वे एक अत्यनत ईमानदार व्यक्ति थे। **"An honest man's noblest work of God" - Pope**

सचमुच ईमानदार आदमी ईश्वर की श्रेष्ठतम तथा पवित्रतम कृति में से हमारे परम पूज्य एवं आरणीय गुरुदेव श्री मकुन्दपुरी जी भी थे। उनकी चारित्रिक उज्ज्वलताओं एवं धवलताओं के कारण ही सभी उन्हें चाहते थे। मधुरभाषिता के कारण वे सर्वप्रिय हो गये थे। वे मानव सुलभ सभी गुणों से सम्पन्न एक महान् व्यक्ति थे। वे एक कर्त्तव्यपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं कर्त्तव्य की बलिवेदी पर भी मिटनेवाले महान् वीर थे। सरस्वती के वरद्पुत्र एवं भोजपुरी के मूर्धन्य कवि 'श्री मुकुन्दपुरी जी' सर्वदा प्रिय बने रहे। वे महात्मा गाँधी के पथ का अनुगमन करनेवाले सत्यप्रेमी व्यक्ति थे। उनके पढ़ाने की शैली अजब थी। वे सभी विषयों को सफलता पूर्वक पढ़ाते थे। वे गणित जैसे नीरस विषय में भी साहित्य-का-सा रस ला देते थे। यही कारण है कि वे सभी छात्रों के हृदय सम्राट बने रहे। प्रतिभासम्पन्न कलाकार श्री मुकुन्दपुरी जी ने छात्रों के हृदय को जीत लिया था। छात्रों के लिए उनके हृदय में सच्चा एवं शुद्ध प्रेम था। वे सबसे हँसकर मिलते थे और यही कारण है कि कोई उनसे भयभीत नहीं होता था और सभी को उनसे मिलने का आनन्द का अनुभव होता था। जब हम छात्र किसी कठिनाई का अनुभव करते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब उनसे मिलते थे और वे हमारी कठिनाई को शीघ्र दूर करने की चेष्टा ही नहीं करते थे, बल्कि शीघ्र ही दूर कर देते थे। कठिन से कठिन पाठ भी उनके हाथों में जाकर बहुत आसान हो जाते थे। जब हमलोग उनसे पढ़ते थे तो खेलने- का सा ही मजा आता था। वे समय का बहुत अधिक सदुपयोग करते थे। वे एक दयालु स्वभाव के व्यक्ति थे। वे साधारण पोशाक पहनते थे परन्तु बहुत अधिक ध्यान वे सफाई पर देते थे। वे वाणी के धनी थे और उनकी वाणी ओजस्वी एवं आकर्षक थी। वे त्याग, ईमानदारी, सत्यता, बुद्धि- वैलक्षण्य, सहिष्णुता, विनम्रता, औदार्य एवं अनुपम कार्य- दक्षता के कारण ही प्राचार्य पद को प्राप्त करने में सक्षम सिद्ध हुए थे।

आज वे हमारे बीच न रहे। यह लिखते वाणी मूक हो रही है। कलम थरथरा रही है और मस्तिष्क शून्य तथा निस्तेज हुआ जा रहा है। वे हमें बिकल बना कर इस धरा-धाम से प्रस्थान कर चुके। उनके महाप्रयाण से यह इलाका आकुल है, व्याकुल है और है क्षुब्ध। हमारे विस्फारित नेत्र अपने परम पूज्य एवं आदरणीय गुरुदेव के दर्शनार्थ छटपटा रहे हैं, परन्तु उनके दर्शन हो तो कैसे! अब वे नहीं रहे। अब नेत्रों के छटपटाने से क्या। अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत। ऐसे महान् व्यक्ति के प्रति हम शोक विह्वल होकर इस अश्रु परिपूरत बेला में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनकी आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर के समक्ष प्रार्थी हैं।

वे चले गये, परन्तु वे हमें बहुत कुछ दे भी गये हैं। उनकी जीवन-पुस्तक से हमें बहुत-सी शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उनका जीवन भविष्य में भी हमारे पथ को प्रकाशित एवं आलोकित करता रहेगा। अतः वे एक सफल एवं आदर्श शिक्षक के रूप में ही नहीं, बल्कि सर्वाधिक लोकप्रिय शिक्षक के रूप में भी परिलक्षित होते हैं।

– श्री रामनिवास राय
देवचंदा, पीरो

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री मुकुन्दपुरी जी : एक अनुभूति

श्री शिवनारायण पाण्डेय जी का निवास स्थान पीरो थानान्तर्गत मकुन्दपुर है। यही कारण है कि लोग उन्हें मकुन्दपुरी जी कहा करते हैं। ये इसी नाम से अधिक विख्यात एवं सुप्रसिद्ध हैं। पड़ोसी होने के नाते इनका व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं से मुझे परिचित होने का मौका मिला। ग्रामोद्धार एवं सामाजिक कल्याण उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। मकुन्दपुर का पुस्तकालय उनके अथक परिश्रम का ही फल है। ग्रामोद्धार की दिशा में उनका यह एक ठोस प्रयास है। इस कार्य में उन्हें सफलता भी काफी मिली यद्यपि, कठिनाइयाँ अनेक थीं। यह पुस्तकालय आज भी लोगों को कर्मठता की प्रेरणा देने के लिए वर्त्तमान है।

सादा जीवन और उच्च विचार उनके जीवन के मूल-मंत्र थे। निःसंकोच, बिना भेदवभाव के सभी से मिलना उनके जीवन का महान् बड़प्पन था। ऐसा होना भी स्वाभाविक था। क्यों न हो? वे भी तो सीधे-सादे किसान के ही सुपुत्र थे। गरीब किसानों के साथ उनका अटूट मधुर सम्बन्ध था; जिसे वे भूल नहीं सकते थे।

वे एक सरल कवि भी थे। कवि होने के नाते दुखी जनता की दुःख भरी आहों के साथ आह भरना उनका परम पुनीत कार्य था क्योंकि वे भावुक भी कम नहीं थे। असहाय जनता की दुःख भरी आह के अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं की सरल, सुबोध, मार्मिक, व्यंजना करना उनकी कविता का एक मात्र उद्देश्य था। अपनी गरीब जनता के विचारों को सुन्दर, सरल ढंग से अपने विचारों के साथ विनिमय करने के लिए भोजपुरी कविता लिखना ही उनकी दृष्टि में उचित था। यही कारण है कि वे भोजपुरी में ही कविता लिखना पसंद करते थे। वे एक जन कवि थे। अतः कविता का क्षेत्र भी ग्राम्य जन-जीवन था। आज कल के कवि की तरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता जैसे नगरों की स्वर्णमय अट्टालिकाओं पर बैठ कर कविता करना उनके जीवन के वसूल के प्रतिकूल था। वे इस तथ्य से पूर्ण परिचित थे कि भारत वर्ष गांवों का देश है। ग्रामोत्थान में ही राष्ट्र का अभ्युदय निहित है। ग्रामीण जीवन की समस्याओं को परखने के लिए ग्रामीण जीवन व्यतीत करना उनके लिए स्वाभाविक था। ग्रामीण जीवन की समस्याओं के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के बाद ही वे इन समस्याओं की अभिव्यक्ति अपनी कविता में करते थे। आज के कवि की भांति कविता लिखने का उनका उद्देश्य यह नहीं था कि कुछ विद्वान लोग ही उनकी कविता को समझे और उनकी विद्वतापूर्ण भाषाशैली और अलंकार की भूरि-भूरि प्रशंसा करें। एक अनुभवी शिक्षक होने के नाते स्वयं करके सीखो के सिद्धान्त से पूर्ण परिचित थे। यही कारण था कि वे सरल भाषा में भोजपुरी में कविता लिखते थे जिसमें लोग अपनी सरल भाषा में अपनी समस्या को स्वयं समझें और उसके निराकरण का मार्ग स्वयं ढूंढ़ें। स्वावलम्बी समाज की रचना उनकी कविता का महान् उद्देश्य था। वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का स्तम्भ स्वावलम्बन हो, समाज के लोग अपनी समस्या को स्वयं समझे और सहकारिता के आधार पर उसका स्वयं निराकरण करें।

वे एक प्रगतिवादी कवि भी थे। समाज के अन्दर आर्थिक विषमता की चौड़ी खाई को वे देखना नहीं चाहते थे। वे इस तथ्य से भलीभांति परिचित थे कि अर्थ सामाजिक जीवन की रीढ़ है। सामाजिक कल्याण के लिए समाज में आर्थिक समता आवश्यक है। नेहरू की समाजवादी समाज की रचना आर्थिक समता के बिना संभव नहीं है। यही कारण है कि अपनी कविता में उन्होंने एक मजदूर की दशा का कारुणिक एवं मार्मिक चित्रण इन पंक्तियों में किया है:-

हई देखी बनिहरवा आइल, चेहरा बा एकर गरमाइल।
खाली पेट बारह बजल बा, धूरिधार से देह भरल बा।
एकरा पीठ में पेट समाइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
हँसत करत बा, करत हँसत बा, कइसन फिकिर?
कबहूँ ना देखीं सुस्ताइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धह-धह घाम कि कन-कन जाड़ा।
हर-हर बरखा तबहूँ खाड़ा।
कबहीं ना तनिको सकुताइल।।
हई देखीं बनिहरवा आइल।
दिन रात ई हाड़ ठेठावे, चमकल भाग कि भर पेट खावे।
फटही धोती, फटही चादर, ओही पर दिन रात कटावे।
दोसर रोवे ई का कमाइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
लइका-फइका से घर भरल बा।।
खाए पेन्हें के भूख मरल बा।।
उनके से हमरे करम लिखाइल।।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
टूटल मड़ई, टूटल खटिया, पहिले से धइले बाड़े अटिया
अबहीं ना एको कोना छावाइल
हई देखीं बनिहरवा आइल।।
खँड़हर घर में भूस भरल बा।
ऊपर नीचे बीअर भरल बा
भाग के ऊपर सभे परल।
इहां रहबि कि उहाँ रहबि हम।
हमरा त दूनो एक बुझाइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।

एक राष्ट्रीय कवि होने के नाते उनकी कविता में 'पन्द्रह अगस्त' का वर्णन भी बहुत सुन्दर ढंग से हुआ है।

पन्द्रह अगस्त आइल बा-पन्द्रह अगस्त आइल बा।
गेरुआ, सफेद, हरीअर रंग के झंडा फहराइल बा।
पन्द्रह अगस्त आइल बा।।
पहीले चरखा झंडा नीचे, मतलब एकर बुझाइल बा।
अपन्द्रह अगस्त आइल बा।।

मकुन्दपुरी जी एक कवि ही नहीं, बल्कि एक सफल, लोकप्रिय, प्रशिक्षित, चौदह वर्षों के अनुभवी प्रवीण शिक्षक भी थे। चौदह वर्षों के बड़े अरमान के साथ उच्च विद्यालय, पीरो में उन्होंने अध्यापन का कार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया। वे एक सफल गणितज्ञ भी थे। कठिन से कठिन गणित के नीरस प्रश्नों का हल छात्रों के द्वारा सरल ढंग से कराना उनकी शिक्षण विधि की अपनी विशेषता थी।

त्याग, तपस्या, सच्चाई तथा ईमानदारी उनके जीवन की अमूल्य निधि थी। यही कारण है कि वे स्वयं जलना चाहते थे। लेकिन दूसरों को जलाना नहीं। वे दूसरों की आँखों के आँसू पोंछते थे, लेकिन स्वयं आँसू पीते थे, बहाते नहीं। यही उनके जीवन का दर्शन था। वे एक कली थे जो प्रस्फुटित होने के पहले ही कुम्हला गये। वे राज वाटिका की कुसुम-कली नहीं थे जो राजा और उनके दरबारियों को देखते ही अपने अधरों पर बनावटी प्रसन्नता की रेखा छिटका लें। वे जंगलों के कँटीले पौधों की एक कली थे, जिन्हें काँटों से उलझना आता था। वे ही उनकी प्रसन्नता एवं अनुभूति को परख सकते थे। मखमल पर चलने वाला व्यक्ति उनकी स्वच्छन्दता को क्या जाने। उनके जीवन की एकमात्र निधि अवसाद, लाचारी तथा मायूसी की अनुभूति थी। शाही महल में रहने वाला रईस इस मर्म को क्या जाने? वे तो इस दर्शन से लाखों कोस दूर है। जीवन में पग-पग ठोकरें और धोखा खानेवाला मोसाफिर या फकीर ही इस तथ्य को कुछ अनुभूति के रूप में परख सकता है। बहुत आग्रह करने पर कभी-कभी अपने जीवन की निराश तथा अवसादपूर्ण अनुभूति को वे एक समस्या के रूप में मेरे सामने रखते थे जिसे समझना मेरे लिए असंभव नहीं तो कठिन अवश्य प्रतीत होता था। उनका जीवन एक पहेली समान था जिसे समझने के लिए सिर्फ तीक्ष्ण मस्तिक के अतिरिक्त सरल हृदय भी आवश्यक था। उनके जीवन में बसंत आया लेकिन सिर्फ पतझड़ लिए वे एक क्षण के लिए मुस्कराये लेकिन खिल न सके। अन्त में चल दिये इस तुच्छ तृष्णामय दुनिया के परोपकार हेतु सदा के लिए एक अनुभूति छोड़ 12 अप्रैल, 1963 की आधी रात्रि में।

– श्री रामकुमार सिंह
एम.ए., डिप०-इन-एड.

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री शिवनारायण भाई

लोग कहते हैं शिवनारायण भाई दुनिया से उठ गए। जीवन की मधुमय घड़ियों में जिसके साथ मुसकुराया, दुर्दिन में साथ आँसू बहाए; स्थूल रूप में दूर रहते हुए भी छाया की तरह साथ लगे रहे। उन पर अब केवल कुछ पंक्तियां ही लिख कर संतोष कैसे कर लूँ। भिन्न परिस्थितियों के बीच सामूहिक फोटोग्राफी में उनका विहँसता प्रतिबिम्ब आज भी आँखों के सामने ही कविता की लहरी में झूलता हुआ उनका मादक संगीत आज भी भुलाए नहीं भूलता। उनकी साधुता, सरलता, कर्मठता, लोकप्रियता किन किन बातों को याद करूँ हृदय में वेदना और आँखों में आँसू लिए उनके गुणों का बखान कैसे किया जाय, गुदड़ी के लाल को किसी ने समझा नहीं, समझे भी कैसे आँखों पर पट्‌टी जो पड़ी है।

अभी शिवनारायण भाई से मेरा कुल परिचय मात्र तेरह वर्षों का था। इस काल में वे मेरे हृदय में कील की तरह गड़े रहे हैं। सारा पारिवारिक बोझ ढोते हुए, कुशलता के साथ अध्यापन कार्य करते हुए शिवनारायण भाई जिस मस्ती के साथ सार्वजनिक उत्थान के कामों में लगे रहते थे, वह दूसरों के लिए आदर्श अनुकरण की वस्तु है शरीर से दुबले-पतले रहते हुए भी प्रकृति की भयंकरता को चुनौती देना उन्हीं का काम था। खैनी मलते-मलते दुनिया की कटुता को मसल देने की उनकी प्रबल भावना बड़ी विचित्र थी। बच्चों के बीच पूरा रंगरूट, बूढ़ों के बीच अनुभवी, ज्ञानी और युवकों के बीच मस्ती का लहाराता सागर। ऐसे विचित्र थे मेरे मुकुन्दपुरी भाई।

चिर वियोग के पागलपन में उनके सभी गुण लुप्त से हो रहे हैं। याद भी कैसे करूँ। केवल याद आता है गत वर्ष का मधुर मिलन। मैं उनके यहाँ दो-तीन शिष्यों को लेकर मेहमान बना था। शिवनारायण भाई ने स्वागत के नाम पर अपना हृदय ही बिछा दिया था। मुझे खिलाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के नाम पर उन्होंने अँचारों का अम्बार लगा दिया था। मुझे ललकारे जा रहे थे। मेरी प्रकृति वे जानते थे। शिवनारायण भाई के मेरे साथ ये ही, अंतिम शब्द हैं 'पांडे जी अब हद हो गइल बरदास नइखे होत' वे विदा हुए और उसके बाद एक वर्ष भी पूरा नहीं होने पाया कि दुनिया से ही उठ गए।

शाहाबाद जिला एवं विशेषतः पीरो-तड़ारी थाना में पुस्तकालयों के विषय में तो शिवनारायण भाई स्तम्भ की तरह हैं। उन्हें तो इसकी सनक सवार थी। निष्ठुर दुनिया उनकी छाती पर मूंग दलने के लिए तैयार बैठी थी। लेकिन फिर भी वे अपनी धुन में मस्त। मुझे आज भी याद है वे जब कभी मेरे घर आते कोई छात्र जटिल सवाल लेकर पहुँच जाता। वे तब तक डटे रहते जब तक जटिलता भंग न हो जाती। शिव नारायण भाई के त्याग को मैं क्या कहूँ। वे मानव नहीं देवता थे। वे मुझसे उम्र में भी बड़े थे, लेकिन क्या बताऊँ, एक बार उन्होंने मुझसे कहा 'पांडे जी इनचार्ज हेडमास्टर के काम रउए करीं ई अनुभव हेडमास्टर बने में रऊआ के मदद करी। हम त अनट्रेंड बानी' ऐसा था उनका त्याग।

शिवनारायण भाई को भोजपुरी कविता का बड़ा शौक था। शायद यह उनके पिताजी का ही प्रभाव था। उनकी भावनाएँ, उनकी अनुभूतियाँ गीत बन कर ही बाहर निकलीं। इधर कुछ वर्षों से उनका जीवन बहुत ही अशान्त था। यह है उनकी अशान्ति का चित्र-

कबहीं जेकरा आसरा ना फरल।
जेकर अँखिया हरदम झरल।।
जेकर मन सपनों में जरल।
आह निकल के सगरो भरल।।
हाड़ मांस सब देह खियाइल।
आगे दिन का देखीं लिखाइल।।

इस गीत में शिवनारायण भाई पंत और शेली को भी मात करते हैं। इनमें काव्य का कौन सा गुण नहीं है। कल्पना तत्व, रागात्मक तत्व और बुद्धि तत्व तीनों एक साथ गुँथे हुए हैं। शुक्ल जी के काव्यादर्श को इन्होंने साकार कर दिया है। पंत जी ने कहा:-

'वियागी होगा पहला कवि, आह से ऊपजा होगा गान'
उमड़कर आँखों में चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और शिवनारायण भाई ने इसे साकार कर दिखला दिया। शेली ने कहा–

"Our sweetest songs are those
That tell of the saddest thoughts,"

इस सिद्धान्त के अनुसार इनका यह गीत कितना मार्मिक है। मालूम होता है, इस गीत में उन्होंने करुण रस की आत्मा को रानी मक्खी की तरह पकड़ रखा है।

'आसरा ना फरल, अँखिया हरदम झरल, मन सपनों में जरल' एक एक वाक्यांश क्या है, भावों का उमड़ता सागर है। कविता पढ़ाते समय मैं कविता की परिभाषा में यह उदाहरण देता था–

'बाँधों न नाव इस ठाँव बंधु
पूछेगा सारा गाँव बंधु'

पटना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष नलिन जी ने भी एक बार यही उदाहरण दिया था। लेकिन शिवनारायण भाई की उपर्युक्त पंक्तियां उस उदाहरण को भी मात करती है।

बच्चन जी ने कहा :-

इस पार प्रिये तू है मधु है
उस पार न जाने क्या होगा,

बच्चन जी के उस पार न जाने क्या होगा, में जीवन की मधुरता के खो जाने की आशंका है तो शिवनारायण भाई के, 'आगे दिन का देखी लिखाइल?' में अशान्त जीवन का सारा व्यक्तित्व ही निखर जाता है।

बच्चनजी मधुर स्मृति के बोझ ढोने में जीवन का गौरव मानते हैं। दुनिया की निष्ठुरता उन्हें भी सताती थी ,तभी तो कहते थे–

'यदि छिपाना जानता तो जग मुझे साधु समझता'

लेकिन शिवनारायण भाई अशान्ति की वजह से मृत्यु देवी का आह्वान कर रहे हैं –

"अबहीं, साँस निकल बलु जइते
बीतल बात ना सामने अइते,

सच्ची–कविता वह है जो सामने एक चित्र ला देती है। एक वेग उपस्थित कर देती है। देखिए, शिवनारायण भाई ने किस तरह अपनी कथा को व्यक्त किया है। कुछ कारणवश उन्हें स्कूल पकड़ने के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रातःकालीन छोटी लाइन ट्रेन को पकड़ना पड़ता था, इस पर उन्होंने कहा :-

कइसन चूक भइल हमरा कि आजुले तू त सतावत बाड़ु।
सूरज ना उगले तबहीं खटिया छोड़ि के उदउरावत बाड़ु।

खटिया 'छोड़ दउरावत बाड़ु' में कितना भाव, कितनी भारी बेचैनी छिपी हुई है। शौच मैदान जाने का, हाथ-मुँह धोने का, नास्ता पानी करने का कुछ भी समय नहीं मिला, ये सभी भाव किस प्रकार एक साथ शब्दों की व्यंजना शक्ति द्वारा आपसे आप व्यक्त हो जाते हैं।

इतना ही नहीं और देखिए-

झमझम बरखा में छाता के ना बाह बाटे
लपकि-लपकि धउर धउरवलू काहे हो।
बासी मुँहे अन-जल कुछ ना ठेकनवा से।
कसहुँ ना छूटे हदसवलू काहे हो।

'दउरत-दउरत पिडुरी चड़त रहे' तो भी वे हार मानने वाले नहीं। 'अनपढ़ को भाग्य विधाता' देखकर उनका मन बहुत ही क्षुब्ध था, हृदय जलता था। तभी तो कहते थे कि-

चुपी कइसे साधीं चुपो रहलो ना जाता।
मनवा के घाव हमरा खूब कुकुलाता।

लेकिन फिर भी वेदना सहते हुए भी मुखर न होने की वे सलाह भी देते हैं -

चेति जा भाई लोग, अँखिया मुदाइल बा।
कि चुपे रह जइसे हमार चुपिया सधाड़ल बा।।

तभी तो दार्शनिक रूसो की तरह उन्हें स्वच्छंद जीवन से प्रेम हो गया। ठाट-बाट शान-शौकत को इन्होंने लात मार दिया। इन्होंने मस्ती में कहा -

भुइंया सुतती पुअरा ओढ़तीं
तोसक तकिया सपनों ना सोचतीं
अखियाँ में हरदम धार बहइतीं
धरती ले असमान डुबइतीं।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि शिवनारायण भाई पलायनवादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि की तरह जीवन क्षेत्र से भागना चाहते हो। कठिनाइयों से उनका मन भटकनेवाला नहीं। वे तो तूफानी लहरों पर हँसते-हँसते गाते थे-

हरदम ओठ पर रही मुस्कान,

निष्ठुर जगत् उन्हें परास्त करने की तैयारी करता रहा। लेकिन इनकी पीठ में धूल न लगी। उन्होंने ललकार कर कहा-

'मान ना मटकल रह गइल शान'

शिवनारायण भाई यह जानते थे कि दुनिया में उन्हें अधिक दिन नहीं रहना है, इसी से इनमें विराग की भावना पहले से ही वर्तमान थी। तभी तो कहते थे-

आपन लोग कब आपन होला।
माया जाल के खाली पोला।
इंहवा कवन अब ठेकान बा, कि कवन पहचान बा ना।

सूफी संतों की रहस्यात्मक भावना, अद्वैतवाद का अकाट्य सिद्धान्त कबीर की उलटबासियाँ हमारे शिवनारायण भाई में भी विद्धमान हैं।

काहे भइल फरक धरती आसमान
समझ न आवे ला कि गइल गेआन'
पिया मिलि जइते कवनों दुअरिया में।

'गोली के परवाह ना कइले हँसते-हँसते डामिल गइले' में राष्ट्रीय भावना की सुन्दर अभिव्यक्ति है 'चमचम चमकत मउर लिलार' में शिवनारायण भाई ने दुलहे के जिस मधुमय रूप का वर्णन किया है, वह साहित्य में बेजोड़ है और साथ ही साथ कहारों के जीवन का रूप दिखलाकर इन्होंने संसार की जिस विरोधी प्रकृति का वर्णन किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहार कहता है-

'सजल बा बरियात तोहार, चढ़ल कान्हा पर बोझ हमार।'

यही है गागर में सागर भरने का सफल प्रयास। समास शैली का इतना सुन्दर उदाहरण विरले ही मिलता है। 'हई देखि बनिहरवा आइल' शीर्षक कविता में इन्होंने प्रगतिवादी के नाम से पुकारी जानेवाली कविता को पूरा मात कर दिया है। उधर निराला जी ने भीख मांगने वाले का चित्र खींचा तो इधर शिवनारायण भाई ने कर्मक्षेत्र में जूझने वाले बनिहारों का चित्र खींचा। देखिए कैसा है यह बनिहार कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'धह-धह घाम कि कन-कन जाड़ा
हर-हर बरखा तबहूँ खाड़ा
फिर भी
हँसत करत बा करत हँसत बा-कवन फिकिर-

शिवनारायण भाई ने अपनी ही कविता में जैसे अपना भविष्य देख लिया हो इन्होंने पहले ही कहा-

लोर के पोछवैया ना रहले-खाढ़े बचवा बा नादान
कतना रहे अरमान।

इन्होंने अपने गीतों में धूल भरे मुहावरों एवं कहावतों का पूरा प्रयोग किया है जिससे इनके गीत देहात की आत्मा से निकलकर आत्मा में ही प्रवेश कर जाते है। 'कल्हुए बनिया आज सेठ कहाला' 'नून तेल मरीचा मिलावे के' 'खेत खाला गादाहा त जोलहा पीटाता' उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

शिवनारायण भाई ने अपनी मस्ती का परिचय अपने हास्यमय गीतों द्वारा दिया।

'सुतल मुरदा हँसत रहल' में इन्होंने मानव को कौन कहे मुरदा! तक को हँसा दिया। 'ऊपर कहावे खातीर एड़ी लगावे के' में गोस्वामी तुलसीदास रचित नारद मोह प्रसंग का हास्य याद आता है। 'गोतिया' शीर्षक की एक-एक पंक्ति हास्य का भंडार है।

सब कुछ है, पर शिवनारायण भाई ही नहीं रहे। लेकिन फिर भी वे हजारों लोगों का कंठहार बन चुके हैं। जेसे सूर अमर रहे, तुलसी अमर रहे वैसे ही कुछ ही गीतों में हमारे शिवनारायण भाई भी अमर रहेंगे। इन पंक्तियों के साथ ही चुपके से कूच करनेवाले शिवनारायण भाई को मैं श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

- प्रो० श्री कृष्ण प्रसाद पाण्डेय
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राय डिग्री कॉलेज, धनबाद
बिहार (झारखंड)

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूज्य गुरुदेव

(श्री राज कुमार सिंह)

पूज्य 'मकुन्दपुरी' जी पीरो उच्च विद्यालय के एक महान स्तम्भ थे। कुशल शिक्षक होने के अलावे वे एक आदर्श समाज सेवी तथा एक जनप्रिय मूर्त्ति थे। वे विनोदप्रिय भी कम न थे। उनकी मधुर स्मृति जीवन में सदा बनी रहेगी। पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धांजली अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की शान्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना करता हूँ।

'मुकुन्दपुरी जी' का निधन

विगत माह की 12वीं तारीख को विद्यालय जाते ही अचानक सुना 'मुकुन्दपुरी जी का स्वर्गवास हो गया।' विद्यालय के सभी शिक्षक एवं छात्रों ने दो मिनट तक उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। 'मुकुन्दपुरी जी' ने मुझे जो मदद की थी उसको मैं आज तक भी नहीं भूल पाया हूँ। भगवान उनकी आत्मा को शांति दें।

– रामनरेश शर्मा, 11 वर्ग स, ए.सी.सी. सार्जेन्ट, पीरो

हमारे ज्ञानेवश्वर स्व. 'मुकुन्दपुरीजी'

आज उनकी चर्चा करते समय हमारी आँखें अश्रुपूरित हो जाती हैं, लेखनी काँपने लगती है और हृदयाम्बुधि में शोक की हिलोरे उठने लगती हैं। हम भी तो इस आशा में ही थे कि पूज्य गुरुवर से अधिकाधिक लाभानिवत हों, किन्तु इसी बीच निष्ठुर नियति ने हमारी महती आकांक्षा एवं आशा पर पानी फेर दिया। जो हो, हमें यह जानकर ही सन्तोष कर लेना है कि उनका भौतिक शरीर तो नष्ट हो गया, परन्तु उनकी अमर आत्मा जिस रूप में हो, हमें सदैव प्रेरणा देती रहेगी।

– साकेत बिहारी, 10वाँ विज्ञान, उ. विद्यालय पीरो)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुकुन्दपुरी जी का देहावसान

मेरे भूतपूर्व गुरुदेव श्री शिवनारायण उर्फ 'मुकुन्दपुरी' जी के देहावसान की खबर गत् माह की 13वीं तारीख को अचानक सुनते ही मैं बिल्कुल निस्तेज रह गया। कहने की आवश्यकता नहीं सन् 1952 से सन् 1956 तक की अवधि में उनसे विद्या-ग्रहण करने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हो सका है। इसी के नाते अब उनकी कुछ स्मृतियाँ आज भी बरबस ही याद हो आती हैं। वर्ग में पढ़ाने का वह अनूठा ढंग जिसमें वे बराबर "नहीं जी?" और "है न?" कहा करते थे, मैं आज तक नहीं भूल पाया हूँ। मुझे याद है 'मकुन्दपुरी' जी की भोजपुरी कविता 'हई देखी बनिहरवा आइल' को सुनकर कौन न हँस पड़ा था। आज 'मकुन्दपुरी' जो के खो जाने से मकुन्दपुर के साथ ही भोजपुरी कविता का एक मार्ग भी सूना हो गया। भगवान उनकी दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान करें। यही मेरी मनोकामना है।

– श्री राजेश्वरी प्रसाद मिश्र
इटिम्हा, पीरो (शाहाबाद)

भावांजलि : विनय कुमार की

पूज्य गुरुदेव श्री मकुन्दपुरी जी के जीवन से मुझे व्यावहारिक शिक्षा मिली। अनुशासन और सच्चाई के मूर्त्त स्वरूप थे। उनकी गणित पढ़ाने की कला ऐसी सुरुचिपूर्ण थी कि पढ़ते समय हमलोग विभोर हो जाते। आज वे इस संसार में न रहे। आज केवल उनकी स्मृतियाँ ही बची रह गयी हैं। गुरुदेव की आत्मा की शान्ति के लिए हम ईश्वर के प्रति प्रार्थी हैं एवं श्रद्धा-पुष्प समर्पित करते हैं।

– विनय कुमार,
10वाँ विज्ञान, उ.वि. पीरो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भावांजलि : मुनिजी राय की

गुरुदेव श्री मकुन्दपुरी जी सचमुच मेरे लिए मार्ग दर्शक थे। वे एक बहुत बड़े दार्शनिक और भविष्यवेत्ता थे। गुरुदेव के दर्शन कर मुझे बहुत आनन्द होता था। वे मेरें गुरु तो थे ही, साथ ही नाता में मेरे मौसा थे। अतः वे मुझे बहुत प्यार करते थे। अपनी जीवन की पंखड़ियों को सुरभित करने के लिए उनके उपदेश सहायक थे, किन्तु मेरी आशाएँ और आकांक्षाएँ पूरी भी न हो पायीं कि वे प्रस्थान कर गये। मुझे मालूम होता है कि वे फिर दर्शन देंगे, क्योंकि प्रतीक्षा की आकुलता में आशा की प्रवंचना छुपी रहती है। उन्हें शान्ति मिले।

– मुनि जी राय,
11 वाँ विज्ञान, उ.वि. पीरो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धांजलि परिजनों की

कवि 'मुकुन्दपुरी' की काव्य-साधना

शिवनारायण 'मुकुन्दपुरी' ने बेशक कम लिखा,
पर, जो लिखा, सब सच व ग़म लिखा,
कभी अपना निजी ग़म, कभी समाज का,
कभी स्वदेशी, कभी विदेशी,
कभी 'इन्ट्रोवर्टेड, कभी 'एक्स्ट्रोवर्टेड',
कभी 'लघु मानव' की धारणा,
कभी 'महामानव' की विराट् अवधारणा।
कवि शिवनारायण 'मुकुन्दपुरी' की यही है- 'काव्य साधना'।

गाजीपुर (उ.प्र.) डॉ० नन्दकुमार
मो.- 09651348786

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि 'मुकुन्दपुरी' और उनकी काव्य-यात्रा

डॉ. नन्दकुमार राय

'मुकुन्दपुरी' जिस कवि का उपनाम है, उसका वास्तविक और प्रामाणिक नाम है- 'शिवनारायण पाण्डेय। जी हाँ, वही शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' जिन्हें हिन्दी के मनीषी और सुविज्ञ चिन्तक प्रो० रामेश्वरनाथ तिवारी ने 'गीतों का बादशाह' कहकर अभिहित किया था।

कवि 'मुकुन्दपुरी की काव्य-यात्रा

किसी भी कृतिकार के कृतित्व को उसके व्यक्तित्व के परिप्रेक्ष्य में देखना-परखना निष्कर्ष की सच्चाई तक पहुँचाता है, क्योंकि कृतित्व कृतिकार के जीवन-व्यक्तित्व का ही गुणनफल होता है। सच्ची बात यह है कि कविता का सृजन कवि की मनोभूमि पर ही होता है। मनोभूमि जैसी और जितनी ऊर्वर होगी, कविता का रसायन भी वैसा ही सम्वर्द्धक और पौष्टिक होगा।

कवि शिवनारायण पाण्डेय का जन्म 1 फरवरी, सन् 1925 ई० को निविड़ देहात- बिहार राज्य के तत्कालीन शाहाबाद जिले के मुकुन्दपुर नामक एक ठेंठ गाँव में एक मध्यवर्गीय किसान-परिवार में हुआ था। गाँव की सोंधी मिट्टी में उनका मन ऐसा रच-बस गया कि गाँव के उस नाम को ही उन्होंने अपने व्यक्तित्व की अस्मिता का पर्याय मान लिया अर्थात् उस नाम को ओढ़कर व्यक्ति-शिवनारायण पाण्डेय 'गीतो के बादशाह' कवि 'मुकुन्दपुरी' के रूप में प्रख्यात हो गए।

मुकुन्दपुरी की काव्य-यात्रा अवसाद और वेदना के प्रस्थान-बिन्दु से शुरू होती है, कल्पना की ऊँची उड़ान भरती है, फिर, जीवन-जगत् के यथार्थ का सामना करती हुई, सामाजिक विसंगतियों को रेखांकित करती है। स्पष्ट है कि कवि 'कीट्स' और 'शेली' की तरह 'मुकुन्दपुरी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की कविता आँसुओं में जन्म लेती है; कालान्तर में प्रौढ़ि के द्वार तक पहुँचते-न-पहुँचते जीवन और समाज की विसंगतियों को झेलती हुई, विडम्बनाओं की ऊबड़-खाबड़ राह पर सरपट दौड़ने की गवाही देती है। लेकिन जीवन-मूल्य और मानव-मूल्यों को बड़ी संजीदगी के साथ सहेजते-सँभालते हुए अपनी यात्रा पूरी करती है। यह अकारण नहीं है। कवि 'मुकुन्दपुरी' का जन्म हुआ हिन्दी की छायावादी कविता (स्वच्छन्दतावाद) के उत्कर्ष काल में, सयाने हुए वे प्रगति युग की प्रगतिशील चेतना के साथ और प्रयोग के साँचे में अपनी भाव-संवेदना को ढालते-ढालते अपने स्वनामधन्य स्वामी प्रलयंकर के पाँवों में लिपट कर अंतर्धान हो गए। इस प्रकार, कवि 'मुकुन्दपुरी' की काव्य-यात्रा सृजन से विसर्जन की यात्रा है। बानगी के तौर पर उनकी सबसे प्राथमिक (पारम्परिक) कविता 'सुमिरन' की कुछेक पंक्तियाँ देखिये :

"मनवाँ लागल बाड़े भोजपुर के गानावाँ
कइसन-कइसन भाव बाड़े एही में महानवाँ

x x x

सब रस, सब गुन, करींना बखानवाँ

x x x

दास, 'शिवनारायण' के इहे अरमानवाँ,
सपना के पूरा कर, फूटते किरनवाँ।"

'फूटते किरनवाँ' - यह एक संश्लिष्ट कथन है। श्लेष- भावात्मक संश्लेषण-व्यापार- 'भाव-गोपन' से 'अर्थ-गोपन' तक। 'किरन' (किरण)- 'फूटते किरन' - ऊषा की अरुणिमा और भाव-भंगिमा की तरुणाई। यही सृजन-संवेदना का प्रथमोन्मेष है।

कवि 'मुकुन्दपुरी' ने भोजपुरी को ही अपने काव्य का उपजीव्य क्यों बनाया? इसके उत्तर में वे स्वयं कहते हैं कि भोजपुरी में एक-से-बढ़कर एक महान भाव, विचार और चिन्तन तत्व समाहित हैं, जिनकी ओर बरबस ही लोगों का ध्यान आकृष्ट हो जाता है। कविता में निहितार्थ रस, गुण, भाषा-शैली सबका निदर्शन इस कवि को एक ही स्थल पर त्रिवेणी के रूप में दिख गया। तब, उन्होंने न आव देखा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न ताव। बस, तपाक से कूद ही गए भोजपुरी-काव्य की गंगोत्री में। अनन्त गहराई में डूबकी लगाकर, ऊपर आने पर मुट्ठी में सिकता-कण नहीं - काव्य के रंग-बिरंगे भाव-रत्न लेकर अवतरित हुए। ऐसा निपुण खिलाड़ी संसार के रंगमंच पर अपना अभिनय लम्बे समय तक नहीं दिखाता। किसी अदृश्य परा शक्ति ने उनके कानों में धीरे-से कहा- 'चलो बुलावा आया है, मालिक ने बुलाया है।' 'वे धीरे-से मुस्कराए, बीमारी का बहाना बनाए, धीरे से हाथ ऊपर बढ़ाया और प्रलयंकारी पिता के पैरों में लिपट- एकरंग हो गए।

कवि 'मुकुन्दपुरी' का जन्म छायावादी काव्य-चेतना के सौर गृह ('सऊरी') में हुआ था। प्रगतिवाद के ज्येष्ठ मास की लहालह दोपहरी में जीवन-यौवन को झुलसाया था। वेदना में जन्मे, संवेदनाओं के सहारे सयाने हुए और जीवन-जगत् की विषमताओं में कुम्हार के आँवे की तरह तपते और निखरते रहे। इसलिए उनके ठोस व्यक्तित्व के नीचे से करुणा की उद्वेग-नदी रिसती और सरकती रही, जिससे स्वभावतः कवि का मन गाहे-बेगाहे टीसता रहा है। इसलिए जीवन के यथार्थ से 'पलायन' का वही भाव इनमें भी वैसे ही सक्रिय था, जो छायावाद के सिरमौर कवि जयशंकर 'प्रसाद' में था। 'ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक! धीरे-धीरे' के ठीक समानान्तर 'मुकुन्दपुरी' की कविता 'आपन दुनियाँ अलगे बसइती' का एक बार आस्वादन करने पर 'रस' के स्वाद का पता चल सकता है। वह तो पाठक की रसाग्रहिका-शक्ति पर निर्भर करता है। 'रसानुभूति' बताने की नहीं, स्वयं भोगने की वस्तु है। भोक्ता तो पाठक को स्वयं ही बनना पड़ता है; क्योंकि 'रसानन्द' की अनुभूति सहृदय की निजी अनुभूति होती है- गूँगे का गुड़ है।

जीवन के भोग को बिना भोगे, भला, यह कोई कैसे कह सकता है कि -

"आपन लोग कब आपन होला?
माया-जाल के खाली पोला।"

ठीक यही बात भोजपुरी का ही कोई अन्य कवि भी कहता है:

"कहे के त सब कोई आपन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन साँचो के आपन कहावेवाला के बा?''

सच पूछिये तो कोई भी अपना नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति अकेला जन्म लेता है और अकेला ही यहाँ से प्रयाण करता है- सबको छोड़कर, सब कुछ त्याग कर। वहाँ जाने के लिए न कोई किसी को रास्ता दिखाता है और न पहुँचाने की तोहमत करता है। यह संसार माया का **'मीना बाजार'** है। माया तो छाया है, जिसका अपना निजी कोई अस्तित्व नहीं होता। तभी भगवान बुद्ध ने कहा- ''सर्वम् शून्यम्, शून्यम, सर्वम् क्षणिकं क्षणिकं, समर्वम् दुःखम् दुःखम्।''

छायावाद की प्रतिनिधि कवयित्री तथा दुःखवादी भाव-चेतना की सम्राज्ञी महादेवी ने तो अपने-आपको 'नीर-भरी दुःख की बदली' कहा और माना। अब, जरा कवि शिवनारायण 'मुकुन्दपुरी' की बात सुनिये, देखिये क्या कहते हैं :

''अँखिया में हरदम धार बहइतीं।
धरती ले आसमान डुबइतीं।'

अपने 'आँसुओं के कोप' में वे 'धरती-से आकाश' अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि को ही डूबो देना चाहते हैं। ऐसा क्यों? शायद इसलिए कि उनका आँसू 'खारा पानी' न होकर 'सत्व' का आर्द्र भाव है, जिसमें सारे विश्व को कवि समाहित कर देना चाहता है। उनकी और क्या कामना है, जरा देखिए-

''होत प्रलय, जुग-जुग दहइतीं।
मालिक के गोड़ जा लपटइतीं।।
'शिवनारायण' फिर डूब जइतीं।।''

दुःखवादी दर्शन का उनका यह सम्प्रेषण सबसे अलग, अनूठा और संभवतः अपनी पराकाष्ठा पर है। आखिर इस भाव-बोध के पीछे कवि की क्या बेबशी रही होगी, यह अपने-आपमें शोध का एक अलग विषय हो सकता है। लेकिन यह कहे बिना आगे भी नहीं बढ़ा जा सकता कि जरा उनकी निष्ठा देखियें- 'डूब जइतीं' - और ठीक में वे 'डूब' भी गए। लेकिन उनका डूबना तो 'भवसागर' का संतरण करना हो गया- 'जन-साधारण' की मौत के घाट उतरना नहीं; क्योंकि वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिवनारायण तो थे- कवि मनीषी।

'मुकुन्दपुरी' एक ऐसे विरल और विशिष्ट कवि थे, जिन्होंने कविता को बखूबी जिया था। जीवन को सी-सीकर जिया था और जो 'जिया' था, उसे ही भावसागर बनाकर काव्य में ढाल दिया। इसलिए उनका काव्य-बोध उनके जीवन के सम्वेगों से अलग नहीं है। उन्होंने अपने जीवन के 'भोगे हुए सत्य' को अपने 'काव्य-सत्य' के रूप में सम्प्रेषित कर दिया। उनकी एक कविता है- 'गोतीआ,[1] जिसका बड़ा ही यथार्थ और मनोवैज्ञानिक चित्रण उन्होंने प्रस्तुत किया है। देखिये :

'तोहरा दुअरिया प गोतीआ कहाईला
आपन खूनवाँ के नातावाँ तोहसे लगाईला।

गोतीआ से खून का सम्बन्ध होता है- न आत्मा का, न इन्सानियत का। इसलिये सम्बन्ध का दायरा बड़ा संकीर्ण होता है। खून जब भी **Positive** होगा, तब दिशा सही होगी और अगर **Negative** हो तब वह घातक होगी।

इस कविता को पढ़कर ऐसा लगता है कि व्यक्ति शिवनारायण पाण्डेय को जीवन की ढेर सारी विसंगतियों और विषम परिस्थितियों में जूझना पड़ा होगा, तभी विषाद का यह भाव कविता में छलका होगा। छायावाद के कोमल कवि सुमित्रानन्दन 'पंत' ने इतनी सुन्दर पंक्ति ऐसे ही थोड़े लिखी थी-

---

1. 'गोतीआ' (भोजपुरी का शब्द) - गोतिया। 'गोत्र' का रूपान्तरण। 'गोत्र' - 'उत्स' का वाचक। रक्त-सम्बन्ध। रक्त में Positive और Negative गुण। गोतिया में Positive कम, Negative attitude की अधिकता होती है। गोतिया - मतलब का यार होता है। काम निकलते ही मार देता है। एक कहावत प्रसिद्ध है- गोतिया और अरहर की दाल जितना गले, दूसरे को उतना ही अच्छा लगता है। गोतिया sadistic attitude का होता है- एक जितनी विपदा में होगा, उसका गोतिया अंदर से उतना ही प्रसन्न होगा - यह मनोविज्ञान-सम्मत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान,
निकलकर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान।"

सच्ची और सही कविता लिखी नहीं जाती, आँसुओं के साथ अपने आप ही प्रवाहित होती है और 'आह' से 'वाह!' बन जाती है। यही बात 'शेली' ने भी कही थी। सच्ची बात यही है कि सृजन साधना है- 'भोग' से 'योग' तक की साधना- 'क्रिया' की 'प्रतिक्रिया' यानी **'काव्य-प्रक्रिया'**। चोट खाये बिना आर्त्त क्रन्दन कैसे होगा? तब कहना न होगा कि कवि 'मुकुन्दपुरी' के करुणा-विगलित काव्य-संसार में जीवन का जो कोलाहल सुनाई पड़ता है, निश्चय ही उसके पीछे कुछ तो सशक्त कारण अवश्य रहे होंगे। जीवन के अति सीमित वय में असीम का भाव संजोना और उनका सम्प्रेषण 'मुकुन्दपुरी' के काव्य की महत् उपलब्धि है।

कवि शिवनारायण 'मुकुन्दपुरी' की काव्य-यात्रा सृजन से विसर्जन तक का यात्रा-वृतान्त है। अनास्था से आस्था और विश्वास का प्रतिष्ठापन करना उनके कवि-कर्म की सबसे बड़ी विशेषता और उपलब्धि मानी जायेगी। 'मुकुन्दपुरी' ने चाहे कम लिखा, पर जो लिखा, सब गम लिखा- वह 'गम', जो दमदार और धारदार था। अल्प वय की साधना में सध कर मानों 'शिवनारायण' का शिवत्व शिवसागर में समाहित हो गया और 'निःशेष' 'विशेष' बन गया। मुकुन्दपुर की मिट्टी वैसी ही पड़ी की पड़ी रह गयी और 'काव्य' का सुनहरा पखेरू पंख फड़फड़ाते हुए क्षितिज के पार जा 'असीम' बन गया।

❖❖❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमार बाबा आज भी बानी

रींकू कुमारी उर्फ बुचनी

मुकुन्दपुरीजी के प्रथम प्रपौत्री

हमारा आपन बाबा के त आँख से देखे के सुख ना नसीब भइल। उनका शरीर छोड़ला के बीस बरीस के बाद हमार उनका घरे जनम भइल रहे। मुकुन्दपुर गाँव के जवन घर में हमार बाबा के जनम भइल रहे उ आजो खंडहर के रूप में खड़ा बा आ आपन वीरानगी के इतिहास बताव ता। मुकुन्दपुरीजी जब पीआरो हाई स्कूल में पढ़ावे लगनी त जवन दलान में पढ़ावत रहीं उ दलान एगो गोतीआ के बदलयन हो गइल। हम जब उनका घरे जानी त स्व. अवधबिहारी भइया के औरत कहे लागेली कि बुचुनी तहार बाबा एही जगह पर मचान बना के लिखत-पढ़त रहन। इ चरचा सुनला के बाद हम तुरत उनका से सवाल ठोक देत रहीं कि तोहरो घर के लइकन के बाबा लेखा पढ़ के नाम कमाइल चाहत रहे। एह हमार प्रश्न के उत्तर आज तक उ घर में रहे वाला गोतीआ लोग ना दे पवलन।

हमनी के दादा स्व. बालदेव पाण्डेय ऊ घर छोड़ के 400 मीटर पच्छिम आपन घर बना ले ले एह से ना कि ओइजा सकेत रहे बल्कि लोग कहेला कि पुरनका घर में वंश वृद्धि रुक गइल रहे। हमार बाबूजी के दूगो भाई अउर एगो बहिन के बचपन में ही मृत्यु हो गइल त लोग ऊ घर छोड़ के दोसर घर बनल। बाबा के बइठका त बदलयन हो गइल बाकि पुराना घर के कंकाल अजुओ पुराना इतिहास बतावेला। नयका घर में अइला पर वंश में वृद्धि जरूर भइल लेकिन हमार बाबा एह घर में दस बरिस भी जिन्दा ना रह पवनी। हमार बाबूजी चार भाईन में सबसे बड़ा रहनी। गाँव घर के लोग हमरा से कहेला कि तहार बाबूजी के चेहरा तहार बाबा से बहुत मिलत-जुलत बा लेकिन रंग में उहा के थोड़ा अधिक साफ रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमार बाबा पीअरो एरिया के एगो नामी-गिरामी हिसाब के मास्टर रहीं। उहाँ के तुलना आज के शिक्षक से कइल जाई त आकाश-पाताल के अंतर आवे लागी। बाबा के गुणगान आज भी गाँव के औरत-मरद करेला। उनकर मरजादा उनकर सुंदर चरितर से बनल रहे। जतने उहा के पढ़े-पढ़ावे में निपुन रहीं ओतने उहा के आचरण-व्यवहार अपनावे के कला रहे। हमनी के अभागिन रहनी जा कि अपना बाबा के देखनी ना, उनका से बतीअवनी ना, उनका साथे खेलनी ना आ उनका से कुछ पढ़ली ना। लेकिन हम आपन बाबा के देवता के रूप में मानी ला। हमरा इहे बुझाला कि हमार बाबा हमनी लेखा आदमी ना रहन। उ देवता रहन, आपन झलक दिखा के ओझल हो गइलन जइसे सुरज भगवान पूरब में उगेलन और शाम में पच्छिम जाके बिसर जालन।

बाबा के प्रभाव आ उनके पुण्य प्रताप से हम एम.ए. तक शिक्षा पवनी आ डाक्टरेट डिग्री खातिर रजिस्ट्रेशन प्री-पीएच.डी. परीक्षा पास कइला के बाद करवले बानी। हम अपना से गाँव के स्कूली शिक्षा पवनी आ मैट्रिक परीक्षा पास कइला के बाद आरा से आई.ए. और बी. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास कइनी। बाबा के पुण्य से उनका तेज से प्रथम श्रेणी से सफलता मिलत गइल। हमरा बचपन से ई लागत रहे कि हम ओह बाबा के नतिनी हईं जे गाँव के सबसे पहिला ग्रेजुएट रहन। जवना समय में सुनीला कि लोग दूर-दराज से चिट्ठी पढ़ावें खातिर बाबा किंहा झमेला लागावत रहे। उनकर नातीन अगर आज के समय में ना पढ़ी त कतना जगहँसाई होई। इहे सब भावना मन में बनल आ हम आपन पढ़ाई जारी रखनी। लेकिन इ कागज के डिग्री से हमरा अभी संतोष ना होला। बाबा जइसन नामो त होखे चाही। नाम आ जस काम से होला। बाबा के काम के चरचा आजो गाँव-घर में होखेला।

हमार बाबा हिसाब के मास्टर रहीं आ आपन माटी के भाषा भोजपुरी में कविता लिखत रहीं। अभी तक कुछुए कविता लिखनी कि काल के पंसद ना आइल आ उहाँ के संसार से उठा लेलस आ हमनी के बेसहारा आ अनाथ बना देलस। बाबा के कविता पढ़ला से लागेला कि उहो एह संसार के घिनौना फीचर के भांप लेने रहनी। तभी तक लिखले रहीं कि-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भल प्रान निकल बलु जइते
बितल बात ना सामने अइते।
आपन मड़इया उहाँ बसइती,
जहवाँ चांद-सुरूज ना जइते॥

बाबा के एह कविता के भाव, भगवान तुरंत समझनी आ ऐक्सन लेवे में तनिको देरी ना कइनी, आपना पास बुला लेनी। शायद हमार दादा बालदेव पाण्डेय हमार बाबा के नाम कातना सुंदर रखले रहीं। संसार में असली तीन गो देवता होले- ब्रह्मा, विष्णु आ महेश आ तीन गो देवी होली- महाकाली, महालक्ष्मी आ महासरस्वती। हमार दादा बाबा के दू गो महान देवता के नाम देनी- शिव अउर नारायण यानी शंकर आ विष्णु। हमार बाबा के नाम रहे- 'शिवनारायण', बाद में जब ऊँहा के कविता भोजपुरी में बनवली त गाँव के साथ उनकर लगाव देख के जनमानस मुकुन्दपुरीजी कहे लागल आ उनकर असली नाम शिवनारायण पीछे हो गइल आ मुकुन्दपुरीजी के नाम से बाबा लोकप्रिय हो गइनी।

हमार बाबूजी डॉ० राजेन्द्र पाण्डेय आपन बाबूजी मुकुन्दपुरीजी के कीरती के फिर से समाज में बाँटल चाहत बानी, एह पर हमार गौरव बा। हम त इ चाहब कि बाबा हमनी के धन कमा के त ना देनी, उहाँ के फकीर रहीं। उनका नाम में पहिले शिवजी बानी। जवन कुछ कमइली उ पहिले समाज में खरच कइनी। पुस्तकालय से उहाँ के बड़ा लगाव रहे। उहाँ के पुस्तकालय बनवली भी। बाबूजी के चाहीं कि आपन भाई लोगन के सलाह से बाबा के नाम पर गांव में पुस्तकालय फिर से चालू करस। उनका प्रति गाँव-घर आ समाज के सबसे बढ़िया इहे श्रद्धा के फूल अर्पण कइल कहल जाई। इहे चंद वाक्य से हम आपन लेखनी के विराम देत बानी आ बाबा के चरण में प्रणाम करत बानी कि रउआ त सरस्वती के पुजारी रहीं, हमनी के भी महासरस्वती जी से लगाव बनल रहे इहे असली अरमान बा एकरा के पुरा करवाईं।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे बाबा मुकुन्दपुरी जी : एक प्रेरणा स्रोत

डॉ. राकेश कुमार पाण्डेय
मुकुन्दपुरीजी के प्रथम प्रपौत्र

मैं एक ऐसा अभागा व्यक्ति हूँ जो अपने बाबा स्व. शिवनारायण पाण्डेय 'मुकुन्दपुरी' जी को जीवित अपनी आँखों से न देख सका। उनकी गोद में खेलने का बाल सुख न ले सका। कोई भी शिशु जो अपने बाबा की गोद में किलकारियाँ न भर सका हो, थोड़ा बड़ा होने पर अंगुली पकड़कर आंगन में या अन्यत्र न घुमा हो, वह बड़ा पक्का बदनसीब है। मैं भी उन्हीं बदनसीबों की पंक्ति में खड़ा हूँ। बाबा के निध न के बाद मेरा जन्म उनके प्रथम प्रपौत्र के रूप में हुआ। इस पर मुझे अवश्य गर्व है कि मैं मुकुन्दपुरी जी का सबसे ज्येष्ठ प्रपौत्र हूँ जिनके आदर्श की प्रशंसा अपने गाँव जवार तथा चरपोखरी व पीरो प्रखण्ड के अन्य गाँवों में उनके शिष्यों से सुनता आ रहा हूँ। मेरा परिचय अपने बाबा से होता है तो लगता है कि मेरे बाबा की कीर्त्ति आज भी विद्यमान है। मुझे उनसे पढ़े बुजुर्ग लोगों से जाने-अनजाने जब कभी भेंट होती है, वे सब लोग ऐसा ही कहते हैं कि मुकुन्दपुरी जी जैसा गणित पढ़ानेवाला शिक्षक नहीं देखा। आरा में ही मेरे मुहल्ले में उनके एक अवकाशप्रप्त शिक्षक शिष्य श्री सत्यनारायण ठाकुरजी से मुलाकात होती है तो वे अनायास कहने लगते हैं कि "तुम्हारे बाबा ने वर्ग में कभी भी ज्यामिति की पुस्तक नहीं खोली। उन्हें सभी साध्य व उपसाध्य कंठस्थ थे। उनकी समझाने की शैली अनोखी थी। वर्ग में जब वे साध्य समझाने लगते थे तो लगता था कि "कोई देवदूत स्वर्ग से उतरकर लकीरें खींच रहा है।"

इसी प्रकार जब भी कोई उनका पुराना शिष्य उनकी गणित पढ़ाने की शैली का बखान करने लगता है तो मुझे अपने अभागापन का एहसास होने लगता है। काश! मैं भी उनसे पढ़ा होता!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज भी मेरे गाँव मुकुन्दपुर की दलान में बाबा के काल की खड़ी आलमारी के दराजों में ठकची उनकी किताबें, उनकी लिखी डायरियाँ, गणित के प्रश्नों के हल किये कागजात उनकी सच्ची दास्ताँ बयाँ करते हैं। मैं जब भी गाँव जाता हूँ, उनकी आलमारी में रखी किताबों पर के धूलकण झाड़ने लगता हूँ और उसी दरम्यान उन्हें उलट-पुलट कर देखता हूँ। उनकी अलमारी में रखी अनेक अंग्रेजी में लिखी गणित, दर्शनशास्त्र और नीतिशास्त्र की विदेशी लेखकों की पुस्तकें सामान्य विद्यार्थियों के लिए नहीं है। मुझे ऐसा लगता है कि आज के परिवेश में अब कम ही लोग होंगे जो ऐसी पुस्तकें पढ़ते होंगे। उन पुस्तकों की अच्छी पंक्तियाँ बाबा ने पेंसिल से रेखांकित की हैं और अपनी लेखनी से उनपर कमेंट भी लिखा है। मेरे बाबा पुस्तक के प्रेमी और अध्ययन-अध्यापन के धनी व्यक्ति रहे हैं। इस दुनिया से उन्हें अलविदा हुए 50 वर्ष हुए किन्तु आज भी उनकी आहट किसी न किसी रूप में प्रकट हो जाती है। उनकी कुछ भोजपुरी में लिखी काव्य-कृतियों ने उन्हें आज भी जीवित रखा है। उनकी प्रतिभा, कुशाग्रबुद्धि, ईमानदारी और दयालुपन की चर्चा जब लोग करने लगते हैं तो मुझे स्व. रामेश्वर सिंह 'कश्यप' उर्फ लोहा सिंह की अपराजेय निराला की ये पंक्तियाँ याद आने लगती हैं-

फूल झड़ जाते हैं, सौरभ का संसार नहीं मरता।
दीप बुझ जाते हैं, ज्योति का व्यापार नहीं मरता।
आदमी मर जाता है, आदमी का प्यार नहीं मरता।

मैं अपने बाबा की कीर्ति की गूँज आज भी जब सुनता हूँ तो मुझे 'श्रीमदभगवद्गीता' के अध्याय 2 का 22वां श्लोक याद आने लगता है-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवामि गृहाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

इस श्लोक का सार यह दर्शाता है कि जब सारा भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है, तब भी आत्मा के वाहन के रूप में प्राण और मन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोश बचे रहते हैं। पुनर्जन्म प्रकृति का नियम है। ज़ीवन के विविध रूपों के मध्य एक सोद्देश्य सम्बन्ध है।

सच्चरित्र व्यक्ति वैसा ही होता है जैसा मृग की कस्तूरी। मृग जंगल में दिखाई नहीं पड़ता है। फिर भी, उसकी कस्तूरी की सुंगध मन को मुग्ध कर देती है। पूरा वातावरण सुवास से आच्छादित हो जाता है। ठीक उसी प्रकार मेरे बाबा मुकुन्दपुरी जी के भौतिक शरीर त्यागे अर्द्धशतक हो गये, परन्तु उनकी कीर्ति की सुगन्ध का व्यापार आज भी कायम है।

जैसा कि मैंने अपने गाँव के बड़े-बुर्जुगों से सुना है, मेरे बाबा केवल पुस्तक प्रेमी ही नहीं थे बल्कि सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़कर भागीदारी निभाते थे। उन्हें अपने गांव की मिट्टी से अगाध प्रेम था। प्रथम पंचवर्षीय योजना 1950-51 में प्रारम्भ की गई जिसमें पुस्तकालय निर्माण पर जोर दिया गया था तथा भारत सरकार पुस्तकालय निर्माण हेतु अनुदान देती थी, 1951 में बाबा ने गाँव के नवयुवकों के साथ मिलकर पुस्तकालय समिति बनाई जिसके वे अध्यक्ष थे। उनकी अध्यक्षता में सरकार से पुस्तकालय को अनुदान मिला और गाँव में अध्ययन-अध्यापन का सुनहला वातावरण बना था। मैंने सुना है कि उस पुस्तकालय में बहुत अच्छी-अच्छी धार्मिक पुस्तकें, कोर्स की पुस्तकें खरीदी गई थीं। पुस्तकालय के साथ वाचनालय भी कार्य करता था जिसमें डाक से अखबार (हिन्दी-अंग्रेजी में) प्रति दिन आ जाता था और लोग बड़े शौक से अखबार पढ़ते थे। उस पुस्तकालय में रेडियो भी लगा था। उस समय रेडियो दुर्लभ उपकरण था जिसे गाँव के लोगों ने न देखा था और न उनकी आवाज ही सुनी थी। मेरे बाबा के प्रयास से लोगों को 50 के दशक में रेडियों से समाचार सुनने का सुअवसर मिला, यह गर्व की बात है। उस पुस्तकालय की चर्चा आज भी गांव में होती हैं जबकि आज न तो पुस्तकालय है और न उसके निर्माणकर्त्ता मेरे बाबा और न ही उस पुस्तकालय का अस्तित्व। मुझे यह सुनने को मिला है कि मेरे बाबा के निधन के बाद पुस्तकालय संचालन कमिटी बिखर गई और पुस्तकालय में रखी पुस्तकें, फर्नीचर, रेडियो, रेक आदि सामाग्रियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को लोगों ने अपनी-अपनी निजी सम्पत्ति बना ली। मुझे विश्वास है कि मेरे बाबा अगर जीवित रहते तो उस पुस्तकालय की ऐसी दुर्दशा नहीं होती।

मेरे बाबा के दो छात्र, मेरे ही परिवार के हैं उनकी उम्र 70 वर्ष से कुछ अधिक ही होगी वो हैं- श्री तीर्थनाथ पाण्डेय और श्री जीतन पाण्डेय, ये लोग बाबा के गरीब विद्यार्थियों के प्रति प्रेम और दयाशीलता के संबंध में कहते हैं कि गाँव के पीरो हाई स्कूल के उनके विद्यार्थी जब घर गणित के प्रश्न पूछने चले आते थे तो वे प्रतिदिन उनसे पहला प्रश्न करते थे कि "तू लोग आज का खा के आइल बाड़।" उस समय लोगों के समक्ष भोजन, वस्त्र और आवास सबसे विकट समस्या थी। जब बाबा के प्रश्न देने में बालक विद्यार्थी विलम्ब करते या संकोच करते तो मेरे बाबा भाँप लेते थे कि आज इस लड़के ने कुछ खाया नहीं है, भूखा है। तब घर में जो भी बनी हुई खाने की सामग्री रहती थीं, बाबा उस छात्र के सामने रख देते यह कहते हुए कि "पहले तू पेट के पूजा कर तभी हम गणित के प्रश्न बताइब त समझब।" बाबा की यह कार्यशैली दैनिक थी। कभी-कभी मेरी आजी से बाबा की भिडंत भी हो जाया करता थी इसकी चर्चा आज भी आजी हमलोगों से करती हैं। वह कहती हैं कि तुमलोगों के बाबा की दानशीलता के प्रभाव से कभी-कभी घर के औरतों को उपवास भी रह जाना पड़ता था। इस प्रकार मेरे बाबा के ऐसे कई अनोखे आचरण सुनने को मिलते हैं जो उनकी महानता को दर्शाते हैं। आज वैसे शिक्षक सचमुच दुर्लभ हैं या नहीं हैं।

गरीब मजदूरों के प्रति बाबा का अथाह स्नेह था। जब अपने बनिहार (मजदूर) को नंगे बदन देखते थे तो अपनी पुरानी गंजी या कमीज निकाल कर बलात् पहना देते थे। ऐसी चर्चा हमने लोगों से सुनी है। उनकी लिखी कविता की ये पंक्तियाँ उनकी दयाशीलता को प्रकट करती है-

"हई देखी बनिहरवा आइल,
चेहरा बा एकर गरमाइल।
खाली पेट बारह बजल बा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धूर-धाकर से देह भरल बा।
कबहूँ ना देखीं सुस्ताइल।
हई देखीं बनिहरवा आइल।।"

उपर्युक्त कविता एक मजदूर की गरीबी और बेबसी की एक लम्बी कहानी है जिसे पढ़ने से लगता है कि गरीब मजदूर के दर्द से बाबा को कितनी पीड़ा होती थी। गरीब लोग बाबा के असली मित्र थे। वे उनके दुख देखकर आहत हो जाते, तभी ऐसी कविता उनके हृदय का उद्‌गार बनकर फूटी है।

मेरे बाबा एक आदर्श शिक्षक थे। अपने विषय गणित में वे चर्चित रहे जिसकी चर्चा आज भी होती है। उन्होंने अपने जीवन में हजारों छात्रों को निःशुल्क अपने घर पर भी शिक्षा दी। गणित जैसे शुष्क विषय पढ़ाने के बावजूद उन्हें साहित्य से अपार प्रेम था। उनकी कुछ भूली-बिंसरी कविताएँ दुबारा छप रही हैं। जो वैसी ही ज्ञानवर्द्धक, मार्गदर्शक व व्यावहारिक हैं, जैसे बाबा तुलसीदास जी की चौपाइयाँ व दोहे। मेरे बाबा तुलसीदास जी के परम भक्त थे, किन्तु नियति ने उन्हें इस संसार में अधिक दिनों तक जिंदा रखना उपयुक्त न समझा और वे 38 वर्ष की अल्पायु में उन्हें इस दुनिया से बुला लिया। उनके पुत्र अपने पितृ के सुख से वंचित रह गये। उनके अचानक निधन से विद्यालय और गाँव के विद्यार्थी भी अनाथ हो गये थे। उनकी दूसरी पीढ़ी के लोग उनको अपनी आँखों से न देख सके हैं, सचमुच सबसे बड़े अभागे हैं। आज भी उनकी चर्चा से हम चकित हो जाते हैं। मुझे अपने ऊपर तरस आता है कि हम उनकी कीर्ति को आगे बढ़ाने में अक्षम साबित हो रहे हैं। मेरे बाबा मुकुन्दपुरीजी के विषय में यह संस्मरण उनके सहकर्मियों व विद्यार्थियों और गाँव-घर के लोगों की चर्चा के आधार पर लिपिबद्ध किया गया है। वैसे महान शिक्षक की सच्ची श्रद्धांजलि तो उनके आचरण के अनुकरण से ही समर्पित की जा सकती है। इन्हीं चंद शब्दों के साथ बाबा के चरणों में कोटि-कोटि नमन।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबूजी की यादों में : मेरे अपने बाल संस्मरण

डॉ० राजेन्द्र पाण्डेय*
मुकुन्दपुरीजी के ज्येष्ठ पुत्र

1. प्राथमिक विद्यालय मुकुन्दपुर के परिसर में बाबूजी के साथ कीर्त्तन :-

मुझे याद आ रहा है कि सन् 1960 में मेरे घर से 100 मीटर की दूरी पर पश्चिम प्राथमिक विद्यालय बनकर तैयार हुआ था और उस विद्यालय में पढ़ाई शुरू होने के एक दिन पूर्व 24 घण्टे का हरिकीर्त्तन हुआ था। मेरे बाबूजी मुझे हरिकीर्त्तन गाने के लिए शाम में स्कूल पर ले गये थे। उस समय सीता-राम, सीता राम ..... धुन का ही कीर्त्तन हुआ करता था। मुझे स्मरण आ रहा है कि वहाँ एक दीपक जल रहा था और एक कलश रखा था, विद्यालय के बीच मैदान में। उस कलश और दीप के चारों तरफ लोग परिक्रमा करते हुए सीता-राम, सीता-राम की धुन में कीर्त्तन गा रहे थे। उस समय शायद "हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण ......" कीर्त्तन चलन में नहीं हुआ होगा। मैं भी अपने बाबूजी के साथ तुतली बोली में कीर्त्तन गाया है, घूम-घूमकर। कभी कभी बाबूजी गोदी ले लेते थे, जब मैं थक जाता था। उस समय उम्र 4 वर्ष के करीब होगी। बाबूजी ने उसी उम्र में सम्पूर्ण श्री हनुमान चालीसा मुझे कठंस्थ करवा दिया था। मैंने वहां उपस्थित लोगों को हनुमान चालीसा का पाठ गा-गा कर सुनाया था।

2. बाबूजी द्वारा प्रथम वर्ग में मेरा नामांकन : जीवन में विद्यालय प्रवेश का प्रथम दिन :-

वर्ष 1961 में पहली कक्षा में बाबूजी अपने गांव के प्राथमिक विद्यालय में मेरा नामांकन कराने के लिए गए थे। उस समय विद्यालय प्राइवेट था। एक शिक्षक पीरो थाना के मनैनी गांव के श्री रामनरेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेय थे, जो बाबूजी के पीरो हाईस्कूल के छात्र थे। मुझे याद है कि गोइठा के आग पर घी-सकील का हवन हुआ था और मिश्री का प्रसाद वितरण हुआ था। वह मेरा विद्यालय का प्रथम दिन था। 'पाठपूजन' के बाद गुरुदक्षिणा बाबूजी ने गुरुजी को मुझसे दिलवाया था और चरण स्पर्श कराया था। मुझे याद आ रहा है कि लकड़ी की पाटी पर मंत्र लिखा गया था। वह मंत्र बाबूजी ने लिखा था। वह गायत्री मंत्र था जिसे उन्होंने मुझे रटवा दिया था। विद्यालय में प्रवेश का वह मेरा पहला दिन और गुरुजी का स्नेहभरा वचन आज भी ताजा है। गुरूजी ने प्रसाद वितरण के बाद मुझे अपनी गोद में लेकर घुमाया भी था। वह सब मेरे बाबूजी के प्रताप का ही परिणाम था।

3. बाबूजी के साथ पीरो हाई स्कूल में सरस्वती पूजा के अवसर पर नाटक मंच से हनुमान चालीसा का पाठ :-

मेरे पिता मुकुन्दपुरी जी साइकिल से पीरो हाई स्कूल में पढ़ाने के लिए जाया करते थे। कभी-कभी स्कूल में कोई उत्सव होता, तो वे मुझे साइकिल से अपने स्कूल ले जाते थे। उन्होंने अपनी साइकिल के अगले फ्रेम में बच्चे वाला एक गद्देदार सीट भी लगवा ली थी। मुझे याद आता है कि सन् 1962 में पीरो हाई स्कूल के छात्रों ने सरस्वती पूजा के अवसर पर रात्रि में अभिनय का आयोजन किया था। बाबूजी मुझे भी नाटक दिखाने के लिए स्कूल ले गये थे। मैंने नाटक के मंच से अपने तुतले-मीठे लय में श्री हनुमान चालीसा, संकटमोचन और बजरंगबाण का पाठ किया था। बाबूजी भी मंच पर बैठकर उस आनन्द में शामिल हुए थे और श्रोता के साथ ताली बजाते थे, जब पाठ का समापन होता था। उस समय मुझे किताब नहीं पढ़ने आता था। मेरी आयु 4 वर्ष के करीब होगी। मेरे बाबूजी ने घर पर स्वयं हनुमान चालीसा, संकटमोचन और बजरंग बाण का पाठ बोलकर कंठस्थ करा दिया था।

मेरे बाबूजी जब भी पीरो हाई स्कूल से पढ़ाकर साइकिल से घर लौटते थे तो प्रत्येक दिन कुछ न कुछ मिठाई अवश्य लाते थे। शाम में जब दरवाजे पर पहुंचते तो साइकिल की घण्टी बजा देते और हम तीनों भाई समझ जाते थे कि बाबूजी रसगुल्ला लेकर आ गये हैं और आँगन से दौड़कर मिट्टी के पात्र में पत्ते से ढक्क बँधा हुआ पात्र ले लेते और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाने का काम आरम्भ कर देते थे। मैं भाई में सबसे बड़ा था मुझसे छोटा दूसरा भाई हरेन्द्र पाण्डेय और तीसरा भाई बहुत बच्चा था। वह एक वर्ष से कम का ही होगा। कभी-कभी बाबूजी रसगुल्ला के अतिरिक्त मूंगफली भी लाते थे, क्योंकि हमलोग मूंगफली बड़े चाव से खाते थे। छोटे होने के कारण मुंगफली दाँत से फोड़ते, कभी-कभी बाबूजी खुद अपने हाथ से दाना निकाल कर बैठ कर खिलाते थे।

बाबूजी ने वर्ष में दो बार (दशहरा और होली) अवश्य ही हमलोगों को नया वस्त्रधारण करवाया है और अपने साथ दशहरा में पीरो दुर्गाजी दिखाने के लिए साइकिल से ले जाया करते थे और मिठाई, खिलौना अथवा जो भी उनसे मांगा खरीद कर देते थे। अपने बच्चों से उनका असीम प्यार था। होली में भी वे अपने साथ मुझे पूरे गांव घुमाया है। मुझसे वरीय लड़के जो मेरे बाबूजी के विद्यार्थी थे ताड़ के पत्ते की घड़ी बनाकर मेरी दाहिनी कलाई में पहना देते थे, तब मैं बहुत खुश हो जाया करता था। लेकिन इसके बदले में मुझे हनुमान चालीसा गा कर सुनाना पड़ता था।

भभूसरा मेला की साइकिल से यात्रा

मुझे वर्ष तो पूरा याद नहीं है लेकिन 1961 या 62 हो सकता है। प्रत्येक वर्ष संक्रान्ति पर्व के अवसर पर भभूसरा में नदी के तट पर मेला लगता था। भभूसरा मेला को पतालपुरी के नाम से भी जाना जाता था। मेला घुमाने के लिए बाबूजी चूड़ा-दही खाने के बाद साइकिल से हमको और छोटे भाई हरेन्द्र को लेकर चले। भभूसरा मेला पसउर गांव से 4 कि.मी. और मेरे गांव से 8 कि.मी. पड़ता होगा। बाबूजी साइकिल से गांव के दक्षिण के आम-बगीचा को पार कर कच्ची सड़क पकड़े हमलोगों को साइकिल पर आगे बैठाकर ले चले रास्ता उबड़-ख़ाबड़ थी और पतली सड़क के दोनों तरफ करहा (पइन) था जिसमें पानी बह रहा था। बाबूजी को साइकिल चलाने में कठिनाई हुई होगी- साइकिल बांयी तरफ के करहा में जा गिरी और हमलोग पानी में भींग गये और कीचड़ से लोट-पोट भी गये। खैरियत यह था कि चोट नहीं आई थी लेकिन हमदोनों भाई चिल्ला-चिल्ला कर रो रहे थे। बाबूजी ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोदी में लेकर चुप कराया, फिर लौट कर घर आये। हमलोगों को फिर स्नान कराया। दूसरा नया कपड़ा पहनाया और मेला घुमाने के लिए गांव के ही अपने छात्र श्री सीताराम राय को बुलाकर कहा कि इन दोनों बच्चों को भभूसरा मेला दिखाकर ले आइये। सीताराम राय बाबूजी के बड़े ही प्रिय छात्र थे। बाबूजी ने उनको कुछ रुपया-पैसा दिया और कहा कि आप भी और बच्चे जो भी खाये, खिला देना। खिलौना मांगे, खरीद देना। मुझे याद है कि सीताराम राय मुझे और मेरे छोटे भाई हरेन्द्र को पैदल ही मेला लेकर चल दिये। हमलोग जब पैदल चलते-चलते थक जाते थे तो राय जी कभी-कभी हमको और कभी हरेन्द्र को गोद ले लेते थे। मुझे मेला में भुलाने की घटना भी ताजा है। सीताराम राय जी ने मेला में हमदोनों को घुमाया, मिठाई, छोला, आदि खिलाया और नदी के तट पर हमदोनों भाई को बैठाकर खुद घुमने निकले, मेले में बच्चों, जवानों, बूढ़ों, औरतों की भारी भीड़ हुआ करती थी। बच्चे का स्वभाव जब राय जी को आने में देर हुई तो उन्हें खोजने के लिए फिर मेले में हमलोग घुस गये। जब रायजी लौट कर वहां पहुंचे तो केवल हरेन्द्र मेरा छोटे भाई अकेले वहाँ रो रहा था। उन्हें गोदी में लेकर सीताराम राय जी मुझे ढूँढ़ने मेले में घुसे, माइक से एनाउन्स करवाया और मेले में से मुझे खोज निकाला और रायजी ने मुझे कड़े स्वर में डाँटा, मैं सिसक-सिसक कर रोने लगा और कहा कि मैं बाबूजी से कह दूँगा कि आपने मुझे पीटा है। इसके बाद सीताराम राय ने मुझे खूब दुलारा-पुचकारा और मुझे कन्हैया लेकर घर पहुंचा दिया। पिता के स्नेह ने मेला घूमने का शौक इस प्रकार पूरा कर दिया था।

बाबूजी से मेरी प्राथमिक शिक्षा

बाबूजी ने अक्षर का ज्ञान कैसे कराया मुझे बखूबी याद है। उन्होंने मिट्टी के 'क' ख, ग, ... इत्यादि। अपने से बनाकर अक्षर से परिचय कराया था। गिनती भी मिट्टी की गोली बनाकर करवाई थी। उनके द्वारा मिट्टी के गढ़े गये अक्षर की सुंदरता मुझे आज भी याद आती है। बाबूजी ने बाद में खली से 1 से 40 तक का पहाड़ा, मिटगारहा, सवइया, डेढ़ा, अंगुठा, धमुचा, आदि कोठिलाओं (मिट्टी के बना हुआ स्टोर) पर लिख दी थी जो उनके अन्तकाल के बाद भी उनकी स्मृति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की याद दिलाती थी। उस समय चौकचन्दा के समय जब छात्र-शिक्षक घर के आँगन में प्रवेश करते थे और बाबूजी द्वारा लिखे पहाड़ा आदि को देखते तो दंग रह जाते और सबकी आँखों से अश्रु धारा बहने लगती थी, मुझे प्रत्येक चौकचंदा के दिन शिक्षकों की संवेदना बाबूजी की अल्पायु निधन पर देखने को मिली है।

बाबूजी द्वारा मुझे विलायत पढ़ने के लिए भेजने का सपना

जब बाबूजी मुझे पहली कक्षा में पढ़ाते थे और जो मुझे पढ़ाते उसे मैं तुरंत याद कर लेता था और उन्हें सुना देता तो वे प्रसन्न होकर हमेशा कहते कि तुम्हें पढ़ने के लिए मैं विलायत में नामांकन कराऊँगा। जब मैं प्रथम वर्ग में अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और दूसरी कक्षा में प्रवेश किया तो मुझे हिन्दी की सारी कविताएं एक-दो दिन में ही याद हो गईं और मैं किताब बिना अक्षर मिलाये तेजी से पढ़ने लगा था। मेरे इस पारफारमेंस को देखकर बाबूजी ने मुझे विलायत भेजने की अपनी धून तेज कर दी थी।

मैं दूसरे वर्ग में पढ़ता था। अब मेरी आयु 6 वर्ष से ज्यादा हो गई थी। मेरे बाबूजी ने पीरो हाई स्कूल छोड़कर मझियांव उच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापक का पदभार ग्रहण कर लिया था। अभी वहां गये 6 माह से अधिक नहीं हुआ होगा कि उन्हें तेज बुखार आया और घर पर ही एक-दो दिन आराम करने लगे। मिट्टी का दो बड़ा-बड़ा घर था। उसी एक घर में चारपाई पर लेटे रहते थे और गांव और घर के लोग उनकी सेवा में जुटे रहते थे। कोई तलवा मलता तो कोई दवा देता तो कोई सर मालिश करता, लेकिन उन्हें बड़ा तेज बुखार था, वे कभी-कभी बुखार में डूब जाया करते थे। एक दिन की घटना मुझे याद है कि जब मैं अपने स्कूल से पढ़कर शाम में लौटा तो बाबूजी के पास गया तो बाबूजी बुखार में डुबे हुए थे। उन्होंने कहा कि "विलायत से पढ़ के आ गइल?" उनके इस वाक्य से मुझे गहरा चोट लगा, मैं बहुत दुखी हुआ कि मेरे बाबूजी मुझ पर खिसला गये हैं। हालाँकि ऐसा उन्होंने तेज बुखार की स्थिति में कहा था।

बुखार की बीमारी उनकी मृत्यु का बहाना बनी। दो-तीन दिन गांव पर बुखार की स्थिति में रहने के बाद लोग उन्हें पीरो तिवारी डाक्टर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अस्पताल में ले गये जहां उनकी दवा होने लगी। तिवारी डाक्टर एम.बी.बी.एस. डाक्टर नहीं थे, फिर भी उनकी प्रैक्टीस जोरों पर थी। उस समय पीरो में एम.बी.बी.एस. डाक्टर कोई नहीं था। तीन-चार दिन के बाद बाबूजी की स्थिति बेहतर हो गई। उन्हें पुराने चावल का पथ्य दिया गया। हम सबों से प्रेम से बात करने लगे थे। उनके साथ मेरी ईया (माता जी), फुआ, (जमुना फुआ) और चचिआ तथा मझिआंव गांव के लोग भी वहां देख-रेख में रहते थे।

नियति का कुचक्र आया और अचानक बाबूजी रात्रि में बेहोश हो गये। लोगों ने पीरो से ले जाकर सदर अस्पताल, आरा में भर्त्ती कराया। मुझे याद है, मैं और मेरे दो छोटे भाई हरेन्द्र और सुरेन्द्र भी माँ के साथ में थे। उस समय मेरी उम्र 7 वर्ष, हरेन्द्र की उम्र 4 $^{1}/2$ वर्ष और सुरेन्द्र की उम्र 2 वर्ष की थी और सबसे छोटा भाई महेन्द्र माँ के पेट में ही था। अस्पताल में हम लोग जमींन पर लिटे रहते थे। मेरी जमुना फुआ, मेरी चाची और मेरी माता वहां थीं और गोतिआ के पांच-सात लोग थे। अस्पताल में मझियांव गांव के जहां मेरे बाबूजी हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक थे, सैकड़ों लोग अस्पताल में रहते थे। पिताजी बेहोश थे। बाबूजी के अभिन्न मित्र प्रो. रामेश्वरनाथ तिवारी जी भी अस्पताल में बराबर डाक्टरों से सिफारिश में लगे थे। मेरे बाबूजी ने 12 अप्रैल 1963 की मध्य रात्रि में संसार से विदाई ले ली। अपनी माता और फुआ (जमुना फुआ) का रूदन-क्रदन की आवाज आज तक मेरी कानों में गूंजती है। सुबह में बाबूजी की अर्थी निकली। जिसमें भारी भीड़ थी और सिन्हा गंगा घाट पर उनकी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई। मुखाग्नि लोगों ने मुझसे दिलवाई थी। मैंने आग लूंड़ा में लेकर फेरी लगाया था और बाबूजी का उस समय का मुँह की बनावट भी मेरे दिमाग में बैठी हुई है। लोगों ने बाबूजी के निधन का खबर मेरे पितामह बालदेव पाण्डेय (पिताजी के बाबूजी) को नहीं दी थी। बाबूजी मेरे बाबा का इकलौता संतान थे। मुझे याद है कि जब लोग गांव अन्त्येष्टि के बाद आये तो बाबा को खबर कहीं से मिली, किसने कहा, मुझे पता नहीं, बाबा रोये नहीं, लेकिन उन्होंने अपना प्राण त्याग देने की ठान ली और उनको सम्भालने में लोगों को कितनी परेशानी हुई उसे शब्दों में नहीं कहा जा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकता। मेरे जीवन में वह सबसे दुखद और हृदयविदारक दृश्य था। दुश्मन को भी भगवान ऐस दिन न दिखाये।

बाबूजी की शोहरत और मेरा मार्गदर्शन

बाबूजी का नश्वर भौतिक शरीर तो पंचतत्व में विलीन हो गया, परन्तु उनका मार्गदर्शन, आशीर्वाद मुझे आज तक मिल रहा है। गांव के लोग, जवार के लोग, कुटुम्ब सभी लोगों ने मुझ से बाबूजी की प्रतिष्ठा कायम रखने की गुहार लगाई है। समाज की शुभकामनाएं मेरे साथ रही। बाबूजी के यशगान लोगों के मुँह से जीवन भर सुनता रहा। बाबूजी एक ईमानदार इंसान थे। कुशाग्रबुद्धिसम्पन्न थे। उन्होंने अपनी 38 वर्ष की आयु में संसार से विदाई ले ली। विवेकानन्द की तरह उन्होंने भी 40 वर्ष नहीं देखने के लिए संकल्प ले रखा था। मैं अनुभव करता हूँ कि बाबूजी की डायरी, कॉपियाँ, उनकी कविताएं जीवन भर पढ़ता रहा। लेकिन इस जन्म में मैं उनकी बराबरी कौन कहे, उनके पासंग भर भी अपने को नहीं बना सका। बाबूजी का निधन मुझे बड़ा ही नाजुक टुअर बना दिया था, परन्तु उनकी आत्मीय शक्ति जिस मुकाम पर पहुंचाया उसमें मेरा शून्य पराक्रम और पितृ कृपा (जो मेरे गुरु भी हैं) का सम्पूर्ण हाथ रहा है। मैं कुछ भी करूँ, जन्म-जन्मान्तर तक अपने पिता का ऋण वसूल नहीं कर सकता।

बाबूजी द्वारा उनके पिता की सेवा

मेरे बाबूजी के बाबूजी (मेरे बाबा) स्व. बालदेव पाण्डेय दमा के रोगी थे। बाबा के साथ मुझे अधिक वर्षों तक साथ रहने का अवसर मिला। मेरे बाबूजी अपने पिता के इकलौते पुत्र थे। एक पुत्र द्वारा अपने पिता की सेवा करते हमने एक माह के करीब देखा है। वर्ष 1962 की बात है। मेरे बाबा पर दमा का जबरदस्त अटैक हुआ था। उस समय उनकी आयु 80 के करीब होगी। मेरे बाबा पीरो नसर खाँ के प्राइवेट क्लिनिक में भर्त्ती थे। वे चल-फिर नहीं सकते थे। अस्पताल में बाबूजी ने एक माह तक सेवा की थी। उस अस्पताल में उस समय नर्स-कम्पाउंडर नहीं थे। दवाई-सूई खुद नसर खाँ करते थे, जो पीरो के जाने-माने बुजुर्ग डाक्टर थे। मेरे बाबूजी अस्पताल में बाबा का पैखाना-पेशाब, थूक-खंखार लेकर बाहर खेत में फेंका करते थे। उनका कपड़ा स्वयं साबुन से साफ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करते थे और अपने पिताजी के पास बैठे रहते थे। बाबा को देखने के लिए गांव से लोग आते थे और शाम में गांव चले जाते थे। पीरो हाई स्कूल से बाबूजी के साथ पढ़ाने वाले शिक्षक भी प्रतिदिन आते और बाबूजी को श्रवण कुमार की संज्ञा देते थे। गांव में चर्चा थी कि मेरे बाबा अबकी इस बीमारी में दुनिया से चल देगें। लेकिन बाबूजी की पितृ-सेवा तथा नसर खाँ डाक्टर की औषधि ने कमाल कर दिया। बाबा जो कई दिनों तक बोल-चाल भी नहीं की थी, चंगा होकर गांव आये। मेरे बाबा स्व. बालदेव पाण्डेय को 'श्रीरामचरितमानस' आदि से अंत तक सातों काण्ड कंठस्थ था और बड़े लय से मानस पाठ किया करते थे। उन्हें कई अन्य ग्रंथ जैसे सुदामा चरित्र, लक्ष्मण बाण जैसी कविताएँ भी उन्होंने कंठस्थ थी। बाबा मेरे बाबूजी को हमेशा इन ग्रंथों की कथा मुहजबानी सुनाया करते थे। अपने वृद्ध पिता को मेरे बाबूजी कभी खोना नहीं चाहते थे। अपने पिता की सेवा जो मेरे बाबूजी ने की हैं, वह सेवा एक पत्नी भी अपने पति को नहीं कर सकती। मुझे आज भी पीरो के उस अस्पताल में बाबूजी की अपने पिता की सेवा का स्मरण है। सचमुच मेरे बाबूजी कलियुग के श्रवणकुमार थे। मेरी आजी के निधन के बाद उन्होंने एक वर्षो तक शोक मनाया था और उस वर्ष होली का त्योहार नहीं मनाया था। जैसा कि मैंने अपने बाबा और अपनी माता जी से सुना है। उन्होंने अपनी भोजपुरी कविता में उसका वर्णन भी किया है जो इस पुस्तक में शामिल है - "कइसन असो के फागुइया हो, मनवा ना लागे बिनु मइया हो।"

बाबूजी द्वारा आजी की सेवा तो मैंने अपनी आँखों से नहीं देखी, देखें कैसे? आजी के दुनिया से चले जाने के 2 वर्ष के बाद मेरा जन्म हुआ था। परन्तु अपने बाबा की सेवा में बाबूजी की तत्परता जो मैंने पीरो के अस्पताल में देखी है, वह सबसे सम्भव नहीं है। अतः अध्यात्मिक दृष्टिकोण से बाबूजी को श्रवणकुमार की संज्ञा देना सही प्रतीत होता है। आह! भारत के तब के गांव और लोग तथा आज के भारत के गांव और लोग में कितना फर्क आ गया है। यह अंतर कल्पना से परे है।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमार चाचा 'मुकुन्दपुरी जी' गणित के जादूगर

तीर्थ नाथ पाण्डेय*
मुकुन्दपुरीजी के भतीजा

एक दिन रजीन्दर भाई हमारा से कहले कि बाबूजी के 'भोजपुरी कविता' फिरू नया रूप में प्रकाशित हो रहल बा, आ बाबूजी से जुड़ल लोगन के संस्मरण भी नया किताब में छपी – तू हू आपन एगो संस्मण लिख के दे द, तू त बाबूजी के भतीजा बाड़ऽ आ आठवाँ से ग्यारहवा कक्षा के उनकर शिष्य भी रह। इ शुभ संदेश सुन के हमरा खुशी का ठिकाना न रहल। चाचा के साथ हम घर से पीरो प्रतिदिन साथे पढ़े जात रही औरू साथे शाम में पीरो से घरे लौटत रही। चाचा जी के गुरु अवरु पिता से बढ़के प्यार मिलल बा। हम कभी ना भुला पाइब। उनका से पढ़ला के कई संस्मरण अजुओं हमारा याद में बाटे।

वर्ष 1958 में तुलसी जयंती के अवसर पर एक घटना आज भी हमरा याद आवता ओकरा के हूबहू सुनावत बानी। तुलसी जयंती पीरो हाई स्कूल के बगीचा में बड़ा धूम-धाम से मनावल जात रहे। साल 1958 रहे, हम मैट्रिक के विद्यार्थी रहीं। सब शिक्षक आ अतिथि कुर्सी पर बैठल रहे लोग आ विद्यार्थी जमींन पर भाषण सुनत रहन। आरा के जैन कॉलेज से हिन्दी विभाग के जाने-माने प्रोफेसर भी बुलावल गइल रहन। चाचाजी के सबसे प्रिय दोस्त प्रो. रामेश्वर नाथ तिवारी जी भी रहीं। दिन के 2 बजे करीब एगो जेन्टल मैन सूट-बूट में अइनी आ मुकुन्दपुरी मास्टर से मिले के इच्छा जाहिर कइनी। संयोग से उहां के हमारा से पूछनी कि ''बबुआ! मुकुन्दपुरी मास्टर साहब कौन हंई, हम धीरे से इशारा करके बता देनी आ कहनी की उहां के हमार चाचा बानी। हम उनका से उनकर परिचय पूछनी त उहां के बतवनी कि हम सूर्यपूरा हाई स्कूल में विज्ञान शिक्षक बानी। हम जरा मुकुन्दपुरी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से मिलल चाहत बानी। हम उ विज्ञान शिक्षक से कहनी कि इन्तजार करे के पड़ी। ई बहुत बड़ा गोष्ठी बा। शाम के पांच भी बज सकेला। मास्टर साहब भी हमरे साथ बइठ के तीन घण्टा से ज्यादा प्रतीक्षा कइनी। हमरा बुझाइल कि कवनो उहां के चाचाजी से बहुत अरजेंट काम होई।

शाम के करीब साढ़े पांच बजे जब गोष्ठी सम्पन्न भईल त हम उ विज्ञान शिक्षक महोदय के चाचा से मिलावे खातीर उहाँ पहुंचनी, चाचा भी हमरा साथ घर चले खातीर बेताब रहीं। सूर्यपूरा हाई स्कूल के उ साइन्स टीचर अपना स्कूल के लोकप्रिय शिक्षक रहीं। चाचाजी के प्रणाम करके आपन परिचय बतवनी आ कहनी कि हम रउआ से पढ़ल चाहत बानी। हम एगो गणित के प्रश्न में कई दिन से जूझत बानी ओकर सामाधान खोजत बानी, हमरा के पढ़ा दीहीं। चाचा खड़े-खड़े कहनी कि पढ़ीं, हम सुन तानी, हमरा गांव जाये के अबेर हो रहल बा। उ मास्टर साहब प्रश्न पढ़े लगनी, अंकगणित और बीज गणित से जुड़ल उ बहुत बड़ा प्रश्न रहे। जइसहीं प्रश्न पढ़ल समाप्त भइल कि चाचाजी तपाक से उत्तर बोल देनी। उत्तर सही सुन के उ विज्ञान शिक्षक कहनी कि गुरुजी! अपने के सब गणित के प्रश्न के उत्तर याद का कलेले बानी? एह प चाचा जी मुसकइनी आ कहनी कि रउआ प्रश्न बोलत रही आ हम बनावत जात रही। सूर्यपूरा के मास्टर साहब चाचाजी से निहोरा कइलन कि हमरा कॉपी प जरा एकरा के बना दीही। चाचाजी पांच मिनट में ओह प्रश्न के कागज पर बना देनी। जिज्ञासु शिक्षक चाचा जी के पैर छुअनी आ विदाई लेनी। सचमूच में चाचाजी गणित के जादूगर रहीं।

चाचा दिन के 10 बजे शाम के चार बजे तक आठवा से ग्यारहवीं कक्षा तक कई सेक्सन में गणित पढ़ावत रहीं। शाम के अंतिम घण्टी में पढ़ावत-पढ़ावत उहां के जब कभी थक जात रहीं त ब्लैक बोर्ड पर तेजी से हिसाब बना दिही आ जान-बुझ के कुछ स्टेप छोड़ देत रहीं। हमारा आज तक याद बा कि कवनों बच्चा पूछस कि मास्टर साहब "इ कइसे आइला?" त चाचा मुसुका के झट से कह देस कि इ छू मंतर से आ गइल। बाद में ओह बच्चा के स्पेशल समझा देस। उनकर गणित पढ़ावे के शैली अइसन रहे कि गणित जैसे निरस विषय के शरबत बना के पियावत होखस। अंत में हम इहे कहब कि चाचाजी (मुकुन्दीपुरी) लेखा गणित के शिक्षक "भूतो न भविष्यति।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(श्री नागेन्द्र गौतम)
[illegible] (कुशीनगर) } [illegible]

गउरवा देखलीं बा [illegible], कि होई
सेनुर [illegible] बा।

कवना रहे अइसन पुरुवा कि [illegible],
कि भइल [illegible] बा।

सुनि के [illegible], कुछ ना पूछीं [illegible],
[illegible] बा [illegible]।
कि होई ..... [illegible] बा।

रहन [illegible] २ लोग, [illegible];
[illegible]।
कि होई .... [illegible] बा।

[illegible] आइल [illegible], [illegible]
[illegible]।
कि होई ...... [illegible] बा।

रहि भर के [illegible], [illegible] रहन [illegible],
[illegible] पर [illegible]।
कि होई .... [illegible] बा।

[illegible], [illegible],
[illegible]।
कि होई ..... [illegible] बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे एकदम [illegible], [illegible] आई,
[illegible], [illegible] के [illegible]।
कि होई . . . . . [illegible] ना।
[illegible] लाल [illegible], [illegible],
[illegible]।
कि होई . . . . [illegible] ना।
[illegible] - [illegible], [illegible],
[illegible] 'मिल' के [illegible]।
कि होई . . . . . . [illegible] ना।
[illegible], [illegible] से [illegible],
[illegible]।
कि होई . . . . . [illegible] ना।
[illegible], [illegible] के [illegible],
[illegible], [illegible]।
कि होई . . . . [illegible] ना।
कईले [illegible], [illegible] नाहीं;
'[illegible] - [illegible]' [illegible] ना [illegible]।
कि होई . . . . . [illegible] ना।
[illegible] हाथ-जोड़, [illegible] के [illegible],
[illegible] २ [illegible] के [illegible]!
कि होई . . . . . [illegible] ना!
[illegible] सिंह [illegible], [illegible] काम कईलन,
[illegible] से, [illegible] ना [illegible]!
कि . . . . [illegible] ना।
[illegible] के [illegible], [illegible],
[illegible] गइलन [illegible]।
कि होई . . . . [illegible] ना।
[illegible] सरकार के [illegible], [illegible] में [illegible],
[illegible] से [illegible]।
कि होई . . . . . . [illegible] ना।
[illegible], पुलिस [illegible], [illegible] के [illegible],
~~[illegible]~~
[illegible] होई [illegible], [illegible]।
कि होई . . . . [illegible] ना।
[illegible] [illegible], [illegible],
[illegible] नाहीं [illegible]।
कि होई . . . . . [illegible] ना।
[illegible] के [illegible], [illegible],
[illegible] के [illegible] ना [illegible]।
कि होई . . . . . . [illegible] ना।
[illegible] - [illegible] आई, [illegible],
[illegible] बाटे, [illegible]।
कि होई . . . . . . [illegible] ना।
[illegible], [illegible] [illegible] .
[illegible] २ [illegible]।
कि होई . . . . [illegible] ना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[illegible] गिरकटोंल जोंस, [illegible] के कमिनारे,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] . . . . [illegible] ना।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] के [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] . . . . . [illegible] ना।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], कुछो [illegible] ना [illegible],
[illegible] हो के [illegible] के [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] . . . . . [illegible], [illegible] ना॥

[signature]
२५/११/६२

विज्ञापन-

"भोजपुरी कविता"

'भोजपुरी कविता'— ~~इसके लेखक~~ इस पुस्तक के लेखक सुप्रसिद्ध भोजपुरी कवि श्री [illegible] [illegible], बी.ए. [illegible] एड हैं। पचीसों छन्दों में ~~[illegible]~~ २५ भोजपुरी-कविताएँ साफ २ अक्षरों में छपी हुई।
इसे पढ़ कर भोजपुरी कविता-रस का अवश्य रसास्वादन करें। मूल्य :- छः आने मात्र
प्राप्ति स्थान :- राष्ट्रीय पुस्तक भण्डार, चौक, इलाहाबाद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

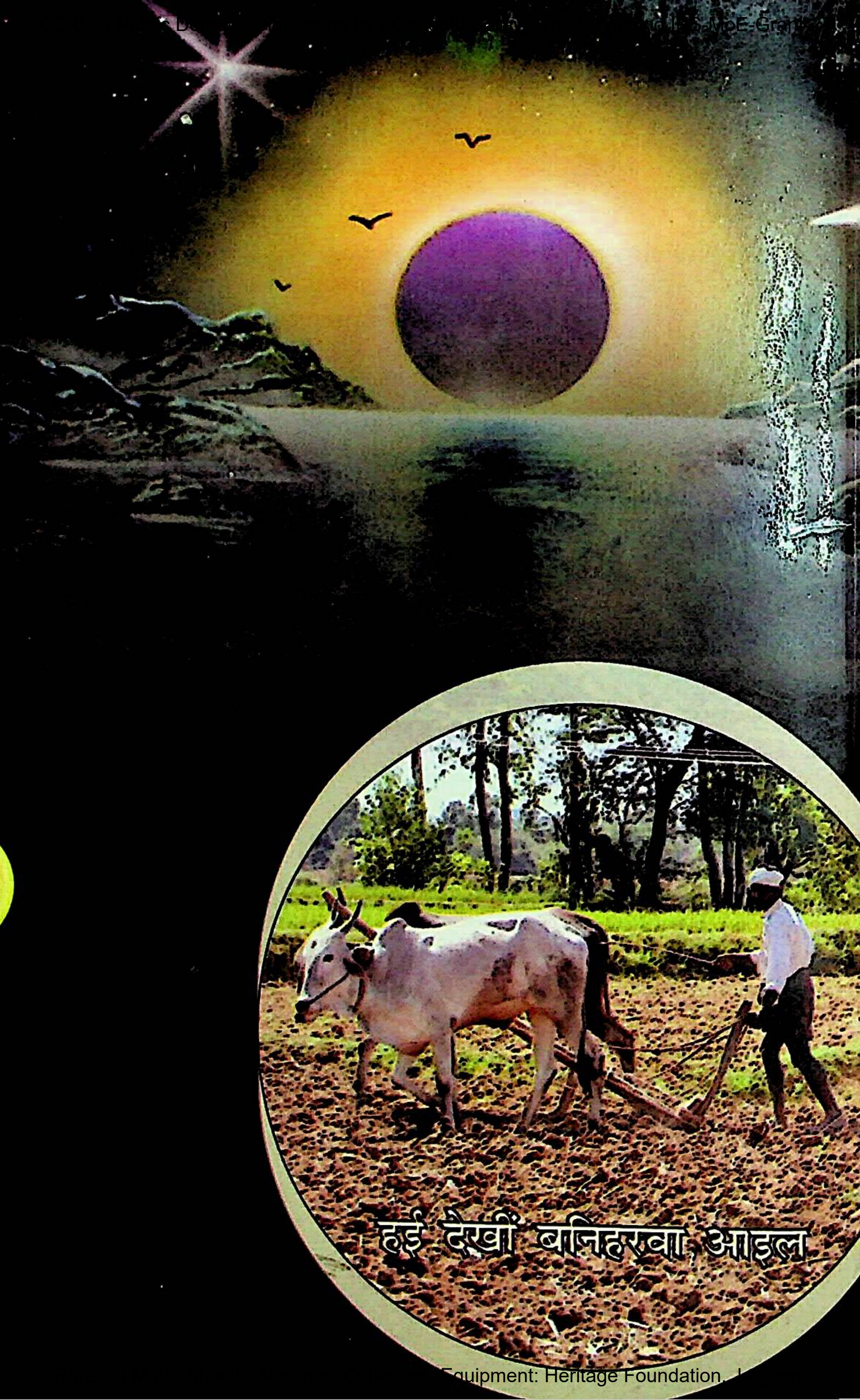

Equipment: Heritage Foundation.